श्रीः

श्रीकरपात्रस्वामि - विरचिता

श्रीविद्या-वरिवस्या



सम्पादकः

दत्तात्रेयानन्दनाथः (सीताराम-कविराजः)

श्री विद्या साधना पीठ
वाराणसी

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी



अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापां ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ।।



श्रीयन्त्रम्

॥ श्रीः ॥

श्रीकरपात्रस्वामि-विरचित

श्रीविद्या-वरिवस्या

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

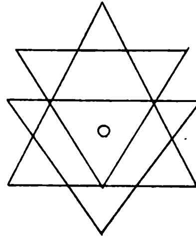
श्रीयन्त्रपूजा विधि (राष्ट्रभाषा में)

वाञ्छाकल्पलता, खड्गमाला, ललितासहस्रनामावलि, त्रिशती-नामावलि, नैमित्तिक पूजा आदि विविधि विधियों से सम्वर्धित संशोधित सुसज्जित नवीन संस्करण।

सम्पादक

श्रीदत्तात्रेय-आनन्दनाथ

(सीताराम कविराजः)



प्रकाशक

श्रीविद्या साधना पीठ

शिव सदन

नगवा (लंका) वाराणसी।

दूरभाष- २३६६६२२

प्रकाशक
श्रीविद्या साधनापीठ
शिव सदन
नगवा, (लंका) वाराणसी
फोन : २३६६६२२

संशोधित एवं सुसज्जित षष्ठ संस्करण- २००८
मूल्यं [redacted] रूप्यकाणि संशोधित मूल्य रु0 200/- मात्र

मुद्रक -
महावीर प्रेस
भेलुपुर, वाराणसी (यू.पी.)

SHREEVIDYA-VARIVASYA

WITH

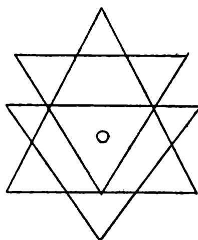
SHRI BALATRIPURASUNDARIPUJAVIDHANI

SHARIYANTRAPUJAVIDHI (RASTRA BHASA)

Editor

DATTATREYANANADNATH

(SHRISITARAM KAVIRAJ)



SHRI VIDYA SADHANA PITHA

Shiv Sadan, Nagawa, Varanasi

Ph- 2366622

Published by
SHRI VIDYA SADHANA PITHA
Shiv Sadan, Nagawa, Varanasi
Ph- 2366622

Six Edition, 2008
Price Rs. [redacted]00 संशोधित मूल्य रु0 200/- मात्र

Printed at
Mahavir Press
Bhelupur, Varanasi
Ph. : 2276214

श्रीस्मरणम्

संशोधित, संवर्धित एवं सुसज्जित श्रीविद्या वरिवस्या का नवीन संस्करण श्रीसाधको के समक्ष प्रस्तुत है। प्रति संस्करण में ही संशोधन संवर्धन किया गया है कम्पूटरीकृत इस संस्करण का स्वरूप अतिशय आनन्द प्रदाता सिद्ध होगा।

प्रकाशन व्यय एवं अतिमहर्घता होने पर भी पीठ ने मूल्य वृद्धि नहीं करने का निर्णय किया, क्योंकि पीठ का लक्ष्य धनार्जन नहीं साधक सहयोग एवं शास्त्रीय साधना का प्रचार प्रसार ही एक मात्र लक्ष्य हैं। अन्यान्य दुर्लभं तन्त्र ग्रन्थ भी प्राप्त हो एतदर्थ पीठ सर्वदा प्रयास रत है।

श्रीविद्यार्णवतन्त्रं वृहद्ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित शीघ्र ही प्रकाशनाधीन है। साधको के उपयोगी अन्य तन्त्र ग्रन्थ भी प्रकाशनाधीन है।

श्रीविद्या साधकों का सहयोग एवं उनकी जिज्ञासा के समाधान के लिये नि:शुल्क सेवा के लिये पीठ सदा सर्वदा प्रयास रत है।

यह अतिरहस्य गूढ़ एवं गोपनीय विद्या है, परन्तु अधिकारी साधकों के लिये श्रीविद्या साधना पीठ सदैव जागरूक प्रहरी का कार्य करती रहेगी। श्रीविद्या प्रचार प्रसार के लिये जो भी सम्भव होगा उसे नि:सङ्कोच सम्पादन करने का प्रयास किया जायगा। इतिशम्।

सर्वेभवन्तु सुखिन: की भावना के साथ

दत्तात्रेय—आनन्दनाथ

श्रीविद्या साधना पीठ वाराणसी।

विशेष मन्तव्य

मन्त्र जप से कुण्डलिनी शक्ति का जागरण ही तन्त्र साधना का परम लक्ष्य है। श्रीविद्या साधक को ब्राह्म मुहूर्त सूर्योदय पहले शय्या त्याग नितान्त आवश्यक है, अन्यथा साधना का लाभ असम्भव है।

सत्य भाषण एवं शौच (पवित्रता) परमावश्यक है।

'युक्तहार विहार' आहर, विहार, शयन, जागर यथा समय हाने से ही साधना से सिद्धि प्राप्ति संभव है।

मन्त्र साधकों कों जन्म–मरण आशौच सस्पृष्ट नहीं होते है मन्त्र न्यास से देवत्व भाव की उत्पत्ति होती है, अत: नित्यकर्म का त्याग कभी नहीं करना चाहिये।

नित्य एवं नैमित्तिक कर्म निरन्तर करना चाहिये। प्रमाद से नित्यकर्म त्याग से मूल मन्त्र का अष्टोत्तरशत जप एवं नैमित्तिक कर्म के त्याग से अष्टोत्तर सहस्त्र जप प्रायश्चित विधान है।

कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा संक्रान्ति इन पाच पर्वो पर उपवास रखकर रात्रि में नैमित्तिक अर्चन करने से कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। वर्ष की प्रत्येक पूर्णिमा को विशेष उपचारों से पूजा का विधान है वह "श्रीविद्या रत्नाकर" से ज्ञान कर लेवें। एवं त्रैपुरसिद्धान्त एवं साधक के कर्तन्य नियमों का भी अवलोकन करना आवश्यक है। अन्यान्य साधना विषयों का विवरण भी "श्रीविद्यारत्नाकर में सङ्कलित है।

संशय रहित दृढ़ निष्टा एवं सम्प्रदाय से सकलसिद्धियां संम्भव है।

परान्न, प्रतिग्रह, परस्त्री का सर्वथा परित्याग।

जिह्वदग्धा परान्नेन हस्तौ दग्धौ प्रतिग्रहात्।
मनोदग्धं परस्त्रिभि: कथं सिद्धिर्वरानने।।

श्रीविद्यासाधना पीठ वाराणसी

शिवत्वङ्गताः श्रीकरपात्रस्वामिचरणाः



शिवत्वङ्गता-समस्तशास्त्रपारावारपारदृश्वानः अनन्तश्रीविभूषिताः
श्रीहरिहरानन्दसरस्वतिस्वामिनः (दीक्षानाम-श्रीषोडशानन्दनाथः)

॥ श्रीः॥

प्रस्तावना

(पूर्व संस्करण)

श्रीशिवा-शिव-सामरस्यस्वरूपिणी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी श्रीललिताम्बिका के परम अनुग्रह से यह **श्रीविद्यावरिवस्या** का संशोधित एवं परिवर्धित नवीन प्रकाशन श्रीविद्या साधकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। साधकों के सौकर्य के लिए परिशिष्ट में कई अन्य अपेक्षित विषयों की भी योजना की गयी है। इससे इसका आकार वृहत् हो गया है।

वर्तमान में बालात्रिपुरसुन्दरी की उपासना के लिए कोई प्रामाणिक पूजापद्धति उपलब्ध नहीं है, अतः श्रीविद्यार्णव, ज्ञानार्णव, श्रीप्रपञ्चसार आदि तन्त्रग्रन्थों के अनुसार न्यासविधान यन्त्रार्चन आदि अपेक्षित विधि-विधानों का समावेश करके परिशिष्ट में बालात्रिपुरसुन्दरीवरिवस्या का समायोजन किया गया है। यह बाला उपासकों के लिए अपेक्षित था।

बालात्रिपुरसुन्दरी मानस पूजास्तोत्रम्— यह श्रीमज्जगद्गुरु आद्यशङ्कराचार्य विरचित सिद्ध स्तोत्र है, इसके पाठ मात्र से पूजा फल प्राप्त होता है, एवं वाञ्छित कामनाओं की पूर्ति होती है। इसके पद्य बहुत ललित है अतः पूजा में विभिन्न उपचारों के समर्पण के समय उच्चारण करने से भावाभिव्यक्ति होती है।

योगपीठ न्यास— यह उपासकों के लिए परमावश्यक है, यह बालात्रिपुरसुन्दरी आदि देवताओं के मन्त्रों मे पीठपूजा में प्रयुक्त होता है। इसका न्यास करने से देह भगवती के विराजमान होने का पीठ बन जाता है, अतः प्रारम्भ में साधकों के लिए इसका न्यास आवश्यक है।

महागणपति मन्त्रजपविधि— प्रत्यूह निवारण के लिए गणपति आराधना परमावश्यक है, इससे अनेक प्रकार के विघ्नों का निवारण होता है। और मन्त्रजप विधि के साथ एकविंशति नामार्चन भी दिया गया है, इससे आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, और साधना निर्विघ्न होती रहती है।

त्रैपुर सिद्धान्त— त्रिपुरोपासना के मौलिक दार्शनिक सिद्धान्तों का दीक्षा के समय उपदेश किया गया है, उन सिद्धान्तों पर ही यह उपासना आधारित है। इससे मूल तत्त्वों का ज्ञान होने से लक्ष्य प्राप्ति में मार्ग भ्रम नहीं होता। एतदर्थ उन सिद्धान्तों का सार दे दिया है। इनका मनन करना चाहिए।

साधक धर्म— इस उपासना में जिन विशेष नियमों का पालन करना आवश्यक है उनका भी दिग्दर्शन कराया गया है।

मन्त्रस्नान ध्यानस्नान— रुग्णावस्था या आपत्काल में जल स्नान करने में असमर्थ होने पर उक्त स्नान करने पर पवित्र हो जाता है, और देव कार्य कर सकता है।

आतुर सूतक— आदि अवस्था में पूजा की इति कर्तव्यता का भी निर्देश किया गया है, जिससे दीक्षित साधक अपने नित्यकर्म का निर्वाह कर सके।

प्राणायाम और **मातृका न्यास** एवं **इष्ट मन्त्र** के ऋषि देवता छन्द षडङ्ग न्यास के बिना पूजा जप निष्फल होते हैं, इसके लिए प्रामाणिक वचन उद्धृत किये गये हैं, एवं न्यासों के फल का भी वर्णन किया है, साधना में आवश्यक कर्तव्य पालन से अनुभूतियों के द्वारा कर्म में तत्परता होती है।

पूजाविधि का हिन्दी भाषा में सारांश लिखने का भी प्रयास किया गया है। पात्रासादन और आवरणार्चन पूजा के दो विशेष अङ्ग है। शास्त्रीय विधि से पात्रों के प्रमाण और उनके स्थापन करने की प्रक्रिया का विधान सुगम रूप में वर्णन किया है, इसको यथावत् समझने पर पात्रासादन करने में कठिनाई नहीं होगी।

इस प्रकार श्रीचक्राधिष्ठात्री श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी की उपासना के लिए जो अपेक्षित था, वह **यथा सम्भव सभी विधि विधानों का संयोजन करके इसे सर्वाङ्गपूर्ण पूजापद्धति बनाने का प्रयास किया है।**

यह तो विदित ही है कि उत्तर भारत में श्रीविद्या उपासना का प्रचार–प्रसार अल्पतम रहा है, इसी कारण इसके जिज्ञासुओं को बड़ी कठिनाई होती रही, श्रीस्वामीजी महाराज ने लोककल्याण के लिए इसकी उपयोगिता को दृष्टिगत करके यथा विधि उपासना में प्रवृत्त होकर '**श्रीविद्यारत्नाकर**' का प्रणयन किया । इस श्रीविद्या साधकों के जिज्ञासित साहित्य का पूरक ग्रन्थ माना गया, एवं अपने अतुलनीय गुणगणों से अतिशीघ्र ही लोकप्रिय बन गया। इसी कारण इसका प्रथम संस्करण स्वल्पावधि में ही समाप्त हो गया। मेरे सावकाश न होने से द्वितीय संस्करण में विलम्ब हुआ, इसकी प्राप्ति के लिए साधकों की अधीरता को देखते हुए श्रीस्वामी महाराज का आदेश हुआ कि पूर्ण श्रीविद्यारत्नाकर ग्रन्थ प्रकाशित करना सम्भव न हो तो केवल श्रीक्रम ही प्रकाशित किया जाय। उनकी आज्ञा शिरोधार्य करके इस श्रीविद्या-वरिवस्या का शीघ्रता में सम्पादन प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशित होने पर भी श्रीविद्यारत्नाकर की उपादेयता कम नहीं हुई किञ्च अधिक हुई, अतः इसका संशोधित परिवर्धित द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया। एवं श्रीविद्यावरिवस्या

की प्राप्ति के लिए अनेक पत्र आने लगे, परन्तु मैंने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया क्योंकि 'श्रीविद्यारत्नाकर' से साधकों की आवश्यकता की पूर्ति हो रही थी, दूसरी बात यह थी कि श्रीविद्यावरिवस्या प्रथम प्रकाशन में मुद्रण की अशुद्धियाँ अधिक हो गयी थी और शीघ्रता के कारण कुछ अपेक्षित अंश भी छूट गये थे। पूजा विधि का हिन्दी भाषा में सारांश लिखने का भी आग्रह था। इस प्रकार इसको अधिक उपयोगी बनाना समय सापेक्ष था। परन्तु श्रीक्रम मात्र होने से पूजा के लिए यह अधिक उपयोगी सिद्ध हुई, इससे इसकी माँग अधिक हुई, इसका लाभ उठाने के लिए एक व्यापारी इसे आफसेट में छपाकर विक्री करने लगा। **'अर्थी दोषान्न पश्यति'** अर्थ ही जिनके प्रधान होता है वह दोषों को नहीं देखता है। अस्तु, श्रीस्वामीजी महाराज के आदेशानुसार निःस्वार्थ भाव से श्रीविद्यासाधना के प्रचार–प्रसार के लिए उपयोगी साहित्य प्रकाशन एवं श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन करना ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है, अतः प्रथम प्रकाशन में रह गयी अशुद्धियों का संशोधन एवं अपेक्षित परिवर्धन करके पूर्वापेक्ष अधिक उपादेय बनाने का यथा सम्भव प्रयास किया गया है, अतः यह श्रीविद्या साधना जगत् में अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

इस प्रकार श्रीगुरुचरणों के अनुग्रह से ही यह सब कुछ सम्पन्न हुआ है उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान का ही यत् किञ्चित् उल्लेख किया गया है, स्वयं का लेश मात्र भी कर्तृत्व नहीं है।

अतः **'यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्'** के भाव से उनके भावलभ्य चरणों में यह श्रद्धासुमनाञ्जलि समर्पित है।

डॉ० श्रीविद्यानिवासजी मिश्र 'कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय' के भावभय भूमिका लिखने से इस प्रकाशन की विशेष उपयोगिता सिद्ध हुई, अत: उनके आध्यात्मिक उत्कर्ष की श्रीपराम्बा से प्रार्थना करते है। डॉ० रुद्रदेवजी त्रिपाठी वरिष्ट श्रीविद्योपासक हैं, एवं ग्रन्थों के सम्पादन और प्रकाशन की कला में कुशल, इन्होंने पूर्व प्रकाशित श्रीविद्यावरिवस्या के आद्योपान्त सूक्ष्म अवलोकन द्वारा आवश्यक संशोधन करके ग्रन्थ को अनाविल किया, एंव पूजा विधि का हिन्दी भाषा में सारांश लिखाने का भी श्रेय इन्हीं को है, अत: इनको शतश: साधुवाद से सभाजित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस प्रसंग में अपेक्षित सहयोग देने के लिये सरस्वतीभवन के पुस्तकाध्यक्ष डॉ० श्रीविजयनारायणजी मिश्र के लिये मंगल कामना करते हैं। **सर्वेभवन्तु सुखिन:** के भाव से पुन: यह सुसज्जित संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्रीगुरुचरणसरोजरेणु
दत्तात्रेय—आनन्दनाथ
(सीताराम कविराज)

सम्पादकीयम्

(प्रथम-संस्करणस्य)

अयि श्रीपराम्बापादारविन्दपरिचर्यालालसमानसा:। सहृदयसाधकवरेण्या:। ''श्रीविद्यावरिवस्या'' नमाकमिदं पुस्तकं श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणां श्रीमतां सेवासु समुपाहृत्य पुनरप्यनिर्वचनीये कस्मिश्चिदानन्दाम्बुधौ निमग्नं मे मन:। इत पञ्चवर्षपूर्व श्रीगुरुचरणै: प्रणीतं ''श्रीविद्यारत्नाकर''–नामकं ग्रन्थरत्नं प्रकाशितमासीत्, तद् ग्रन्थरत्नं श्रीविद्योपासकधौरेयैर्महता समादरेण संगृहीतं, यतो हि स्वलीयसा कालेनैव तत् सावशेशतामभजत्। इत आद्विवर्ष तत्प्राप्त्यर्थं बहूनि पत्राणि सोत्कण्ठं लिखितान्यनवरतं प्राप्यन्ते, किन्तु झटित्येव तस्य विस्तृतग्रन्थस्य प्रकाशनासम्भवात् श्रीगुरुचरणै: समादिष्टोऽहं तच्चरणानुग्रहेणैव श्रीविद्योपासकानां पुरत: 'श्रीविद्यावरिवस्या''– नामक श्रीक्रममात्रं प्रापितवानस्मि।

पुस्तकेऽस्मिन् श्रीक्रमोपासकानां कृते प्रात:कालाद् रात्रिपर्यन्तं क्रियमाणं कर्म एवमन्यानि समपेक्षितानि नैमित्तिकादीनि यानि कानिचित् कर्माणि तानि सङ्गृह्य प्रकाशितानि, तेन श्रीक्रमस्य साङ्गता समजनि। मन्ये तेन श्रीक्रमोपासकानां साङ्गोपाङ्गपूजाजपहोमादिक्रियाकलापेषु नान्यत् समपेक्षितं स्यात्। मुख्यानपरिहाय कृताकृतानपि यथावकाशं संयोज्य श्रीक्रमोपासकस्य सौकर्यार्थं सम्पर्णं यथा स्यात्तथा सङ्कलय्य सविस्तरं प्रस्फुटं प्रणीतवद्भि: श्रीगुरुचरणै:सुमहदुपकृतं श्रीविद्योपासकसमाजस्येति सुदृढं प्रतिभाति।

''श्रीविद्यारत्नाकरस्य'' सम्पादकीये प्राक्थने श्रीविद्यासम्बद्धानां मन्त्रयन्त्रादीनां सम्बन्धे यथाज्ञानं किमपि प्रतिपादितम्। इदानीम् श्रीचक्र– पूजाविषये कामपि सापेक्षतामनुभवामि।

नृदेहप्राप्ते: परमो लाभ आत्मज्ञानम्। निखिलजीवानां परमकल्याणाय वात्सल्यभावापन्नानां श्रुतीनां परमतात्पर्यं 'जीवब्रह्मणोरभेद:'। विविधवादजालजटिलेषु न्यायमीमांसादिदर्शनशास्त्रेषु निपुणतमै: विद्वद्भिरपि मतान्तरनिरसनपूर्वकं तदेव साधितं श्रुतीनां परमात्पर्यम्। तत् सिद्ध्यर्थं वेदान्तसिद्धान्तेनाष्टाङ्गयोगादिमार्गेण च यतमानानां सिद्धिङ्गतानां वा मध्ये कोऽप्यस्ति यो हि निर्व्याजं ब्रूयादधिगतं मया श्रुतीनां परमतात्पर्यम्? अस्ति चेत् कोऽपि वेदान्तादिपरमदुरूहमार्गेण जनमानतरीयसंस्कारवशेन वा सिद्धिङ्गत:, स कथमन्यान् साधारणजनान् सारल्येनानुभावयितुं समर्थ:। परञ्च मुक्तकण्ठमिदमनुघोषयतां नास्माकं हृदि तनीयानपि सङ्कोचो यत् सुमहदुपकृतं श्रीचक्रपूजापद्धतिमाविष्कृतवता परमकारुणिकेन भवगता परशुरामेण मन्दशेमुषीनां जनानाम्। यतो हि अमुना साधनपथेनाचिरेणैव कालेन श्रुतीनां परमतात्पर्य स्वयमनुभवितुमन्यान् सारल्येनानुभावयितुञ्च शक्यते, नैवात्र कथमपि विचिकित्साऽवसर:।

सर्वाषामेव साधनसरणीनां मूलं 'मनोनिग्रह:'। क्वचिदस्य प्राधान्येन व्यपदेश: क्वचिक्च गौणरूपेण। वस्तुतस्तु मनोनिग्रहमन्तरा संसाध्यमाने वरीयसि साधनोपायेऽपि सिद्धि: सुदूरङ्गतैव प्रतीयते।

''मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो:''

अत: श्रीसदाशिवप्रोक्तागमसिद्धान्तेन सम्पद्यमाना साधनसरणिस्तु साकल्येन मनोनिग्रहात्मिकेति निश्चप्रचं सिद्ध्यति बहुभि: प्रमाणकदम्बकै:।

य आशु हृदयग्रन्थिं निर्जिहीर्षु: परात्मन:।
विधिनोपचरेद् देवं तन्त्रोक्तेन च केशवम्।।

(श्री०भा० १२-३-४७)

ततोऽपि पराम्बापरमनिर्बन्धेन गोप्यातिगोप्यतराया: श्रीचक्रोपासनपद्धतेस्तु सकलोऽपि कर्मकलाप: मनोनिग्रहहेतुभूत इति नाविदितं तत्र श्रीविद्योपासन-तत्पराणां साधकपुङ्गवानाम्।

उपासनविधौ श्रीविद्यायास्त्रयो भेदा: सन्ति, स्थूलोपास्ति:, सूक्ष्मोपास्ति, परोपास्तिरिति। तत्र स्थूलोपास्ति: श्रीचक्रार्चनम्, तस्मिन् विधिविहितेर्वि-विधविधानैर्विबद्धं मनो निमेषमात्रमपि नावकाशं लभते, मनागपि नान्यत्र कुत्रापि गन्तुं शक्नोति दृढतरैर्बन्धनै: बद्धमत्तमातङ्गवत्। यथा हि पूजारम्भकाले सामान्यार्घविशेषार्घादिपात्राणां स्थापनावसरे प्रथमं मण्डलनिर्माणं तत आधारस्थापनं तस्मिन्, वह्निमण्डलभावनं दशवह्निकलानाञ्च पूजनं, पुन: पात्रनिधानं पात्रे च सूर्यमण्डलभावनं, द्वादशसूर्यकलानां पूजनं, तदनन्तरं जलादिपूरणं, जले च सोममण्डलभावनं, षोडशसोमकलानाञ्च तत्र पूजनं, ततो मूलमन्त्रेण षडङ्गपूजनमेवं सामान्यार्घपात्रस्थापनविधि:, ततोऽप्यधिकं विशेषार्घपात्रस्थापनविधौ क्रियाकलाप:। तदनन्तरमन्तर्यागस्ततो बहिर्यागश्च:, **"अन्तर्यागं विधायादौ बहिर्यागं समाचरेत्"** इति विधानेन स्वात्मस्थां स्वेष्टदेवतां प्रवहन्नासापुटेन स्वपूज्ये श्रीचक्रे संयोज्यावाहनादिविविध-मुद्रादर्शनपूर्वकं चतु:षष्ट्युपचारार्चनम्, तत्तदुपचारभावनया वा पुष्पाक्षत-निक्षेपणं, तत: श्रीचक्रस्थानां नवावरणेषु शतशोऽप्यधिकशक्तीनां मध्ये प्रत्येकैकस्या: प्रत्येकैकेन मन्त्रेण पुष्पाक्षतनिक्षेपणेन पूजनं विशोषार्घ्यविन्दुना तपर्णम्, प्रत्येकैकावरणपूजनान्ते चक्रेश्वरीदेवतामुद्रा-सिद्धिपूजनं पुष्पाञ्जलिदानं, सामान्यार्घ्योदकेन पूजासमर्पणम्। एवंविधे परस्पराभिक्लृप्त-कर्मकलापे कथं मनो मनागपि निस्सरेत्? यदि निस्सरेतदा विधीयमानकर्मण: प्रसङ्गच्युति:, एवं तत्तद्देवताकस्य समुच्चारितमन्त्रस्य च व्यतिक्रम: सम्भवेत्।

"यस्मान्नऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे नम:"–

इति श्रुतेनुसारं मनोयोगं विना किमपि कर्म कर्त्तु न शक्यते। अतः एवं विविधविधानैर्निगृहीतं मनः शनैः शनैः शैथिल्यमेकाग्रताञ्च भजते। तदेव मननीशक्तिरूपं स्वात्मसाक्षात्कारे मुख्यो हेतुः।

दानं स्वधर्मो नियमो यमश्च श्रुतञ्च कर्माणि च सद्व्रतानि।
सर्वे मनोनिग्रहलक्षणान्ताः परो हि योगो मनसः समाधिः।।

श्री०भा०११/२३–४६

पूजनादौ नानाविधिन्यासविधानमपरिहार्यत्वेनानुष्ठेयमस्ति।

"**देवो भूत्वा यजेद्देवान् नादेवो देवमर्चयेत्**" इति सिद्धान्ते नानाविधमन्त्रन्यासेन मन्त्रात्मको देवतात्मकश्च विग्रहः सम्पद्यते। तत्र महाषोढान्यासफलश्रुतौ स्पष्टं समुदीरितम्। "**एवं न्यासे कृते देवि साक्षात् परशिवो भवेत्, मन्त्री चाऽत्र न सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः।**" एवं समासादितदेवतात्मकविग्रहो सम्पादितपात्रासादनो विविधमन्त्रेणाभिमन्त्रित-विशेषार्घ्यामृतहविश्चिदग्नौ कुण्डलिनीमुखे जुहोति, एवं परमामृतेन तृप्ता सा पराशक्तिः सुषुम्नामार्गेण षट्चक्राणि भित्त्वा सहस्रारे शिवेन सह युज्येत, एष एव परः समाधियोगः। पुनः ब्रह्मरन्ध्रात् हृदयं नीत्वा पञ्चोपचाराधिष्ठातृभिः साक्षाद्देवताभिः पञ्चोपचारेण पूजिता परदेवता नासारन्ध्रेण बहिः श्रीचक्रे संयोज्य पूज्येत, तथा पूजनान्ते तत्वशोधनविधौ त्रयाणा-माणवमायिककार्मणाविद्यामलानां शोधनेन सम्पादिता ब्राह्मीतनुः, ब्रह्मसम्मिलनाय योग्या भवति।

"**महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः**"

हृदयप्रदेशान्नासारन्ध्रेणानीता श्रीचक्रे संयोज्य पूजिता स्वात्मदेवता पुनर्निर्वाणमुद्रया हृदि संस्थाप्य स्वात्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेदेष विसर्जने

विधि:। एवमादावन्ते च पूजाव्यपदेशेन निरन्तरं निदिध्यासितोऽयं क्रियाकलाप: किंस्विदस्ति स्वात्मलाभादन्यो संभार:? किम्वा न प्रभवति श्रुतीनां परमतात्पर्यं जीवब्रह्मणोरभेदभावने? अपितु नास्त्यन्य: कोऽपि सरल: सिद्धश्चोपाय: पन्थानमेनं परिहाय।

यथा चिक्रीडिषोर्बालकस्य क्रीडनकैरेव वर्णमालाक्षराणां बोध: सम्पाद्यते साम्प्रतिकै: शिक्षकैस्तद्वदेव भगवता परशुरामेण परमकारुणिकेन चञ्चलचेतसां जीवनां परमकल्याणाय पूजाव्यपदेशेनात्मज्ञानोपाय: प्रकटितोऽनुतोदितश्च भगवत्पादै: स्वयमाचरणेन प्रचारणैश्च।

अनेनैव साधनपथेन बहव: वभूवु: सिद्धिङ्गता:, पूर्णमनोरथाश्च, सन्ति साम्प्रतमपि स्वसम्प्रदायपुरस्सरं श्रीचक्रसमाराधनबद्धादरा: स्वकृतिभि: जनानां मनांसि समाह्लादयन्त: समेषां शुभानि सम्पादयन्तश्च जीवन्मुक्ता विचरन्त्यधुनापि महीतलेऽनेकश: श्रीसाधकपुङ्गवा:। अतो मुहुर्मुहुर्व्याहरतां नास्माकं हृदि सन्देहलेशोऽपि यदेनां श्रीचक्रसमनाराधनसरणिं विहाय नास्त्यन्य: कोऽपि सरल: सिद्धश्चोपायश्चतुर्विधपुरुषार्थसाधनाय।

अत एव बाल्यकालादेव कृच्छतपोभिरधिगतपरमार्थतत्त्वैरपि श्रीमदनन्त श्रीविभूषितै: प्रातस्तमरणीयचरणै: ''श्रीहरिहरानन्दसरस्वती'' तिसन्यास–दीक्षानाम्ना, ''षोडशानन्दनाथे'' ति तन्त्रदीक्षा–नाम्ना ''करपात्रस्वामी''ति लोकप्रसिद्धनाम्ना प्रसिद्धै: श्रीगुरुचरणैर्लोककल्याणाय यथाविधि: श्रीविद्यादीक्षामवाप्य श्रीचक्रसमाराधनेन विदितवेदिव्यै: श्रीमहाराजै: प्रणीतं ''श्रीविद्यावरिवस्या'' नामकं पुस्तकमिदं साङ्गं श्रीचक्रसाधकसमाजस्य परमोपकाराय भविष्यति मोदते मे मन:।

परञ्चदेमत्राशयमवधेयम्–यदस्यां साधनायां **''श्रीगुरु: सर्वकारणभूता–**

शक्तिः'' तेनैव सर्वं सम्पद्यतेऽतः सर्वात्मना श्रीगुरुं भजेत्।

''यतो गुरुः शिवः साक्षात् तं स्तुवन् प्रणमन् भजेत्
यथा देवे तथा मन्त्रे यथा मन्त्रे तथा गुरौ।
यथा गुरौ तथा स्वात्मन्येवं भक्तिक्रमः प्रिये॥
गुरुं न मर्त्यं बुध्येत यदि बुध्येत तस्य तु।
न कदाचित् भवेत् सिद्धिर्मन्त्रैर्वा देवतार्चनैः॥''

एवं तन्त्रशास्त्रेषु गुरुमहत्वप्रतिपादकानि बहूनि वाक्यानि समुपलभ्यन्ते। गुरुमुखैकमात्रसमधिगम्येयं श्रीविद्या। जन्मजन्मान्तरीयपुण्यपुञ्जोदयेन सद्गुरोः सकाशात् कदाचित् केनचित् कथञ्चित् समधिगता सम्यक्तया यद्यस्याः साधनसरणिस्तदा सुसम्पन्नं तस्य सर्वं, कृतकृत्यं तस्य जीवितं, नान्यत् किञ्चिदपेक्षितं स्यादस्याः प्राप्त्यनन्तरं, तस्य चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्ध्यन्ति, स शिवयोगीति गीयते।

पुस्तकस्य सम्पादने श्रीगुरुचरणानामनुग्रह एव परमो हेतुः। तदर्थं त्विदमेव वक्तुं समर्थोऽहं श्रीमद्भागवतीयेन पद्येन–

तुष्यन्त्वदभ्रकरुणाः स्वकृतेन नित्यं
को नाम तत्प्रतिकरोति विनोदपात्रम्।

प्राक् संशोधनेन साहाय्यमाचरितवतां डा० श्रीरुद्रदेव-त्रिपाठिमहाभागानां नामाविस्मरणीयमेव। एवं मुद्रापणे च सहयोगं वितन्वन्तो ब्रह्मदत्तत्रिवेदि-महोदयाः साधुवादार्हाः। तथा मुद्रापणायाऽर्थव्यवस्थां विदधानः श्रीरामप्रसाद-सराफमहाभागोऽपि नूनं श्रीपराम्बाप्रीतिभाग्, एवं श्रीगुरुचरणानां सकल-कर्मकलापे प्रयतमानः श्रीबाबूलालगनेड़ीवालामहाशयोऽपि तेषां कृपाकटाक्षेण स्नापितः।

अत्र शीशकाक्षरयोजनवैकल्येनास्मदीयमनुष्यस्वभावसुलभदोषेण वा मुद्रापणे यद्यधिरुढाः काश्चनाशुद्धयस्ताः संशोध्य बोधयन्तु सहृदयसाधकवरेण्याः येन पुनः प्रकाशनावसरे संशोधयामः।

अशरणशरण्यायाः करुणावरुणालयायाः वाञ्छासमधिकफलं दातुं नित्यनिर्भरायाः श्रीपरम्बायाश्चिन्तनञ्चार्चनं सकलैहिकामुष्मिकं फलं प्रददातीति साधकसमाजं मुहुर्मुहुः सम्बोधयति—

श्रीगुरुचरणरोजरेणुः

श्रीसीतारामकविराजः

(दीक्षानाम-दत्तात्रेय- आनन्दनाथः)

७२ बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता

॥ श्रीः॥

भूमिका

प्रो० विद्या निवास मिश्र

श्रीविद्या-वरिवस्या ब्रह्मलीन स्वामी श्रीहरिहरानन्द सरस्वती दीक्षानाम (षोडशानन्दनाथ) श्रीकरपात्रीजी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थ— श्रीविद्यारत्नाकर का संक्षिप्त रूप है, इसे आवश्यक टिप्पणियों के समेत पुनः कुछ संशोधित परिवर्धित करके समादरणीय पं० श्रीसीताराम कविराज (दत्तात्रेयानन्दनाथ ने सम्पादित कर प्रकाशित किया। पुनः इस में पूजा विधि समझाते हुए परिशिष्ट में शास्त्रान्तर से श्रीबालावरिवस्या भी जोड़ कर सामान्य उपासकों को दृष्टि में रख और अधिक उपयोगी बनाने पर बल दिया हैं। प्रस्तुत संस्करण श्रीविद्योपासना के प्रचार प्रसार, तथा इसके द्वारा जगत्कल्याण में बहुत उपकार होगा।)

श्रीविद्या क्रम अत्यन्त गूढ़ और अत्यन्त सरल दोनों है। गूढ़ इस अर्थ में है कि विना अच्छे गुरु की दीक्षा और उसका उपदेश प्राप्त किये यह बोधगम्य नहीं, केवल शुष्क कर्मकाण्ड मात्र रह जाता है और सहज इस अर्थ में इस उपासना का अभ्यास होने पर धीरे—धीरे साधक सहज निर्मत्सर, निर्वैर और आनन्द को प्राप्त कर लेता है। इसी जीवन में सहज सुख अनुभव करने लगता है। जब उसका मन्त्र चैतन्य हो जाता है तब श्वास प्रश्वास के तार स्पन्द के परिस्फुरण से मिल जाते हैं।

लोगों के मन में, यहाँ तक कि बड़े—बड़े तन्त्र शास्त्र के विद्वानों के मन में बाह्य पूजा की सार्थकता के प्रति सन्देह है, पर सृष्टि तो जितनी सूक्ष्म है, उतनी स्थूल है। षड्विंशति तत्त्व में पञ्च महाभूत पञ्चज्ञानेन्द्रिय,

पञ्च कर्मेन्द्रिय, पञ्च तन्मात्रा भी है, प्रकृति अहंकार बुद्धि मन भी है। माया, कला, अविद्या, राग, काल, नियति भी है और शिव शक्ति सदाशिव ईश्वर शुद्ध विद्या भी है।

अत: समष्टि को ध्यान में रखकर, अधिकारी भेद को ध्यान में रखकर बाह्य पूजा से प्रारम्भ सर्वथा वांछनीय है, उत्तरोत्तर सूक्ष्मतर भूमिका में प्रवेश होता है तो साधना सायास नहीं होती। जगज्जननी की उपासना में क्लेश हो यह श्रीमाता को कैसे वांछनीय होगा। अपने दैनिक जीवन क्रम को कैसे प्रत्यूषकाल से लेकर प्रत्यूषकाल पर्यन्त व्यक्ति बनाये कि सब कर्म, सब व्यापार, सब ज्ञान, सब इच्छाएँ सर्वमयी देवता को अर्पित हो जाँय, इसी के लिए श्रीविद्या की उपासना का मुख्यत: विधान है। सीमित कामनाओं की पूर्ति भी होगी, पर उससे बन्धन ही बढ़ेगा। भाव तो पूजा का यही सर्वश्रेष्ठ है कि यह पृथ्वी गन्ध रूप में, जल पाद्य रूप में, आकाश पुष्प रूप में वायु धूप में, अग्नि दीप में और जीवन मात्र में सन्निविष्टचित अमृत नैवेद्य रूप में और सकल उपचार सम्भार, सकल दृश्यादृश्य जगत् मात्र की वासना ताम्बूल रूप में सर्वमयी सर्वभूतेश्वरी, सर्वशक्तिमयी, सर्वानन्दमयी, सर्वचिन्मयी को अर्पित हो, इस अर्पण के अलावा भी कोई सुख है? क्या सभी सुख इस सुख के आगे तुच्छ नहीं हैं? क्योंकि समस्त ऐन्द्रिय सुखों का राग, समस्त ऐन्द्रिय सुखों की वासना, समस्त अन्त:करण की इच्छा और ज्ञानवृत्तियाँ, समस्त कर्मेन्द्रियों के व्यापार पूजा के सार्थक प्रयोग के द्वारा उस परा देवता को भेंट कर दिये जाय। सब चिन्मय आनन्दमय और सब असत् होते हुए भी सत् चिन्मय हो जॉय।

इसी अभिलाषाओं के अभिलाष की पूर्ति ही श्रीविद्योपासना का परम अर्थ है। प्रात:काल कुण्डलिनी को जगाने और सात चक्रों में अधिष्ठित देवताओं को दिन भर ली जाने वाली इक्कीस हजार छ: सौ सांसे अर्पित की जाती है, ताकि श्वास प्रश्वास देवमय हो जाय। इसके बाद श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी का अन्तर्याग किया जाता है। समस्त चक्रों में अधिष्ठित शक्तियों के समेत श्रीदेवी के विविध रूपों का स्मरण किया जाता है। इसके बाद रश्मिमाला मन्त्र स्मरण और प्रात: स्तव पाठ प्रत्येक कर्म का अर्पण और भूमि वन्दन होता है।

अनन्तर स्नानादि करके श्रीगुरुत्रयी का अर्चन करके और गणपति का ध्यान जप करके पूजा प्रारम्भ होती है। श्रीगुरुत्रयी और गणपति के ध्यान के दो प्रयोजन हैं, श्रीगुरु परम्परा ही सेतु है, व्यष्टि एवं समष्टि के बीज पूर्ण साधना का स्मरण और उनके प्रति प्रणिपात के विना साधना अहंकार से ग्रस्त हो जाती है और विफल हो जाती है। इसी प्रकार गणपति का पूजन समष्टि चेतना के पुंज का पूजन है। सामान्य में अधिष्ठत विशेष का पूजन है। इसके बाद देह शुद्धि और भूत शुद्धि के द्वारा अपने स्थूल शरीर को सूक्ष्म में और सूक्ष्म शरीर को शिव शक्तिमय शाम्भव शरीर में रूपान्तरित करने की भावना की जाती है। इस शरीर में दिव्य प्राण का आधान हो जाने पर दूसरे न्यास होते हैं। न्यास वाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों होते हैं और इनका प्रयोजन वर्णमातृकाओं की शक्तियों का अपने में आधान है, एक प्रकार से सृष्टि के बीज का अपने में आधान है। समस्त चक्रों में अधिष्ठित समस्त शक्तियों का जागरण है, और निखिल विश्व की स्फुरता का अपने भीतर सम्भरण है। न्यास विधि के बाद ही पञ्चोपचार, षोडशोपचार और चतु:षष्ट्युपचार

पूजन का विधान है। पूजन के बाद जिस मन्त्र में दीक्षित हो, उसका जप करना है। पुस्तक में पूजन के विस्तृत क्रम भी दिये गये हैं, संक्षिप्त भी। जैसी सुविधा हो और जैसा समय हो, वैसी पूजा करे। पूजा का शास्त्र विकल्प देता है, और विकल्प का निर्णय व्यक्ति के ऊपर इसलिए नहीं छोड़ता कि शास्त्र शिथिलता की अनुमति देता है, शास्त्र निरन्तर विधि की शुद्धता अर्थात् व्यक्ति की भीतरी तैयारी से की गई साधना पद्धति पर बल देता है। यह विना अभ्यास की निरन्तरता से नहीं आती।

श्रीविद्या की साधना इसलिए मैंने पहले कहा सुगम और अगम दोनों हैं। अभ्यास से वह सुगम हो जाती है, विना उसके कुछ सूना–सूना लगता है और प्रवेश करते समय बड़ी कठिन, बड़ी अगम और बड़ी बोझिल जान पड़ती है।

इस पुस्तक की माँग उत्तरोत्तर बढ़ रही है। यही प्रमाण है कि इस उपासना में लोग अधिकाधिक प्रवृत्त हो रहे हैं। दक्षिण भारत में वहाँ के शङ्कराचार्यों की निरन्तर प्रेरणा से श्रीविद्या का अधिक प्रचार है।

उत्तर भारत में ज्योतिष्ठपीठ के बहुत दिनों तक प्रसुप्त रहने के कारण इस विद्या का श्रीकाली क्रम तो था किन्तु श्रीविद्याक्रम लुप्तप्राय रहा। ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी करपात्री जी के अनुग्रह से उत्तर भारत में काशी में भास्करराय के बाद पुनः प्रवर्त्तन हुआ। आदरणीय कविराज जी उनके प्रिय शिष्य तो हैं ही उनके उत्तम उत्तराधिकारी भी हैं। महाराजजी ने इन्हें इस श्रीविद्याक्रम के प्रचार–प्रचार के लिए प्रेरित किया, उसी का फल यह पुस्तक है।

मैं तो कोई अधिकारी हूँ नहीं, मेरा चंचु प्रवेश भी नहीं है। पर श्रीमाँ

चाहती होंगी, तभी कुछ शब्द लिखने के लिए आदरणीय कविराजजी ने कहा। वस्तुत: इस क्रम को साधना द्वारा ही जाना जा सकता है। शब्द तो केवल उस साधना सोपान को ईंटे हैं। सोपान बनाना तो साधक का ही, और योग्य गुरु से दीक्षित साधक का काम है। यह उल्लेखनीय हैं कि इस साधना में आवश्यक है कि स्थूल पञ्चमकारो का उपयोग न करें, स्त्री जाति को आदर से देखें, किसी स्त्री का निरादर न करें, जीवन में सर्वभूत मैत्री स्थापित करते रहें। तभी साधना का साकल्य मिलेगा।

इतिशम्।

माघ शु० १५/२०४८
वाराणसी।

डॉ० विद्यानिवास मिश्र
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी।

सम्पादकः



दत्तात्रेयानन्दनाथ
(सीताराम कविराज)

'पूजा विधि' का हिन्दी सारांश

प्रात: स्मरण-विधि–

सूर्योदय से पूर्व उषा काल या ब्राह्म-मुहूत में उठकर निद्रास्थान से बाहर आकर पैर तथा मुख प्रक्षालन कर आचमन करें एवं यथासंभव रात्रि-वस्त्रों को उतार कर शुद्ध वस्त्र धारण करें। तदनन्तर पवित्र स्थान में आसन पर बैठ कर मस्तक में सहस्रार पर श्वेतवर्ण स्वगुरु का ध्यान करके पद्धति में लिखित गुरु-स्तोत्र तथ गुरु-पादुका-पञ्चक का यथा शक्ति पाठ करें । तत्पश्चात् गुरुचरणों से निकली हुई अमृत-धारा से अपने समस्त शरीर के सेचन की भावना करके अपने इष्ट मन्त्र का १० बार स्मरण करें। (यह लघु-प्रात:स्मरण है।) किन्तु 'गुरु-पादुका-मन्त्र' प्राप्त अधिकारी पादुका-मन्त्र जप करते हुए श्रीगुरु, परमगुरु एवं परमेष्ठी गुरु को पादुका पूजन पर्वक प्रणाम करें।

यहीं विशेष अधिकारी स्वगुरु से कुण्डलिनी-जागरण की क्रिया जान कर पद्धति में बताये अनुसार कुण्डलिनीमन्त्र का विनियोग, षडङ्ग-न्यास, ध्यान और स्तुति-पाठ कर सहस्रार में पहुँची हुई कुण्डलिनी की रश्मियों से समस्त पाप के दहन की भावना करे और कुण्डलिनी-मन्त्र का यथावकाश स्मरण करें।

अजपा-जप समर्पण-विधि–

दिन और रात्रि के २४ घण्टों में २१६०० श्वास-प्रश्वास द्वारा 'हंस:सोहम्' मन्त्र का जप होता है। यह जप सात चक्रों में स्थित देवताओं के लिये विभक्त करके समर्पित कया जाता है। इस विधि को पद्धति के अनुसार गुरुमुख से जानकर सम्पन्न करें। इसके पश्चात् अधिकारानुसार अन्तर्याग अथवा इष्ट देवता की मानस पूजा करें। पुन: १० बार इष्ट मन्त्र का जप

'मूलाधार में स्थित जीवात्मा सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्रस्त शिव में एकीभूत हो गया।' फिर 'यं' बीज से नासिका के वामभाग से पूरक करें और दक्षिण भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि– 'सङ्कोचशरीर का शोषण हो गया।'

पुनः नासिका के दक्षिणभाग से 'रं' बीज द्वारा पूरक करें और वाम भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि 'सङ्कोचशरीर का दहन हो गया।'

तत्पश्चात् नासिक के वाम भाग से 'वं' बीज द्वारा पूरक करें और दक्षिणभाग से रेचक करते हुए भावना करें कि– 'जले हुए पापशरीर की भस्म सहस्त्रार से निसृत अमृत से आप्लावित हो गई।

तदनन्तर नासिका के दक्षिणभाग से 'लं' बीज द्वारा पूरक करके वामभाग से रेचक करते हुए भावना करें कि– 'इससे दिव्य शरीर उत्पन्न हो गया।'

फिर वाम भाग से 'ह्रीं' बीज द्वारा पूरक करके दक्षिण भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि– 'दिव्य शरीर शिव शक्तिमय हो गया।'

तत्पश्चात् नासिका के दक्षिण भाग से 'ह्रीं हंसः सोहम्' मन्त्र द्वारा पूरक करके वाम भाग से रेचकं करते हुए भावना करें कि– 'शिव के साथ सहस्त्रार में जो जीवात्मा स्थापित किया था वह सुषुम्ना-मार्ग से पुनः मूलाधार में स्थित हो गया।

यहाँ यह विशेष स्मरणीय है कि भूतशुद्धि की इस क्रिया में पूरक और रेचक को ही प्राणायाम करते हैं। इसमें कुम्भक नहीं होता। इसको नाडी शूद्धि भी कहते हैं।

पद्धति में लिखित भूतशुद्धि का सार यहाँ लिख दिया गया है

जिससे कर्म करते समय पद्धति का अनुसरण हो। इसका विशेष प्रकार जानने की इच्छा हो, तो 'श्रीविद्यारत्नाकर' देखें।

तदनन्तर प्रोक्त पद्धति के अनुसार 'आत्म प्राणप्रतिष्ठा' करके गर्भाधानादि 'पञ्चदश संस्कार' के लिये मूलमन्त्र का १५ बार जप करें। तत्पश्चात् १६, १० अथवा ३ बार मूलमन्त्र से प्राणायाम करें।

प्राणायाम की विधि यह है कि– नासिका के वाम भाग से एक बार मन्त्र बोलकर पूरक करें, फिर अंगुष्ठ से दक्षिण नासिका बन्द करके अनामिका कनिष्ठिका दोनों से नासिका बन्द करके कुम्भक में चार बार मन्त्र बोले तथा बाद में दो बार मन्त्र बोलते हुए रेचक करें। पुन: नासिका के दक्षिण भाग से एक बार मन्त्र बोलते हुए पूरक, चार बार मन्त्र बोल कर कुम्भक और दो बार मन्त्र बोलकर नासिका के वाम भाग से रेचक करें।' यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्रकार कम से कम तीन प्राणायाम करने चाहिये। बाद में धीरे-धीरे मन्त्रों की संख्या और प्राणायामों की संख्या बढ़ानी चाहिये।

प्राणायाम के द्वारा जठराग्नि दीप्त होती है। शरीर के सब विकार दूर होते हैं, शरीर में कान्ति और दीप्ति आदि का प्रादुर्भाव होता है, और कुछ ही समय के बाद साधक में इन गुणों की अनुभूति होने लगती है। अत: साधनावस्था में प्राणायाम करना आवश्यक है।

इसके बाद 'विघ्नोत्सारण' और 'शिखा-बन्धन' करके 'मातृकादिन्यास' करें। इसकी विधि पद्धति में दी गई है जिसे गुरुमुख से अच्छी तरह से समझ लें। इसी प्रकार और भी लिखे हुए न्यास यथाधिकार करने चाहिए।

तन्त्रशास्त्र का सिद्धान्त है कि 'देवता बनकर देवता की पूजा करें'

और 'न्यास' का अर्थ है स्थापना। शरीर के अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना करने से समस्त शरीर मन्त्रमय और देवमय हो जाता है। इन न्यासों से शरीर की जडता और आणवमल का नाश होकर दिव्यता का समावेश होता है।

ये न्यास अधिकारानुसार–'बालामन्त्र से दीक्षित के लिये बालाषडङ्ग न्यास तक तथा पञ्चदशीमन्त्र से दीक्षित होने पर मूलविद्या-न्यास' तक करने आवश्यक है। तदनन्तर 'लघु षोडान्यास' और 'श्रीचक्रन्यासादि' भी यथावकाश करने से अभ्युदय होता है, तथा 'महाषोढा-न्यास' का तो पूर्ण दीक्षा वाले को ही अधिकार है।

'ललिता न्यासप्रिया प्रोक्ता' इस वचन के अनुसार न्यास करने से भवगती ललितात्रिपुरसुन्दरी प्रसन्न होती है।

ये सभी न्यास दाहिने हाथ के अंगुष्ठ और अंनामिका के मिलाने से बनी 'तत्त्वमुद्रा' से करने चाहिये। दाहिने हाथ में वामहस्त से तत्त्वमुद्रा बनाकर न्यास करें। जिह्वा, दन्त और गुह्यस्थानों में मानसिक भावना से न्यास होता है।

पूजा प्रकरण–

पूजा का प्रकरण दो विभागों में विभक्त है। प्रथम विभाग में पूजा के लिये उपयोगी पात्रों का स्थापन, उनमें वस्तुओं की पूर्ति एवं पूरित वस्तुओं का संस्कार होता है। इसी को 'पात्रासादन' कहा जाता है। ये पात्र क्रमश: १. कलश, २. सामान्यार्घ्य पात्र (शङ्ख), ३. विशेषार्घ्यपात्र, ४. शुद्धिपात्र, ५. गुरुपात्र और ६. आत्मपात्र है। इनके अतिरिक्त पाद्य-पात्र, अर्धपात्र तथा आचमनीय पात्र भी होते हैं। विशेषार्घ में तर्पणी अर्पणार्थ रहती हैं, एवं भगवती के अग्रभाग में तर्पण-क्षीर-समर्पण-पात्र'

और भगवती के वामभाग में अर्पणपात्र रखा जाता है। शास्त्रों में 'पात्रासादन' और उनकी संख्या का विविध विधान वर्णित है। अत: अपने सम्प्रदायानुसार करना ही श्रेयस्कर है। यहाँ उपर्युक्त पात्रों के सम्बन्ध में कुछ अधिक स्पष्टता अपेक्षित है, अत: साधकों के हितार्थ वह लिख रहे हैं। यथा–

कलश-स्थापन– यहां पूजा में दो कलश होते हैं, जिसमें एक 'वर्धनी-कलश' होता है तथ द्वितीय 'क्षीर-कलश' होता है। जिसमें विशेषार्घ्य के लिये साधित क्षीर पूरित रहता है। वर्धनीकलश अरत्नि-प्रमाण होना चाहिये। (मणिबन्ध से अङ्गुली के अग्रभाग पर्यन्त हस्त के प्रमाण को 'अरत्नि' कहते है।)

क्षीर-कलश– विशेषार्घ्य-पात्र से द्विगुण होना चाहिये। विशेषार्घ्य पात्र अपने चार अंगुल ऊंचा और उतना ही चौड़ा कमल-सदृश दृष्टि मनोहर होना चाहिये। उसका आधार-त्रिपदी भी चार अंगुल ऊँची तथा चार अंगुल चौड़ी होनी चाहिये जिसमें विशेषार्घ पात्र का अच्छी तरह से समावेश हो जाय।

सामान्यार्घ्य– यह शङ्ख का होता है, और यह बीच की नाभि निकाला हुआ 'जल-शङ्ख' होना चाहिये। इसका भी आधार त्रिपदी हो एवं विशेषार्घ्य पात्र के समान ही ऊँचा हो।

शुद्धिपात्र–गुरुपात्र तथा आत्मपात्र– ये तीनों छोटी कटोरियाँ होती हैं। पाद्य, एवं आचमन के लिये दो पात्र तथा बलि के लिये एक ताम्रपात्र रहता है। इन पात्रों को अन्यान्य धातुओं के बनाने का भी शास्त्रों में विधान वर्णित है जो विशेष कामनाओं के लिये है। रजतपात्र सर्वोपयोगी होते हैं।

पात्रासादन

पात्रासादन के लिये ग्रन्थ में पूर्ण विधि दी गई है। अपने वामभाग में पीठ पर मत्स्यमुद्रा से मण्डल-निर्माण, उस मण्डल की मूल मन्त्र से पूजा, एवं **वर्धनी पात्र स्थापन,** पूजन, अभिमन्त्रण और कलश जल से सर्व वस्तुओं का प्रोक्षण, सर्वप्रथम यहाँ होता है।

वर्धनी-पात्र के दक्षिण भाग में सामान्यार्घ्य स्थापित होता है। यहाँ भी मत्स्य-मुद्रा से मण्डल-रचना, मण्डल-पूजन, आधारस्थापन उसमें दस वह्निकलाओं की पूजा एवं सामान्यार्घ्य स्थापन, उसमें बारह सूर्य कलाओं की पूजा, वर्धनीपात्र से उद्धरणी द्वारा जलपूरण करके सोलह सोमकलाओं की पूजा तदनन्तर जल में मूल मन्त्र से षडङ्ग, पजून करके उससे पूजा सामग्री का प्रोक्षण विधेय है।

विशेषा– इस प्रकार सामान्यार्घ्य के जल से विशेषार्घ्य-स्थापना के स्थल पर पूर्ववत मण्डल, आधार, पात्र एवं पात्रामृत का पूजन होता है। इसमें जो कुछ विशेषाएं हैं उन्हें उस-उस स्थान पर लिख दिया है।

इसी प्रकार शुद्धिपात्र, गुरुपात्र और आत्मपात्र-स्थापन की भी विधि है। इन पॉचों के लिये आवश्यक मण्डलों के चित्र भी यहाँ दिये गये हैं।

सरल संस्कृत भाषा में पूजा-विधि लिख दी गई है। अत: पहले इस विधि को कण्ठस्थ कर लेना चाहिये, तदनन्तर गुरु-मुख से अच्छी तरह समझ कर आद्योपान्त पूजन देखना चाहिये। इससे यह पूजा समझ में आ जताी है। सम्पूर्ण पूजा करने में दो से तीन घण्टे लगते है। अभ्यास होने पर समय कम हो जाता है।

पूजा के अन्तर्गत विशेष मुद्राओं की भी आवश्यकता होती है। पूरी पूजा में ५० मुद्राएँ अपेक्षित हैं, इसका भी ज्ञान आवश्यक है। भगवती-

का श्रीयन्त्र में चौसठ उपचारकों से पूजन करके पद्धति में प्रतिपादित लयाङ्ग-पूजन, नित्याओं का अर्चन तथा गुरु-मण्डलार्चन करके आवरणार्चन किया जाता है।

आवरर्णाच विधि

स्वर्ण अथवा रजत की बनी हुई तर्पणी को दाहिने अङ्गुष्ठ और तर्जनी के मध्यभाग में रख कर तर्पण, अङ्गुष्ठ, अनामिका तथा कनिष्ठिका से अक्षत एंव पुष्प श्रीयन्त्र पर अर्पण करते हुए आवरणार्चन करें। सहस्रनामावली से अर्चन करना हो तो वह भी करें। तदनन्तर धूप, दीप, नैवेद्य, आरती, पुष्पाञ्जली और बलिदान करके इष्ट मन्त्र का जप करें। जप की विधि जप प्रकरण में दी गई है, उसके अनुसार जप करके कवच स्तोत्र-सहस्रनामादिकों का पारायण करें। तदनन्तर सुवासिनी-पूजन, तत्त्वशोधन और पात्रोद्वासन करें।

यहाँ यह स्मरणीय है कि–

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद् वाऽर्चन-साधनम्।
दानाशक्तः सपर्यान्तं पश्येत् तत्पर-मानसः।।

तथा– **'नित्य-नैमित्तिक-क्रमौ शिष्य-सुतादिभिरपि कारयितुं शक्येते। नित्यक्रमस्य प्रमादादिनाऽतिक्रमे मूलशतजपः प्रायश्चित्रमाम्नायम्।'** स्वयं पूजा में असमर्थ हो तो गुरु या साधक साधिकाओं के अर्चन सामाग्री देकर पूजा करावें, इस में भी असमर्थ हो तो तत्परता से पूजा का अवलोकन करें। ऐसा न करने से साधक का अधःपतन होता है। नित्य क्रम पुत्र, शिष्यों से करा सकते है। नित्यक्रम का प्रमादादि से अतिक्रमण होने पर मूल मन्त्र जप करें। नैमित्तिक क्रम अतिक्रमण होने पर मूल मन्त्र का सहस्र जप करें। यह प्रायश्चित विधि है। इनके अनुसार उपासना की

निरन्तरता ही सर्वतभावेन साध्य है।

इस प्रकार नित्यकर्म करते हुए नैमित्तिकार्चन करना चाहिये। इसमें पाँच पर्व मुख्य हैं– १. कृष्णाष्टमी, २. कृष्णचतुर्दशी, ३. अमावास्या, ४. पूर्णिमा एवं ५. सङ्क्रान्ति। इनमें प्रातःकाल नित्यकर्म करके दिन में उपवास पूर्वक रात्रि में पूजन किया जाता है। जिस दिन तिथि का अर्चन हो, वह तिथि रात्रि व्यापिनी होनी चाहिये। सङ्क्रान्ति का जो पुण्यकाल हो, उसमें पूजन होना चाहिये। पूजन के बाद भोजन करना चाहिये। पूर्णिमा के पर्व में कुछ विशेष विधि है, वह 'श्रीविद्यारत्नाकर' में वर्णित है उसके अनुसार विशेष उपचारों से अर्चन सम्पन्न करें।

नित्य, नैमित्तिक और काम्य ऐसे तीन प्रकार के कर्म होते हैं। जो नित्य और नैमित्तिक कर्म करता हैं उसी का काम्य-कर्म करने का अधिकार होता है। **परन्तु जो नित्य और नैमित्तिक कर्म निरन्तर करते हैं, उनके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।** उनको काम्य कर्म करने की आवश्यकता नहीं होती। यदि आवश्यक हो, तो गुरुमुख से सम्यक् प्रकार विधि का ज्ञान करके करें। अन्यथा काम्य-कर्मो में प्रत्यवाय भी होता है, अर्थात् विपरीत फल की भी सम्भावना रहती है। अतः बड़ी सावधानी से कर्म में प्रवृत्त होना चाहिये। शास्त्रों में लिखा है–

शुभं वाऽप्यशुभं वाऽपि काम्यं कर्म करोति नयः।
तस्यारित्वं व्रजेन्मन्त्रस्तस्मान्न तत्परो भवेत्॥

शुभ या अशुभ काम्य कर्म करता है तो मन्त्र देवता शत्रु भाव में परिणत हो जाता है, अतः काम्य कर्म न करके भगवती प्रीत्यर्थ निष्काम कर्म करने चाहिये।

पञ्चमकार अनुकल्प एवं समयाचार–

तन्त्रशास्त्र में 'मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, और मैथुन' इन पञ्च मकारों से पूजन का विधान वर्णित है। और इनके विधिनिषेध का भी बड़े विस्तार से वर्णन है। इसको देखकर सर्वसधारण (व्यक्ति) इसका निर्णय करने में असमर्थ होता है। जहाँ इन पञ्च मकारों से पूजन का विधान वर्णित है वहाँ शीघ्र ही अनेक सिद्धियों की प्राप्ति का वर्णन भी उपलब्ध है, अतः **इन सिद्धियों के लोभ से इन में प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है। परन्तु यह बड़ा ही कठिन मार्ग है। इसमें किञ्चित् भी असावधानी होने से निश्चित ही पतन होता है। भोग-पदार्थो की ओर आकर्षित होना इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, और इन्द्रियाँ इतनी बलवती होती है कि इनको भोगों से रोकना सर्वसाधारण का सामर्थ्य नहीं है। प्राणियों की प्रवृत्ति तो प्रकृति से है, परन्तु निवृत्ति ही महाफलदायक है।** अतः तन्त्रोक्त उपासना में पञ्चमकार आवश्यक हो ऐसी बात नहीं है। शास्त्रों में इनके अनुकल्प का विधान भी वर्णित है। इसके स्थान पर दुग्ध, फलरस तथा सुगन्धित द्रव्यों से मिश्रित सात्त्विक द्रव्यों से अर्चन करना ही हितकारक है। इससे पतन का भय नहीं है और सर्वतोमुखी कल्याण ही होता है।

जगद्गुरु आद्य शङ्कराचार्य के द्वारा प्रवर्तित तन्त्र-मार्ग में सात्त्विक उपासना का उपदेश है और वर्तमान में **शाङ्कर सम्प्रदाय ही अनवच्छिन्न रूप से चला आ रहा है।** इसके अनुसार उपासना करने से साधक शीघ्र ही मन्त्र सिद्धि के द्वारा लौकिक और परालौकिक कल्याण, 'अभ्युदय और निःश्रेयस' का अधिकारी हो जाता है।

श्रीयन्त्राधिष्ठात्री भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की मातृभाव से

उपासना है। वह करुणामयी, कृपामयी, भक्तवत्सला माता अपने पुत्रों का कल्याण ही करती है और इसमें विशेष विधि-विधानों की ओर जाना भी आवश्यक नहीं है। शास्त्रों में कहा है—

निष्कामो देवतां नित्यं योऽर्चयेत् भक्ति-निर्भरः,
तामेव चिन्तयन्नास्ते यथा शक्ति मनुं जपन्
सैव तस्यैहिकं भारं वहेन् मुक्तिञ्च साधयेत्
सदा सन्निहिता तस्य सर्वञ्च कथयेत सा
वात्सल्य-सहिता धेनु यथा वत्समनुव्रजेत्
अनुगच्छेच्च सा देवी स्वं भक्तं शरणागतम्।

जो साधक निष्काम भाव से श्रद्धा भक्ति युक्त होकर उस कृपा मयी माता का चिन्तन करता है, और यथा शक्ति अपने इष्ट मन्त्र का जप करता है तो वह भगवती उस भक्त के इहलौकिक समस्त भारों को स्वयं बहन करती है और शेष में मुक्ति भी देती है। इतना ही नहीं उस शरणागत भक्त के वह सदा साथ रहती है और सब कुछ उसको कहती रहती है। जैसे वात्सल्य स्नेह से द्रवित चित्त होकर गाय अपने बछड़े के पीछे रहती है, उसी तरह वह करूणामयी माता अपने शरणागत भक्त के अनुगत होकर सब प्रकार से रक्षा करती है। संसार की यात्रा बड़ी भयानक है उससे परित्राण पाने के लिये मातृभाव की उपासना ही सर्वश्रेष्ठ है। **आपदि किं करणीयं स्मरणीय चरण-युगलमम्बायाः, न मातुः परमस्ति दैवतम** आदि शास्त्रों का उपदेश है कि माता के समान दूसरा कोई बड़ा देवता नहीं है। अतः आपात् काल में क्या करना चाहिये कि माता के चरण कमलों का निरन्तर स्मरण करना चाहिये। इससे मनुष्य दीनता हीनता दरिद्रता आधि व्याधि शोक सन्तापों से मुक्त होकर परम कल्याण को प्राप्त कर लेता है। यह भारतीय उपासनाओं में

सर्वश्रेष्ठ उपासना मानी जाती है। और यह ज्ञान विज्ञान पूर्ण रहस्यमयी पद्धति है। इसका गुरु परम्परा से ही ज्ञान होता है। सर्व प्रथम इसमें मन्त्र दीक्षा परमावश्यक है। मन्त्र दीक्षा के विना इस पूजा का अधिकारी नहीं होता है। दीक्षा प्राप्त करके उसके नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। इस साधना की तीन कोटि होती है। साधक सिद्धि और सिद्ध ये क्रमशः तीन अवस्थाओं की प्राप्ति होती है।

प्रारम्भ में साधक के लिये मन्त्र का अर्थ और मन्त्र चैतन्य की क्रिया, और बाह्य एवं आनन्तर की योनि मुद्रा का ज्ञान आवश्यक है, इसके बिना चिर काल तक भी सिद्धि सम्भव नहीं है। ये सब गुरु गम्य ज्ञान है जिससे विधि पूर्वक साधना करके अनुभूति प्राप्त की है वही मन्त्र रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर पाता है। और वह श्रद्धालु उपासकों को भी उपकृत करने में समर्थ होता है। अतः सम्प्रदाय पूर्वक गुरुपरम्परा से ही इस साधना का रहस्य प्राप्त होता है। अनेक जन्मों के पुण्य पुञ्ज जब एक साथ उदित होते है तो इस साधना में श्रद्धा उत्पन्न होती है। तदनन्तर उत्कट उत्कण्ठा से उस विश्वपति से प्रार्थना करता है तो वह अशरणशरण अकारणकरुण भगवान् विश्वनाथ स्वयं उसका मार्गदर्शन करते है, गुरुरूप में शक्तिपात के द्वारा साधना में प्रवृत्त कर देते है। उसके शनैः शनैः सांसारिक राग द्वेषादि दोष दूर हो जाते हैं और शेष में स्वरूप साक्षात्कार से कृतकत्य हो जाता है। इस साधना से भोग और योग दोनों प्राप्त होते है। ''**श्रीसुन्दरी सेवन तत्पराणां भोगश्च योगश्च करस्थ एव।**'' अतः अपने जीवन का कुछ समय देकर साधना में प्रवृत्त होना चाहिये, **जिससे यह संसार यात्रा सुखमय हो, जीवन भर सांसारिक प्रपञ्चों के करने पर भी वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त नहीं होती है, लौकिक उपलब्धियाँ कितनी भी क्यों न प्राप्त हो जाय परन्तु पूर्णता प्राप्त नहीं**

होती, पूर्णता प्राप्त करने के लिये एक मात्र मार्ग साधना ही है।

मैने गुरु कृपा से यत् किञ्चित् ज्ञान प्राप्त किया उसे उनकी ही प्रेरणा से जगत् कल्याण के लिये प्रकाशित करने का प्रयत्न किया है। उत्तर भारत में श्रीविद्या साधना का प्रचार श्रीस्वामी जी महाराज द्वारा ही हुआ है, यह ज्ञान अनवरत रूप से प्रवाहित होता रहे यही हमारी हार्दिक कामना है। और इससे श्रीविद्या साधकों का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा। जहाँ तक हो सका है इस पद्धति में साधकों के लिये सभी विधानों का समुचित समावेश किया गया है। और जो साधकों की विशेष जिज्ञासा हो तो हम नि:स्वार्थ रूप में सहयोग के लिये सदा सर्वदा प्रस्तुत है।

शेष में साधकों के लिये कुछ विशेष निर्देश का उल्लेख करके अपने वक्तव्य को परिसमाप्त करता हूँ।

ब्रह्मनाड़ी मनुष्य का शरीर सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियों से परिपूर्ण है। उन शक्तियों का जागरण करना ही साधना का लक्ष्य है। शरीर में बहत्तर हजार नाड़ियों का जाल बिछा हुआ है और उनमें सभी शक्तियाँ सुप्त रूप में विद्यमान है। उनमें तीन नाड़ियाँ इड़ा पिङ्गला सुषुम्ना मुख्य है। इन्हीं में विशेष रूप से शक्ति का संचार होता है। मन्त्रों का भावना पूर्वक शुद्ध उच्चारण करने से सुषुम्ना नाड़ी का विकास होता है, यह ब्रह्म नाड़ी भी कही जाती है। कुण्डलिनी शक्ति के प्रवाह होने का यह मार्ग है।

कुण्डलिनी शक्ति

समस्त विश्व के प्राणियों में चेतना रूप में ईश्वरीय शक्ति का समावेश है। इसी से सब जीवों में ज्ञान, क्रिया का संचार होता है। इसी से चीटीं से लेकर ब्रह्म पर्यन्त सभी जीव अपने आवश्यक कर्म आहार

निद्रादि का निर्वाह करते है। शरीर के अनुकूल ही ज्ञान क्रिया का संचार होता है। अत: पशु पक्षी आदि अपनी शारीरिक क्षमता से विशिष्ट क्रिया करने में असमर्थ है, किन्तु मनुष्य देह ऐसा ईश्वर ने बनाया है कि वह ईश्वरीय शक्तियों का विकास करने में समर्थ है। तन्त्र शास्त्रों की मान्यता है कि वह शक्ति मनुष्य शरीर में कुण्डलिनी रूप में विद्यमान है और उसका विकास मन्त्रयोग से होता है। मन्त्रों के बीजाक्षरों की ह्रस्व दीर्घ मात्राओं का यथावत् शुद्ध उच्चारण करने से सुषुम्ना मार्ग विकसित हो जाता है और उससे कुण्डलिनी का उर्ध्व गमन होता है, और इससे अलौकिक शक्तियाँ मनुष्य देह में विकसित होने लगती है। अतएव मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना परमावश्यक है। अशुद्ध उच्चारण से विपरीत फल की भी संभावना रहती है। दीक्षा का मुख्य प्रयोजन भी यही है, मन्त्र सिद्धि प्राप्त गुरु के द्वारा मन्त्रोच्चारण यथावत् शुद्ध होता है इसलिये मन्त्र के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान प्राप्त करके उसी मन्त्र के द्वारा कुण्डलिनी जागरण की क्रिया को जान कर मन्त्र जप करने से शीघ्र ही अनुभूतियाँ होने लगती है, क्योकिं अपने ही देह में स्थित शक्तियों का विकास करना है अपनी वस्तु अपने को सुलभ होती है। अत: आलस्य त्याग करके गुरु निर्दिष्ट साधना क्रम का अभ्यास करना चाहिये। **अभ्यास का महत्त्व अनन्त है कर्माभ्यास के फल स्वरूप सिद्धि लाभ अवश्यम्भावी है। साधना में श्रद्धा दृढ़ निष्ठा और तत्परता ही सब सिद्धियों का मूल कारण है।**

इसके साथ मन वचन कर्म से व्यवहार की पवित्रता चारित्रिक शुद्धि शास्त्र मर्यादा का पालन करना आवश्यक है, इस पद्धति में परिशिष्ट में त्रैपुर सिद्धान्त और साधक धर्मो का उल्लेख किया है उनको जानने से साधना के उद्देश्य और प्रयोजन का यथार्थ ज्ञान हो जायगा।

और तत्परता से कर्माभ्यास करने से ऐश्वर्य शक्तियों का स्फुरण और विकास निश्चित रूप से होगा।

मन्त्र योग की उपासना का अपरिमिति फल है श्री आद्यशङ्कराचार्य रचित सौन्दर्य लहरी स्तोत्र में फल का वर्णन इस प्रकार है।

सरस्वत्याः लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते।
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।।
चिरञ्जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः ।
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद् भजनवान्।।

श्रीविद्या की साधना करने वाला व्यक्ति श्रीविद्या में ब्रह्म के तुल्य और लक्ष्मीवान् होने से विष्णु के समान एवं सौन्दर्य में कामपत्नी रति के भी पातिव्रत्य को शिथिल करने वाला हो जाता है, अर्थात् ब्रह्मा विष्णु एवं कामदेव को भी सापत्न्य भाव हो जाता है, चिरञ्जीवी होकर अष्ट पशु पासो से मुक्त होकर ब्रह्मानन्द रस का आस्वादन करता है। इतनी उत्तम साधना दूसरी नही है, दत्तात्रेय, हयग्रीव, परशुराम शङ्कराचार्य भगवदवतारो ने अनेक ऋषि महर्षि ब्रह्मात्माओं ने भी इसे सर्व श्रेष्ठ मान्यता दी।

शिव शासन– जिह्वा दग्धा परान्नेन हस्तौ दग्धौ प्रतिग्रहात्।
मनो दग्धं परस्त्रिभिः कथं सिद्धि र्वशनने।।

परान्न–प्रतिग्रह–परस्त्री परित्याग। सत्य शौच का आधान ही सम्पूर्ण सिद्धियों का समाधान।

श्रीगुरुचरणरोजरेणु
दत्तात्रेय–आनन्दनाथ
(सीतारामकविराज)

॥ श्रीः ॥

श्रीजगन्मात्रे नमः

श्रीविद्यावरिवस्यान्तर्गतविषयानुक्रमः



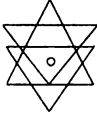
अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुश—पुष्पबाणचापाम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्।।

।। श्रीः।।

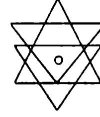
।। श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीमहागणपतये नमः।।

।। श्रीसच्चिदानन्दस्वरूपिण्यै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।।

श्रीकरपात्रस्वामिविरचितः



श्रीविद्या-वरिवस्या



आब्रह्माण्डपिपीलिकान्ततनुभृत्सूज्जृम्भमाणा स्फुटम्,
जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्तिभासकतया सर्वत्र या दीव्यति।
सा देवी जगदम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी,
श्रीविद्या करुणानिधिः शुभकरी भूयात् सदा श्रेयसे।।

अथ प्रथममाह्निकप्रकरणम्

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद् बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ मुखञ्च प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्य शुद्धवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्याज्ञाचक्रे कोटीन्दुप्रकाशे स्वगुरुं ध्ययेत्—

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि।।

।। श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् ।।

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतम्।
कुण्डलीविवरकाण्डमण्डितं द्वादशार्णसरसीरुहं भजे ।। १ ।।
तस्य कन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया।
कोणलक्षितहलक्षमण्डलीं भावलक्ष्यमबलालयं भजे।। २ ।।
तत्पुटे पटुतडित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभम्।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नादबिन्दुमणिपीठमुज्ज्वलम्।। ३ ।।
ऊर्ध्वमस्य हुतभुक्शिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदम्।
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयो:।। ४ ।।
तत्र नाथचरणारविन्दयो: कुङ्कुमासवपरीमरन्दयो:।
द्वन्द्वबिन्दुमकरन्दशीतलं मानसं स्मरति मङ्गलास्पदम्।। ५ ।।
निषक्तमणिपादुका — नियमितौघकोलाहलम्।
स्फुरत्किसलयारुणं नखसमुल्लसच्चन्द्रकम् ।।
परामृत-सरोवरोदित-सरोजसद्रोचिषम् ।
भजामि शिरसि स्थितं गुरुपदारविन्दद्वयम् ।।

।। श्रीगुरुपञ्चकम् ।।

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्याऽवतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ।। १ ।।
नवाय नवरूपाय परमार्थस्वरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते ।। २ ।।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय शिवात्मने।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे ।। ३ ।।

विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे ॥ ४॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्युपर्यधः।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥ ५॥
इत्येवं पञ्चभिः श्लोकैः स्तुवीत यतमानसः।
प्रातः प्रबोधसमये जपात् सुदिवसं भवेत् ॥ ६॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूपनिरूपणहेत्वमुकाम्बासहितश्रीगुरुपादुकां पूजयामि'
'स्वच्छप्रकाशविमर्शहेत्वमुकाम्बासहितश्रीपरमगुरुपादुकां पूजयामि'
'स्वात्मारामपञ्जरविलीनचेतस्कामुकाम्बासहितश्रीपरमेष्ठिगुरुपादुकां पूजयामि', इति गुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरुपादुकां पूजयेत्।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात्परं ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

इति प्रणम्य प्राणानायम्य च तच्चरणयुगलविगलदमृतरसविसरपरिप्लुताखिलाङ्गमात्मानं भावयेत्।

ततश्च सर्वचैतन्यात्मिकां जाग्रदाद्यवस्थात्रयावभासिकां सर्वाधिष्ठानरूपां प्रत्यक्चैतन्याभिन्नब्रह्मात्मिकां सर्वचैत्यविवर्जितामखण्डां चितिं भावयेत्।

आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं तडिल्लतासदृशाकृतिं तरुणारुणपिञ्जरां तैजसीं ज्वलन्तीं कुण्डलीरूपां सर्वाधिष्ठानभूतां परां संविदं भावयेत्।

नियमितपवनस्पन्दो मूलाधारे चतुर्दलपद्मे त्रिकोणात्मकं पीठस्थित-

ज्योतिर्लिङ्गमावेष्ट्यावस्थितां सार्धत्रिवलयां "हूं" बीजेनोत्थिताम् 'ऐं ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रं च जपन् कुण्डलिनीं ध्यायेत्।

।। कुण्डलिनीमन्त्रः।।

वाग्भवं भुवनेशी च श्रीबीजन्तु तथैव च ।
त्र्यक्षरो मन्त्र आख्यातः कुण्डलिन्यास्सुसिद्धिदः।। १ ।।
ऋषिश्शक्तिस्समाख्यातो गायत्रीच्छन्द ईरितम्।
चेतनाकुण्डली शक्तिर्देवतात्र समीरिता।। २ ।।
वाग्भवं बीजमाम्नातं शक्तिः श्रीबीजमुच्यते।
हृल्लेखा कीलकं प्रोक्तं कुण्डलिन्यास्तु चिन्तने।। ३ ।।
विनियोगस्समाख्यातः सर्वागमविशारदैः ।
बीजत्रयद्विरावृत्त्या षडङ्गन्यास ईरितः।। ४ ।।
ध्यानं वक्ष्यामि कुण्डल्यास्सावधानतया शृणु।
मूलाधारे त्रिकोणे तु सूर्यकोटिसमत्विषि।। ५ ।।
प्रसुप्तभुजगाकारां सार्धत्रिवलयस्थिताम् ।
नीवारशुकवत्तन्वीं तडित्कोटिसमप्रभाम् ।। ६ ।।
सूर्यकोटिप्रभां दीप्तां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्।
शिवशक्तिमयीं देवीं शङ्खावर्तक्रमात्स्थिताम्।। ७ ।।
सुषुम्नामध्यमार्गेण यान्तीं परशिवावधि।
ह्रींकारबीजरूपेण चिन्तयेद् योगवर्त्मना ।। ८ ।।

।। ध्यानम्।।

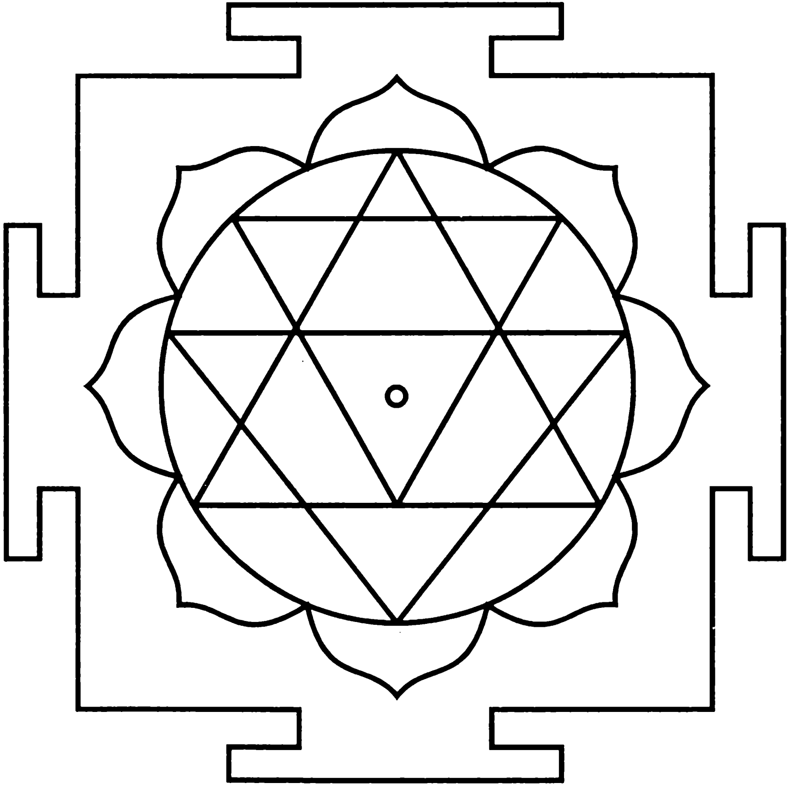
सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि-
स्फुरत्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थसव्यचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।

भगवती श्रीभुवनेश्वरी



सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्, तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं, सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी-यन्त्रम्



।। कुण्डलिनीस्तुतिः ।।

मूलोन्निद्रभुजङ्गराजसदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरं
भित्वाधारसमूहमाशु विलसत्सौदामिनीसन्निभाम्।
व्योमाम्भोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौघैः पतिं
सम्भाव्य स्वगृहागतां पुनरिमां सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम्।।
हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्तिः कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम्।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूय स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरुचिरा ध्येया जगन्मोहिनी।।
अव्यक्तं परबिम्बमञ्चितरुचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा।
आनन्दामृतकन्दगं पुरमिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं
संवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः।।
मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसंक्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तडित्कोटिप्रभाभास्वराम्।
उद्यन्तीं समुपास्महे नवजपासिन्दूरसान्द्रारुणां,
सान्द्रानन्दसुधामयीं परशिवं प्राप्तां परां देवताम्।।
गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा तनुयाद्योगफलानि कुण्डली।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा भजतां वाञ्छितकल्पवल्लरी।।
आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलयां नीवारशूकोपमां,
नित्यानन्दमयीं गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदैः।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवत्कोदण्डमध्योदितां,
ध्यायेद्भास्वरबन्धुजीवरुचिरां संविन्मयीं देवताम्।
हृत्पङ्केरुहभानुबिम्बनिलयां विद्युल्लतामन्थरां,
बालार्कारुणतेजसा भगवतीं निर्भर्त्सयन्तीं तमः।।

नादाख्यं परमर्धचन्द्रकुटिलं संविन्मयीं शाश्वतीं,
यान्तीमक्षररूपिणीं विमलधीर्ध्यायेद्विभुं तेजसाम्।।
भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटां नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्तीं तनुम्।
वर्णानां जननीं तदीयवपुषा संव्याप्य विश्वं स्थितां,
ध्यायेत् सम्यगनाकुलेन मनसा संविन्मयीमम्बिकाम्।।
मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सवित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकामं,
दद्यादद्य श्रियमविकलां वाङ्मयी देवता नः।।
आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती शिवाङ्गना वः शिवमातनोतु।।
निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः।।
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतंसमानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु।।
वर्णैरर्णवषट्दिशारविकलाचक्षुर्विभक्तैः क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान्।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतै
र्भिन्दाना परदेवता त्रिजगतां चित्तेषु दत्तां मुदम्।।
आधाराद् गुणवृत्तशोभिततनुं निर्गत्वरीं सत्वरं,
भिन्दन्तीं कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम्।
संक्षुब्धं ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत—
स्रोतःकन्दलिताममन्दतडिदाकारां शिवां भावये।।

मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिभाभास्वरे विभ्रमन्तं
कामं बालार्ककालानलजरठकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम्।
विद्युन्मालासहस्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य।।
तस्योर्ध्वे विस्फुरन्तीं स्फुटरुचिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी–
मुद्गच्छन्तीं सुषुम्नामनु सरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम्।
चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरीं भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्नां स्फुरति निरुपमा हूँकृतोदञ्चितोर:।।
नीता सा शनकैरधोमुखसहस्रारारुणाब्जोदरे,
च्योतत्पूर्णशशाङ्कबिम्बमधुन: पीयूषधारास्रुतिम्।
रक्तां मन्त्रमयीं निपीय च सुधानि:ष्यन्दरूपा विशेद्
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत्।।
योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तर्बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान्।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्ग: सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजाल:।।

(इति तद्रश्मिनिकरभस्मितसकलकश्मलजालो "मूलं"– मनसा दशवारमावर्तयेत्)

।। अजपा–जपविधि:।।

अथ षट्शताधिकैकविंशतिसाहस्रिकां नि:श्वासोच्छावासरूपिणीं मूलाधारादिब्रह्मरन्ध्रान्तसप्तचक्रनिवासिनीभ्यो देवताभ्यो निवेदयामि, यथा-

मूलाधारे चतुर्दलपद्मे वं शं षं सं चतुरक्षरे चतुष्कोणयन्त्रे ऐरावतवाहने लं बीजे स्थिताय सिद्धिबुद्धिशक्तिसहिताय कुङ्कुमवर्णाय महागणपतये **षट्शतमजपागायत्रीजपं निवेदयामि।**

स्वाधिष्ठाने षड्दलपद्मे बं भं मं यं रं लं षडक्षरे अर्धचन्द्रे यन्त्रे मकरवाहने वं बीजे स्थिताय सरस्वतीशक्तिसहिताय सिन्दूरवर्णाय ब्रह्मणे **षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।**

मणिपूरकचक्रे दशदलपद्मे डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं दशाक्षरे त्रिकोणयन्त्रे मेषवाहने रं बीजे स्थिताय लक्ष्मीशक्तिसहिताय नीलवर्णाय विष्णवे **षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।**

अनाहतचक्रे द्वादशदलपद्मे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं द्वादशाक्षरे षट्कोणयन्त्रे हरिणवाहने यं बीजे स्थिताय पार्वतीशक्तिसहिताय हेमवर्णाय परमशिवाय **षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।**

विशुद्धिचक्रे षोडशदलपद्मे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः षोडशाक्षरे शून्ययन्त्रे हस्तिवाहने हं बीजे स्थिताय प्राणशक्तिसहिताय शुद्धस्फटिकसङ्काशाय जीवाय **सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि।**

आज्ञाचक्रे द्विदलपद्मे श्वेतवर्णे हं क्षं द्व्यक्षरे लिङ्गयन्त्रे नरवाहने प्रणव बीजे स्थिताय ज्ञानशक्तिसहिताय विद्युद्वर्णाय गुरवे **सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि।**

ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रदलपद्मे चित्रवर्णे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इति विंशतिवारोच्चारिते सहस्राक्षरे विसर्गयंन्त्रे बिन्दुवाहने पूर्णचन्द्रमण्डले आनन्दमहासमुद्रमध्ये चिन्मयमणिद्वीपे चित्सारचिन्तामणिमयमन्दिरे कल्पवृक्षाधस्थले अव्या-कृतब्रह्ममहासिंहासने स्थिताय नानावर्णाय वर्णातीताय चिच्छक्तिसहिताय परमात्मने **सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि** (इति निवेदयेत्)।

(अंथ कतिचित् क्षणान् हंसः सोऽहमिति श्वासोच्छ्वासेषु भावयेत्)

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः।
हंसोऽतिपरमं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा।।(इति ध्यात्वा)

मानसैरुपचारैस्सर्वान् देवान् पूजयेत्। यथा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि (कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्याम्) ।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्) ।
यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्) ।
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि (अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्) ।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्) ।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारान् समर्पयामि (साङ्गुष्ठाभिस्सर्वाभिः)।

श्रीचक्रदेवतान्तर्यागः

आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्त्यां बिसतन्तुतनीयस्यां विद्युत्पुञ्जपिञ्जरायां विवस्वदयुतप्रकाशायां कुण्डलिन्यामेव निम्नाङ्कितेषु चक्रेषु श्रीचक्रस्थितां देवतां भावयन् पूजयेत्।

तद्यथा—मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे तदुपरि स्थिते विषुवन्नाम्नि रक्तवर्णे षड्दले च देहश्रीचक्रयोरभेदेन भूपुरस्थिताः अणिमादिदेवीः पूजयामि।

चतुर्दले मूलाधारे षोडशदलगतकामाकर्षिण्यादिदेवीः पूजयामि।
षड्दले स्वाधिष्ठाने अष्टदलगतानङ्गकुसुमादिदेवीः पूजयामि।
दशदले मणिपूरे चतुर्दशारगतसर्वसंक्षोभिण्यादिदेवीः पूजयामि।
द्वादशदले अनाहते बहिर्दशारगतसर्वसिद्धिप्रदादिदेवीः पूजयामि।
षोडशदले विशुद्धौ अन्तर्दशारगतसर्वज्ञादिदेवीः पूजयामि।
लम्बिकाग्रे अष्टारगतवशिन्यादिदेवीः पूजयामि।
आज्ञाचक्रे द्विदले त्रिकोणगतमहाकामेश्वर्यादिदेवीश्च पूजयामि।
सहस्रारे बिन्दुगतश्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीं कामेश्वराङ्कनिलयां देवीं पूजयामि।

ततः श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां सचक्रावयवान्यावरणानि विलीनानि विभाव्य सहस्रारे स्थितजीवात्मना सहितां देवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैस्तां सम्पूज्य ततोऽकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकर-कमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः भूवियदनिलानलजललक्षणाः पञ्चभूत-मयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्च देवताः देव्यग्रे पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत्।

ततो देव्याः नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता—इति क्रमेण ताः विलीना विभाव्य मूलविद्यामुच्चारयन् जीवात्मानं देवीपादमूले लीनं विभाव्य हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तथैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् संक्षोभिण्यादिमुद्राः भावयित्वा क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत्। इति अन्तर्यागः।

।। रश्मिमालामन्त्राः ।।

ॐ भूर्भुवस्स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रयोदयात् (इति गायत्री मूलाधारे)।। १ ।।

सावित्र्या विश्वामित्र ऋषिः नृचिद्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै -
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीवरदाभयाङ्कुशकशाशुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

'यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि।।
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः'
(इत्यैन्द्री विद्या सप्तषष्ट्यर्णा सङ्कटे भयनाशिनी, हृदये)।। २ ।।

अभयङ्करमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अभयङ्करो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आरूढो वारणेन्द्रं दशशतनयनः श्यामलः कोमलाङ्गः
वर्मी वीरः प्रतापी प्रतिभटदहनप्रज्ज्वलच्चक्रपाणिः।

दोर्भिर्दिव्यायुधाढ्यैर्मणिगणखचितैर्देवमन्त्रीसनाथो
दत्वाभीष्टानि शश्वत्परिहृतदुरितः पातु विश्वं महेन्द्रः।।

'ॐ घृणिस्सूर्य आदित्योम्' (इत्यष्टार्णा सौरी तेजोदा, फाले)।। ३।।

(सौरमन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सूर्यो देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम्।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायाश्लिष्टतनुं भजे।।)

'ॐ' (इति प्रणवः केवलो ब्रह्मविद्या मुक्तिप्रदा, ब्रह्मरन्ध्रे) ।। ४।।

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परमात्मा देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

ओंकारवाच्यमुच्चण्डचण्डांशुसदृशप्रभम्।
वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्भमुपास्महे।।

'ॐ परोरजसेऽसावदोम्' (इति नवार्णा तुरीया गायत्री स्वैक्यविमर्शिनी, द्वादशान्ते)।। ५।।

(तुरीयागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

देवीं तुरीयगायत्रीं तुर्यातीतपदाश्रयाम्।
परोरजःप्रकाशात्मचितिरूपामहं भजे।।

रश्मिपञ्चकमेतन्मूलाधारहृत्फालविधिबिलद्वादशान्तस्थानबीजतया विभावनीयम्। (द्वादशान्तस्थानन्तु ललाटस्योत्तरभागः)।

'ॐ सूर्याक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरेकं तपन्तम्।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः।।

'ॐ नमो भगवते सूर्यायाहोवाहिनि वाहिन्यहोवाहिनि वाहिनि स्वाहा'।

वयस्सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाथमानाः।
अपध्वान्तमूर्णूहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्॥

'पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः' (इति षोडशमन्त्रसमष्टिरूपिणी चक्षुष्मती विद्या दूरदृष्टिसिद्धिप्रदा मूलाधारे)॥६॥

(चक्षुष्मतीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चक्षुष्मती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।) ध्यानम्—

चक्षुस्तेजोमयं पुष्पकन्दुकं बिभ्रतीं करैः।
रौप्यसिंहासनारूढां देवीं चक्षुष्मतीं भजे॥

'ॐ गन्धर्वराज विश्वावसो ममाभिलषितां कन्यां प्रयच्छ स्वाहा' (इत्युत्तमकन्याविवाहदायिनी हृदये)॥ ७॥

(विश्वावसुमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्रीछन्दः विश्वावसु देवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।) ध्यानम्—

रक्ताङ्गरागारुणभूषणाढ्यं वीणाधरं वीटिकयोल्लसन्तम्।
गन्धर्वकन्याजनगीयमानं विश्वावसुं सद्बृहतीं नमामि॥

'ॐ नमो रुद्राय पथिषदे स्वस्ति मां सम्पारय' (इति मार्गसङ्कटहारिणी विद्या, फाले)॥ ८॥

पथिषद्रुद्रमन्त्रस्य वामदेवः ऋषिः पङ्क्तिच्छन्दः, पथिषद्रुद्रो देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आत्तसज्जधनुर्बाणकरं वृषभसंस्थितम्।
अन्नपूर्णासमाश्लिष्टं पथिषद्रुद्रमाश्रये॥ ८॥

'ॐ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा, (इति जलापच्छमनी विद्या, ब्रह्मरन्ध्रे)॥ ९॥

तारा मन्त्रस्य मत्स्य ऋषिः,ताराम्बा देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्— नौकासिंहासनारूढां शाक्यदर्शनदेवताम्।
जलापच्छमनीं वन्दे तारां वारिदमेचकाम्।।

'अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः,
(इति महाव्याधिनाशिनी नामत्रयी विद्या, द्वादशान्ते)।। १०।।

(नामत्रयमन्त्रस्य काश्यपात्रिभरद्वाजा ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाविष्णुर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः)। ध्यानम् –

समस्तदुस्तरव्याधिसंघध्वंसपटीयसे ।
अच्युतानन्तगोविन्दनाम्ने धाम्ने नमो नमः।।

(एतद्रश्मिपञ्चकं मूलधारादिपरिकरतया ज्ञेयम्)।

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा'
(इति महागणपतिविद्या प्रत्यूहशमनी, मूलाधारे) ।। ११।।

महागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल—
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश्वरोऽभीष्टदः।।

'ॐ नमः शिवायै, ॐ नमः शिवाय'
(इति द्वादशार्णा शिवतत्त्वविमर्शिनी विद्या, हृदये)।। १२।।

(शिवशक्त्यात्मकपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, उमामहेश्वरो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

वामांसन्यस्तवामेतरकरकमलायास्तथा वामहस्त-
न्यस्तारक्तोत्पलायाःस्तनभरविलसद्वामहस्तः प्रियायाः।
सर्वाकल्पाभिरामः श्रितपरशुमृगेष्टः करैः काञ्चनाभः
ध्येयः पद्मासनस्थः स्मरललितवपुः सम्पदे पार्वतीशः।।)

'ॐ जुं सः मां पालय–पालय' (इति दशार्णा मृत्योरपि मृत्युरेषा विद्या, फाले)।। १३।।

(अमृतमृत्युञ्जयस्य कहोल ऋषिः, विराट्छन्दः अमृतमृत्युञ्जयसदाशिवो देवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् –

स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा–
स्रवदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम्।
स्वकरलसितमुद्रापाशवेदाक्षमालं
स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि।।

'ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं धारयिता भूयासं कर्णयोः श्रुतं मा च्योढ्वं ममामुष्य ॐ (इति श्रुतधारिणी विद्या ब्रह्मरन्ध्रे)।।१४।।

(श्रुतधारिणीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्-

चतुराननमम्भोजनिषण्णं भारतीसखम्।
अक्षमालावराभीतिकमण्डलुधरं भजे।।)

''अं आं.........अः कं खं......ळं क्षं'' (इति सबिन्दुरकारादिक्षकारान्तवर्णमालिकामातृका सर्वज्ञताकरी द्वादशान्ते)।।१५।।

(मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

पञ्चाशता मातृकया ह्यारब्धाखिलदेहया ।
समस्तविद्यारूपिण्या धन्योऽहं मातृकाम्बया।।)

(पञ्चेमाः रश्मयो मूलादिरक्षात्मकतया द्रष्टव्याः)।।

हसकलह्रीं, हसकहलह्रीं सकलह्रीं' (इति लोपामुद्राविद्या स्वस्वरूपविमर्शिनी, मूलाधारे)।। १६।।

(श्रीहादिलोपामुद्रामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्तिः ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ह ५ बीजम्, ह ६ शक्तिः स ४ कीलकम्, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। बालया षडङ्गम्।

ध्यानम्— श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम्।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम्।।)

'क्लीं हैं ह्सौः स्हौः हैं क्लीं
(इति षट्कूटा सम्पत्करी विद्या हृदये)।। १७।।

(सम्पत्करीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सम्पत्सरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् —

अनेककोटिमातङ्गतुरङ्गरथपत्तिभिः।
सेवितामरुणाकारां वन्दे सम्पत्सरस्वतीम्।।

'सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हं स्थितिपूर्णे नमः, सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि' (इति विद्यापञ्चकरूपिणी कालसङ्कर्षणी परमायुःप्रदा, फाले) ।। १८।।

(चण्डयोगेश्वरीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चण्डयोगीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् —

सृष्टिस्थितिभ्यां संहृत्यानाख्यया भासया श्रिताम्।
कूलङ्कषकपालाढ्यां चण्डयोगीश्वरीं भजे।।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः अहमहं अहमहं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं'
(इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या ब्रह्मरन्ध्रे) ।। १९।।

(परशम्भुनाथमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, परशम्भुनाथो देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् —

पूर्णाहन्तास्वरूपाय तस्मै परमशम्भवे।
आनन्दताण्डवोद्दण्डपण्डिताय नमो नमः।।)

'सौः' (इयं परा विद्या द्वादशान्ते) ।। २०।।

(परामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परासरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती।
मुद्रापुस्तलसद्वाहा पातु मां परमा कला।।)

(एताः पञ्च रश्मयो मूलाद्यधिष्ठानतया कलनीयाः)।

'ऐं क्लीं सौः, सौः क्लीं ऐं, ऐं क्लीं सौः' (इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता बाला)।।२१।।

(बालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः बालात्रिपुरसुन्दरी देवता। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

अरुणकिरणजालैरञ्जिताशावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला।।)

'श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा' इति श्रीदेव्या उपाङ्गभूता अन्नपूर्णा।। २२।।

(अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, अन्नपूर्णेश्वरी देवता। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आदाय दक्षिणकरेण सुवर्णदर्वीं
दुग्धान्नपूर्णमितरेण च रत्नपात्रम्।
अन्नप्रदाननिरतां नवहेमवर्णाम्
अम्बां भजे कनकभूषणमाल्यशोभाम्।।)

'ॐ आं ह्री क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा' (इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता अश्वारूढा)।।२३।।

(अश्वारूढामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, अश्वारूढा देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्—

बद्ध्वा पाशेनाङ्कुशेन कृष्यमाणां स्वसाध्यकम्।
घ्नन्तीं वेत्रेण फालस्त्रक्पाणिमश्वासनां भजे।।)

ध्यानम्—

अश्वारूढा कराग्रे नवकनकमयीं वेत्रयष्टिं दधाना
दक्षेऽन्ये धारयन्ती स्फुरितधनुलतापाशहस्ता सुसाध्या।।
देवी नित्यप्रसन्ना शशिशकललसत्केशपाशा त्रिनेत्रा
दद्यादद्यानवद्यां श्रियमखिलसुखप्राप्तिहृद्यां श्रियै नः।। इति वा।

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्तु—आह्निकप्रकरण एवोक्त इह पठितव्यः)। तद्यथा—

'ऐ ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौः, स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।। २४।।

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्रीविद्यागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् —

तेजोमयमहाविद्यां शेखराञ्चितमस्तकाम्।
रक्तां चतुर्भुजां वन्दे श्रीविद्यागुरुपादुकाम्।।)

(अथ मूलविद्या—सा च गुरुमुखादवगता कादिनाम्नी)—

'क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं'।।२५।।

(बाला अन्नपूर्णा अश्वारूढा श्रीपादुका चेत्येताभिश्चतसृभिर्युक्ता मूलविद्या साम्राज्ञी मूलाधारे विलोकनीया)।।

(ऋषिच्छन्दोदेवतादिकं गुरुपरम्परातः प्राप्तमवगन्तव्यम्।)

'ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा'

(इति श्यामाङ्गभूता लघुश्यामा) ।।२६।।

(लघुश्यामामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः विराट्छन्दः, श्रीलघुश्यामाम्बा देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम् –

स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्दुशोणाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मदविघूर्णनेत्राञ्चलाम्।
घनस्तनभरालसां गलितचूलिकां श्यामलां
करस्फुरितवल्लकीविमलशङ्खताटङ्किनीम्।।
माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं
मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम्।
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीं
मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि।। (इति वा)।।

'ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा'।

(इयं श्यामाङ्गभूता वाग्वादिनी)।। २७।।

(वागीश्वरीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, विराट्छन्दः, वागीश्वरी देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ध्यानम्–

अमलकमलसंस्था लेखनीपुस्तकोद्यत्-
करयुगलसरोजा कुन्दमन्दारगौरा।
धृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा
भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः।।)

ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः।
सर्वस्य वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्।।

(इयं श्यामाप्रत्यङ्गभूता नकुलीविद्या) ।। २८।।

(नकुलीवागीश्वरीमन्त्रस्य कहोल ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, नकुलीवागीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् –

नकुली वज्रदन्ताली साध्यजिह्वाहिदंशिनी।
भक्तवक्तृत्वजननी भावनीया सरस्वती।।)

श्रीविद्यागुरुपादुकैव प्रथमबीजत्रयस्थाने बालासहिता श्यामागुरुपादुका भवति। यथा–

'ऐं क्लीं सौः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः'।। २९।।

(श्यामागुरुपादुकामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्यामागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्

वन्दे गुर्वङ्घ्रिमुकुटां श्यामलां शुकपाणिनीम्।
समस्तसिद्धिजननीं श्यामलागुरुपादुकाम्।।)

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि, क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि (त्रैलोक्यं) अमुकं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं' (इत्यष्टनवतिवर्णा राजश्यामला पूर्वोक्ताभिरङ्गोपाङ्गपादुकेत्येताभिश्चतसृभिर्विद्याभिस्सहिता हृच्चक्रे यष्टव्या)।। ३०।। (ऋष्यादिकं गुरुपरम्परातोऽवगन्तव्यम्)

'लृं वाराहि लृं उन्मत्तभैरवि पादुकाभ्यां नमः'

(इयं वार्ताल्यङ्गभूता लघुवार्ताली) ।। ३१।।

(लघुवाराहीमन्त्रस्य नारद ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, लघुवाराही देवता,, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् –

महार्णवे निपतितामुद्धरन्तीं वसुन्धराम्।
महादंष्ट्रां महाकायां नमाम्युन्मत्तभैरवीम्।।)

'ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा'

(इयं स्वप्ने शुभाशुभवक्त्री वार्ताल्या उपाङ्गभूता स्वप्नवाराही)।।३२।।

(स्वप्नवाराहीमन्त्रस्य अग्निर्ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, स्वप्नवाराही देवता। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् –

स्वप्ने शुभाशुभं भावि शासन्तीं भक्तकार्ययोः।
दुःस्वप्नहारिणीं वन्दे वाराहीं स्वप्नायिकाम्।।)

ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकल पशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा।। ३३।।

(तिरस्करिणीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, तिरस्करिणी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

मुक्तकेशीं विवसनां सर्वाभरणभूषिताम्।
स्वयोनिदर्शनान्मुह्यत्पशुवर्गां नमाम्यहम्।।)

ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः'। (एषा वार्तालीगुरुपादुका)।। ३४।।

(वाराहीगुरुपादुकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, वाराहीगुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

देशिकाङ्घ्रिलसन्मौलिं खड्गिनीञ्च कपालिनीम्।
भावयामि घनच्छायां पञ्चमीगुरुपादुकाम्।।)

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः। रुन्धे रुन्धिनि नमः। जम्भे जम्भिनि नमः। मोहे मोहिनि नमः। स्तम्भे स्तम्भनि नमः। सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु करु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट्

(इति द्वादशोत्तरशताक्षरो महावाराहीमन्त्रः)।। ३५।।

(पूर्वोक्ताभिश्चतसृभिर्युक्तेयं महावाराही आज्ञाचक्रे परिपूज्या।)

प्रथमद्वितीयकूटयोः हल्लेखावर्जं पञ्चदश्येव त्रयोदशाक्षरी श्रीपूर्तिविद्या ब्रह्मरन्ध्रे यष्टव्या।

तद्यथा— 'क ए ई ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं' (इयं कादिपूर्तिविद्या) 'ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं' (इयं हादिपूर्तिविद्या)।।३६।।

(श्रीपूर्तिविद्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीपूर्तिविद्या देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः)

प्रथमत्रिकस्थाने त्रितारी कुमारी वाक् ग्लौं इत्यष्टबीजपूर्वा श्रीगुरुपादुकैव महापादुका सर्वमन्त्रसमष्टिरूपिणी स्वैक्यविमर्शिनी महासिद्धिप्रदायिनी द्वादशान्ते वरिवस्या।। यथा—

''ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।। ३७।।

(महापादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ॠषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, श्रीमहापादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

सर्वविद्यामयीं सर्वशक्तिपीठस्वरूपिणीम्।
कराग्रे हृदये मूले देशिकाङ्घ्रियुगत्रयम्।।
दधतीं दीप्तभूषाढ्यां श्रीमहापादुकां नमः।)

(इति ऋष्यादिसहितरश्मिमाला)। रश्मिमालामन्त्रा आहत्य सप्तत्रिंशतिः। एते ब्राह्मे मुहूर्ते सकृदावर्तनीयाः सर्व एवेमे मन्त्राः श्रीगुरुमुखादवगत्यैव पठिताः महते श्रेयसे, नान्यथेति शिवशासनम्।

पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाभिजायते।।

इति सांख्यायनतन्त्रवचनेन गुरुमुखागमं विना जपस्य निषेधात्।।

प्रातःकृत्यम्

।। भूप्रार्थनादिमुखक्षालनान्तम्।।

प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादिप्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम्।।
मञ्जुशिञ्जितमञ्जीरं वाममर्धं महेशितुः।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम्।।

श्रीललितापञ्चकं

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्।। १।।

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुंड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥ २॥
प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम्॥ ३॥
प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदूराम्॥ ४॥
प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यानाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति॥ ५॥
यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम्॥ ६॥

॥ भूप्रार्थना॥

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादचारं क्षमस्व मे॥

इति भूमिं सम्प्रार्थ्य, धरणीतलन्यस्तवहन्नाड़ीपाश्र्वपादमुत्थाय ग्रामाद्बहिः स्मार्तेन विधिना निर्वर्तितशौचक्रमः।

।। दन्तधावनम् ।।

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजा पशुवसूनि च।
ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते।।

इति मन्त्रेण दन्तधावनकाष्ठमभिमन्त्र्य 'ऐंह्रींश्रीं, **'क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः'** (इति मन्त्रेण दन्तधावनम्)। **ऐंह्रींश्रीं** हृल्लेखया जिह्वोल्लेखनं च विधाय कफविमोचननासाशोधनदूषिकानिरसनपूर्वकं-विहितविंशतिगण्डूषः। **ऐंह्रींश्रीं 'श्रीं'। ऐं ह्रीं श्रीं 'श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः'। ऐंह्रींश्रीं 'श्रीं ह्रीं क्लीं'। ऐंह्रींश्रीं 'श्रींसहकलह्रीं श्रीं'** इति मन्त्रचतुष्टयेन मुखं प्रक्षाल्य यथा स्मृत्याचामेत्।

।। स्नानविधिः ।।

ततो नद्यादौ वैदिकस्नानोत्तरं श्रीललिताप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानं करिष्ये, इति सङ्कल्प्य, जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य तत्र—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।

इति सूर्यमभ्यर्च्य,

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते।।

(इति गङ्गामर्थयित्वा) ऐंह्रींश्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रों, इत्युङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्वा गङ्गादिसर्वतीर्थावाहनोत्तरं ''वं'' इति सलिलबीजेन सप्तावारमभिमन्त्र्य मुहुर्मुहुरावर्तयन् मूर्ध्नि त्रीनुदकाञ्जलीन् दत्वा त्रींश्च पीत्वा, मूलपूर्वं श्रीललितां तर्पयामीति त्रिस्तर्पणं त्रिःप्रोक्षणञ्चात्मनो योनिमुद्रया विदध्यात्।

(गृहे तु विना तर्पणम्। अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मनोरन्यतरन्निर्वर्त्य मूलेन। त्रिराचमनप्रोक्षणे केवलं कुर्यात्)।

।। सन्ध्याविधिः।।

अथ धौते वाससी परिधाय विधृतत्रिपुण्ड्रः **वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकीमाचरेत्।** यथा—मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसौ नाभिं हृदयं शिरश्चाभिमृशेत्। एवं त्रिराचम्य पूर्ववत्प्राणानायम्य त्रिरात्मानश्च प्रोक्ष्य अञ्जलिना सलिलमादाय – **'ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहा'** इति मन्त्रेण उदयते विवस्वते त्रिरर्घ्यं दत्वा तन्मण्डले श्रीचक्रमनुचिन्त्य तत्र ध्यायेत् –

ध्यायेत्कामेश्वराङ्कस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम्।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम्।।
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम्।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम्।।
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम्।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकाम्।।

(अत्रायुधानां क्रमः स्वरूपञ्च सपर्याप्रकरणे वक्ष्यते)

ततः – 'ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे,
ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि,
स क ल ह्रीं तन्नः क्लिना प्रचोदयात्'

(इति मन्त्रेण महेश्यै त्रिरर्घ्यं दत्वा मूलेन त्रिस्सन्तर्प्य, मूलेन पूर्ववदाचम्य जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारमावर्तयेत्)। ततः पुनः कराङ्गन्यासादिकं कृत्वा जपं वक्ष्यमाणमन्त्रेण श्रीदेव्यै समर्प्याचम्य मण्डलस्थं तीर्थं विसर्जनमुद्रया सूर्ये विसृजेत्।

अथ सपर्यासाधनानि सम्पाद्य ब्रह्मयज्ञादि निर्वर्तयेद्। इति शिवम्।

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे प्रथममाह्निकप्रकरणं सम्पूर्णम्।

श्रीविद्यासपर्या–प्रकरणम्

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः।

ॐ श्रीमहागणपतये नमः

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम्

आब्रह्मलोकादाशेषांदालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम्॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः, सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम्।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं, शक्तिञ्च तत्पुत्रपराशरञ्च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकञ्च शिष्यम्।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

यागमन्दिर-प्रवेशः

ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः। (द्वारस्य दक्षशाखायां)
३ भं भैरवाय नमः। (द्वारस्य वामशाखायां)
३ लं लम्बोदराय नमः। (द्वारस्य ऊर्ध्वशाखायां)
(इति द्वारदेवताः सम्पूज्य)।

तत्त्वाचमनम्

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

गुरुपादुकामन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूँ ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोह हंसः शिवः, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोह हंसः, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख-सुवृत्त-चतुरस्त्रमुद्गर-योन्या-ख्याभिः पञ्चमुद्राभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत्।।

घण्टापूजा

हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत्।।
आगमार्थञ्च देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम्।।
(इति घण्टां प्रपूज्य घण्टानादं कृत्वा)।।

सङ्कल्पः

शुक्लाम्बधरं देव शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।
मूलेन प्राणानायम्य। देशकालौ सङ्कीर्त्य–

मम श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यैः यथाशक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वरं प्रीणयामि।।

आत्मानमलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनः सन् प्रमुदितचित्तः शिवोऽहं इति भावयेत्।।

पुष्पशोधनम्

पुष्पकेतुराज्ञार्हते शताय सम्यक् सम्बन्धाय औं पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सपुष्टो पुष्प भूषिते पुष्टाचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा।

आसनपूजा

(आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय ''सौः'' इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत्)।।

अस्य श्री आसनमहामन्त्रस्य–पृथिव्याः मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः।।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।
योगासनाय नमः, वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः।।
(इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने-उपविशेत्)।।

ऐं ह्रीं श्रीं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथाय नमः।
(इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं विकिरेत्)।।

देहरक्षा

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष–
(इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा)।।

गुं गुरुभ्यो	नमः।	(दक्षबाहौ)
गं गणपतये	नमः।	(वामबाहौ)
दुं दुर्गायै	नमः।	(दक्षोरौ)
वं वटुकाय	नमः।	(वामोरौ)
यां योगिनीभ्यो	नमः।	(पादयोः)
क्षं क्षेत्रपालाय	नमः।	(नाभौ)
पं परमात्मने	नमः।	(हृदये)

३ ॐ ऐं नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशु-जनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।।

३ ह्रीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गिपरिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।।

३ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनी हुं फट् स्वाहा–

(इति परितो वह्निप्राकारं विभाव्य) भूर्भुवस्स्वरों, इति दिग्बन्धः।।

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम्।
सञ्चिन्त्य परमाद्वैतभावनाऽमृतसेवया।।
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रमः।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नसङ्कोचसङ्कटः ।।

(इति–कुण्डलिनीमुत्थाप्य–शरीरममृतेनाप्लावितं विभाव्य।)

३ समस्तप्रकट गुप्त-गुप्ततर-सम्प्रदाय-कुलोत्तीर्ण-निगर्भ-रहस्याति-रहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनीदेवताभ्यो नमः।। (इति यन्त्रे पुष्पाञ्जलिं दत्वा)।।

देह रक्षा

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रः अस्त्राय फट्— इति अस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादि— कनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात्।।

३ श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे।।
३ अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

लघुप्राणप्रतिष्ठा

३ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः, श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः।।

३ आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः— श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

३ ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडया नस्स्वस्ति।। (प्रतिष्ठिते यन्त्रे न कुर्यात्)

मन्दिरपूजा

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः
३ रत्नद्वीपाय नमः
३ नानावृक्षमहोद्यानाय नमः
३ कल्पवाटिकायै नमः
३ सन्तानवाटिकायै नमः
३ हरिचन्दनवाटिकायै नमः
३ मन्दारवाटिकायै नमः
३ पारिजातवाटिकायै नमः
३ कदम्बवाटिकायै नमः
३ पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः
३ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
३ गोमेदकरत्नप्राकाराय नमः
३ वज्ररत्नप्रकाराय नमः
३ वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
३ इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
३ मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
३ मरकतरत्नप्राकाराय नमः
३ विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
३ माणिक्यमण्डपाय नमः
३ सहस्रस्तम्भमण्डपाय नमः
३ अमृतवापिकायै नमः
३ आनन्दवापिकायै नमः
३ विमर्शवापिकायै नमः
३ बालातपोद्गाराय नमः

३ चन्द्रकोद्वाराय नमः
३ महाशृङ्गारपरिघायै नमः
३ महापद्माटव्यै नमः
३ चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः
३ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः
३ दक्षिणाम्नायमयदक्षिण—
द्वाराय नमः
३ पश्चिमाम्नायमयपश्चिम—
द्वाराय नमः
३ उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
३ रत्नप्रदीपवलयाय नमः
३ मणिमयमहासिंहासनाय नमः
३ ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः
३ विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः
३ रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः
३ ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः
३ सदाशिवमयैकमञ्चफलकायनमः
३ हंसतूतिकातल्पाय नमः
३ हंसतूलिकामहोपधानाय ,,
३ कौसुम्भास्तरणाय नमः
३ महावितानकाय नमः
३ महामायायवनिकायै नमः

इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदखिलं भावयन्कुसुमाक्षतैरभ्यर्चयेत्।

दीपपूजा

स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन्निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य।।

घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः।।

(दक्षवामभागौ देव्या एव)

ऐं ह्रीं श्रीं दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा।।

(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्)।।

(मूलेन चक्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्ष—कोणेषु पुष्पाञ्जलीन्दद्यात्)।।

॥ भूतशुद्धिः॥

यथा– सुषुम्ना वर्त्मना वायुमाकृष्य 'हु' बीजेन मूलाधारस्थपद्मे त्रिकोणस्थितज्योतिर्मयलिङ्गं परिवेष्ट्य स्थितां सार्धत्रिवलयां कुण्डलिनीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परःशतसुधामयूखशीतलां तेजस्वरूपामुत्थाप्य 'जीवशिवं परमशिवे संयोजयामि स्वाहा' इति मन्त्रेण दीपकलिकाकारं हृदिस्थं जीवं कुण्डलिनीमुखेन ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा परमशिवेनैकीभूतं हंसः सोऽहमिति भावयन् वायुमिडया रेचयेत्।

ततो वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषमङ्गुष्ठपरिमाणकं विप्रहत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीयुक्तं तत्संयोगिपरद्वन्द्वमुपपातकरोमकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं विचिन्तयेत्।

ततो ''यं यं'' इति वायुबीजं स्मरन् वायुं पिङ्गलयापूर्यैनं शोषयेत्। ततो ''रं रं'' इति वह्निबीजेन पूरकापेक्षया द्विगुणितकालं कुम्भकं विधाय पापपुरुषं 'यं' इति वायुबीजं ततोऽप्यधिककालं जपित्वेडया तद्भस्म रेचकेन बहिर्निष्कासयेत्। ब्रह्मरन्ध्रगते चन्द्रमण्डलेऽमृतवर्षिणीं भवानीं भूमिशुद्ध्यर्थं भावयेत्। ततस्तन्मौलिनिःस्यन्दसुधाकल्लोलवृष्टिभिश्चिन्तयेन्मनसाऽऽत्मानम्। **इयं भूमिशुद्धिः।**

ततश्च स्वशिरसि कामेश्वरीकामेश्वरयोः रक्तशुक्लचरणन्यासं भावयित्वा तदमृतक्षरणेन सबाह्याभ्यन्तरमात्मानं भावयेदिति भूतशुद्धिः।

अथ केचिद्वदन्ति—मातृकाःप्रणवं भूतानि च ब्रह्मरन्ध्रे प्रविलाप्य सच्चिन्मयो भूत्वा पापपुरुषं चिन्तयेत्। पापपुरुषोत्थं भस्म 'वं' इति सुधाबीजेन सम्प्लावयेत्। लं लं इति भूबीजेन तद्भस्म कनकाण्डवद् घनीभावमापाद्य विशुद्धमुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं तत्स्मरेत्। आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत्। ततोऽखण्डं ब्रह्म, तस्मात्तत्प्रेरकः पुरुषः, ततः प्रकृतिः, प्रकृतेर्महान्, ततोऽहंकारः, ततोऽहं त्रिगुणात्मकः, ततः आकाशः, आकाशाद्वायुः, वायोस्तेजः, तेजसो जलम्, जलात्पृथ्वी, पृथ्व्या ओषधयः, ओषधीभ्योऽन्नम्,

अन्नाद्रेतः, रेतसः पुरुषः, पुरुषोऽन्नरसमयः हंसः सोऽहमितिकुण्डलिनीं जीवमादाय परसङ्गात्सुधामयीं संस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधारगतां स्मरेदिति।

वयन्तु— पापपुरुषोत्थभस्मनस्सकाशादप्रामाणिकतमोमहदाद्युत्पत्त्यपेक्षया पापपुरुषदाहोत्थं भस्म पार्थिवप्रपञ्चेन साकं पृथिव्यां प्रविलीयते, पृथिव्यादिकं क्रमेण ब्रह्मणि प्रविलीयते, ततस्तमोमहदादीनामुत्पत्तिरिति युक्तं पश्यामः, अत्र श्रुतिस्मृतिप्रमाणबहुलस्योपलब्धेः।

मन्त्रमहार्णवरीत्या तु—स्वशरीरयुतं पापं 'रं' इति वह्निबीजेन कुम्भके दहेत्, ततो रेचके स्वशरीरात् पापोत्थं भस्म बहिर्निष्कासयेत्। ततो देहोत्थं भस्म 'वं' इति सुधाबीजेन सम्प्लाव्य 'लं' बीजेन घनीभूतं पिण्डं कृत्वा कनकाण्डवद्भावयेत्। ततो मूर्धादिनखान्ताः देहावयवाः मनसा रचनीया इति।

वस्तुस्तु देहोत्थभस्मपिण्डं पृथिव्यां पृथिव्यादिकं सर्वं जगद् ब्रह्मणि विलाप्य ततो महदादिक्रमेण पञ्च भूतानि समुत्पाद्य ततो दिव्यदेहं रचयेदित्येव शोभनम्। अत एवेडया लं वं रं यं हं इति पञ्च भूतबीजानि स्मरन् हंसः सोऽहमिति च स्मरन् उपसंहारक्रमेण मातृका भूतानि प्रणवे ब्रह्मणि विलापयेत्। तद्यथा—सकारं हकारे, हकारं सकारे, सकारं षकारे, षकारं शकारे, शकारं वकारे, वकारम् अःकारे, अःकारं अंकारे, अंकारं अकारे अकारं ब्रह्मरन्ध्रे प्रणवात्मके ब्रह्मणि प्रविलापयेत्।

भूतोपसंहारः

पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं लं बीजाढ्यं स्वर्णवर्णं स्मरेदवनिमण्डलम्। जान्वोरुपरि नाभिपर्यन्तं चन्द्रार्धनिभं पद्मद्वयाकृति वं बीजयुक्तं श्वेताभं मं सोममण्डलं स्मरेत्। नाभेर्हृदिपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकासनं रं बीजेन युतं रक्तं स्मरेत् पावकमण्डलम्। हृदो भ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षट्बिन्दुलाञ्छितं यं बीजयुक्तं धूम्राभं वायव्यं मण्डलं स्मरेत्। आब्रह्मरन्ध्रं भ्रूमध्याद्वृत्तं स्वच्छं मनोहरं हं बीजयुक्तमाकाशमण्डलञ्च विचिन्तयेत्। एवं भूतानि विचिन्त्य प्रत्येकं स्वकारणे प्रविलापयेत्—भुवं जले, जलं वह्नौ, वह्निं वायौ, वायुं

नभसि, अमुम् अहङ्कारे, महत्तत्वेऽप्यहङकृतं, महान्तं प्रकृतौ, मायामात्मनि च प्रविलापयेत्।

पुनश्च वमित्यमृतबीजेनेडया वायुमापूर्य तस्मादेव ब्रह्मणस्तमोमहदादि-क्रमेण भूतान्युत्पाद्य तैर्दिव्यमुपासनोपयोगि देहमुत्पादयेत्। तथा हि— ब्रह्मणोऽव्यक्तं, ततो महान्, महतोऽहंकार:, तत आकाश:, ततो वायु:, वायोरग्नि:, अग्नेराप:, ततो भू: इति दिव्यै: पञ्चभूतैर्दिव्यभावनया दिव्यदेहोत्पत्तिं भावयेत्। तत: कुण्डलिनीं ब्रह्मरन्ध्रादवतार्य हृदयाम्भोजे जीवं निधाय मूलाधारस्थितां कुण्डलिनी विभावयेदिति **भूतशुद्धि:**।

आत्मप्राणप्रतिष्ठा

(अथ हृदि हस्तं दत्वा) ॐ आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि, ॐ आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षु:श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ततो मम गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पञ्चदशामुकमन्त्रावृत्ती: करिष्ये (इति सङ्कल्प्य) पञ्चदशवारं प्रणवं स्वेष्टं मन्त्रं वा आवर्तयेत्।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जै:
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथगुणमप्यङ्कुशं पञ्चवाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्ति: परा न:।।

(इति प्राणप्रतिष्ठा)

(नित्योत्सवरीत्या भूतशुद्धि:) पाञ्चभौतिकं सङ्कोचशरीरमेव यमिति वायुबीजेन शोषितं विभाव्य, रं बीजेन प्लुष्टं भस्माकृतं विभाव्य, वमित्यमृतबीजेन तद्भस्म सहस्रारेन्दुमण्डलविगलदमृतरसेन सिक्तं विभाव्य लमिति भूबीजेन तद्भस्मना शाम्भवं दिव्यं शरीरमुत्पन्नं विभाव्य हंस: सोऽहम् इति शिवपदाज्जीवमवतार्य मूलाधारे स्थापितं भावयेत्। तस्मिन्नेव आं सोहमिति त्रि:पठित्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

मूलेन षोडशधा दशधा त्रिधा वा प्राणानायच्छेत्।

'ऐं ह्रीं श्रीं' अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः।
ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इत्युच्चार्य युगपत्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रय-करास्फोटनत्रय-क्रूरदृष्ट्यवलोकन-तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्। अथ 'नमः' इत्युङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीदेवीरूपं भावयन्नात्मानं स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं विदधीत।

।। मातृकान्यासः।।

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्रीमातृकासरस्वती देवतायैः नमः हृदि, हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये, स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः, बिन्दुभ्यःकीलकेभ्यो नमः नाभौ, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः करसम्पुटे।।

सर्वमातृकया सर्वाङ्गे अञ्जलिना त्रिर्व्यापकं कुर्यात्।।

६	अं कं खं गं घं ङं आं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
६	इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
६	उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
६	एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
६	ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रयाय वौषट्
६	अंयंरंलंवंशंषंहंळंक्षंअः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

एवं हृदयादिन्यासः। **भूर्भुवस्स्वरोम् इति दिग्बन्धः।।**

ध्यानम्

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि।।

लमित्यादि पञ्चपूजां कृत्वा।

मातृका: त्रितारीबालापूर्विका: स्वाङ्गेषु न्यसेत्। तद्यथा (केवलं त्रितारी वा)

अन्तर्मातृका

६ अं नम:, आं नम: + + अ: नम:।।
कण्ठे विशुद्धिचक्रे षोडशदलकमले।।
६ कं नम:, खं नम: + + ठं नम:।।
हृदये अनाहते द्वादशदलकमले।।
६ डं नम:, ढं नम: + + फं नम:।।
नाभौ मणिपूरे दशदलकमले।।
६ बं नम:, भं नम: + + लं नम:।।
लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने षड्दलकमले।।
६ वं नम:, शं नम: षं सं नम:।।
गुदोपरि मूलाधारे चतुर्दलकमले।।
६ हं नम:, क्षं नम:।। भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले।।
६ अं नम:, आं नम: + + क्षं नम:।।
(५० वर्णा:) मूर्ध्नि सहस्रारे।।

।। बहिर्मातृका ।।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ:
अं नम: (शिरसि)
६ आं नम: (मुखवृत्ते)
६ इं नम: (दक्षनेत्रे)
६ ईं नम: (वामनेत्रे)
६ उं नम: (दक्षकर्णे)
६ ऊं नम: (वामकर्णे)
६ ऋं नम: (दक्षनासापुटे)
६ ॠं नम: (वामनासापुटे)
६ ऌं नम: (दक्षकपोले)
६ ॡं नम: (वामकपोले)
६ एं नम: (ऊर्ध्वोष्ठे)
६ ऐं नम: (अधरोष्ठे)
६ ओं नम: (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ)
६ औं नम: (अधोदन्तपंक्तौ)
६ अं नम: (जिह्वाग्रे)
६ अ: नम: (कण्ठे)
६ कं नम: (दक्षबाहुमूले)

६ खं नमः (दक्षकूर्परे)
६ गं नमः (दक्षमणिबन्धे)
६ घं नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले)
६ ङं नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
६ चं नमः (वामबाहुमूले)
६ छं नमः (वामकूर्परे)
६ जं नमः (वाममणिबन्धे)
६ झं नमः (वामकराङ्गुलिमूले)
६ ञं नमः (वामकराङ्गुल्यग्रे)
६ टं नमः (दक्षोरुमूले)
६ ठं नमः (दक्षजानुनि)
६ डं नमः (दक्षगुल्फे)
६ ढं नमः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
६ णं नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)

६ तं नमः (वामोरुमूले)
६ थं नमः (वामजानुनि)
६ दं नमः (वामगुल्फे)
६ धंनमः(वामपादाङ्गुलिमूले)
६ नं नमः(वामपादाङ्गुल्यग्रे)
६ पं नमः (दक्षपार्श्वे)
६ फं नमः (वामपार्श्वे)
६ बं नमः (पृष्ठे)
६ भं नमः (नाभौ)
६ मं नमः (जठरे)
६ यं नमः (हृदये)
६ रं नमः (दक्षकक्षे)
६ लं नमः (गलपृष्ठे)
६ वं नमः (वामकक्षे)

६ शं नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं)
६ षं नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं)
६ सं नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं)
६ हं नमः (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं)
६ ळं नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)
६ क्षं नमः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं)

॥ करशुद्धिन्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः(दक्षकरतले)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ अं नमः (वामकरतले)

३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ अं नमः (मध्यमयोः)
३ आं नमः (अनामिकायोः)

३ सौः नमः (कनिष्ठिकयोः)	३ आं नमः (तर्जन्योः)
३ अं नमः (अङ्गुष्ठयोः)	३ सौः नमः(करतलकरपृष्ठयोः)

आत्मरक्षान्यासः

३ ऐंक्लींसौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष (इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात्)।।

बालाषडङ्गन्यासः

३ ऐं हृदयाय नमः	३ ऐं कवचाय हुं
३ क्लीं शिरसे स्वाहा	३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
३ सौः शिखायै वषट्	३ सौः अस्त्राय फट्

चतुरासनन्यासः

३ ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः (पादयोः)
३ हैं ह्क्लीं ह्सौः श्रीचक्रासनाय नमः (जान्वोः)
३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः (ऊरुमूले)
३ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः (मूलाधारे)

वाग्देवतान्यासः

३ अं आं + + अः ब्लूँ वशिनीवाग्देवतायै नमः (शिरसि)
३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (ललाटे)
३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायैनमः (भ्रूमध्ये)
३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (कण्ठे)
३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (हृदये)
३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (नाभौ)
३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (गुह्ये)
३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः (मूलाधारे)

।। बहिश्चक्रन्यासः।।

३ अं आं सौः चतुरस्त्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (पादयोः)

३ ऐं क्लीं सौ: षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षि– ण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नम: (जान्वो:)

३ ह्रीं क्लीं सौ: अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमा- द्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नम: (ऊरुमूलयो:)

३ हैं ह्क्लीं ह्सौ: चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षो- भिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नम: (नाभौ)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौ: बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धि- प्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नम: (हृदये)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदश- शक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नम: (कण्ठे)

३. ह्रीं श्रीं सौं: अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहित— रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नम: (मुखे)

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौ: त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रि- शक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नम: (नेत्रयो:)

३ (पञ्चदशी) बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहित परापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नम: (मूर्ध्नि)।।

अन्तश्चक्रन्यास:

३ अं आं सौ: चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टा- विंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नम: (अध: सहस्रारे)

३ ऐं क्लीं सौ: षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाक- र्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नम: (मूलाधारे)

३ ह्रीं क्लीं सौ: अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमा- द्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नम: (स्वाधिष्ठाने)

३. हैं ह्क्लीं ह्सौ: चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नम: (मणिपूरे)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौ: बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नम: (अनाहते)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नम: (विशुद्धौ)

३ ह्रीं श्रीं सौ: अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहित–रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नम: (लम्बिकाग्रे)

३ ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौ: त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नम: (आज्ञाचक्रे)

३ (पञ्चदशी) बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नम: (सहस्रारे)

पुन: आज्ञाचक्रस्य एकैकाङ्गुलोपरि देशे

अं आं सौ: नम: (बिन्दौ)
ऐं क्लीं सौ: नम: (अर्धचन्द्रे)
ह्रीं क्लीं सौ: नम: (रोधिन्यां)
हैं ह्क्लीं ह्सै: नम: (नादे)
ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौ:नम: (नादान्ते)
ह्रीं क्लीं ब्लें नम: (शक्तौ)
ह्रीं श्रीं सौ: नम: (व्यापिकायां)
ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौं नम: (समनायां)
(पञ्चदशी) नम: (उन्मनायां)
(षोडशी) नम: (ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ)

कामेश्वर्यादिन्यासः

३ ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ- नव-योनिचक्रात्म-कात्मतत्वसृष्टिकृत्यजाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति-वाग्भवात्मक - वागीश्वरीस्वरूप-ब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः(मूलाधारे)

३ क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ-दशारद्वय-चतुर्दशारचक्रात्मक-विद्यातत्व-स्थितिकृत्य-स्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्ति-कामराजात्मक- कामकलास्वरूप-महावज्रेश्वरी- विष्ण्वात्मशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (अनाहते)

३ सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ-अष्टदल-षोडशदल-चतुरस्रचक्रात्मक- शिवतत्त्व-संहारकृत्य- सुषुप्ति-दशाधिष्ठायक - क्रियाशक्ति- शक्तिबीजात्मक-परापरशक्ति-स्वरूप-महाभगमालिनी-रुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।(आज्ञायां)

३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ-समस्तचक्रात्मक-सपरिवार-परमतत्व-सृष्टिस्थिति-संहारकृत्य-तुरीयदशाधिष्ठायकेच्छा-ज्ञानक्रिया-शान्ताशक्तिवाग्भव-कामराजशक्तिबीजात्मक-परमशक्तिस्वरूप-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपर-ब्रह्मात्म-शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (ब्रह्मरन्ध्रे)

मूलविद्यान्यासः

३	कं	नमः	(शिरसि)	३	हं	नमः	(मुखे)
३	एं	नमः	(मूलाधारे)	३	लं	नमः	(दक्षभुजे)
३	ईं	नमः	(हृदि)	३	ह्रीं	नमः	(वामभुजे)
३	लं	नमः	(दक्षनेत्रे)	३	सं	नमः	(पृष्ठे)
३	ह्रीं	नमः	(वामनेत्रे)	३	कं	नमः	(दक्षजानुनि)
३	हं	नमः	(भ्रूमध्ये)	३	लं	नमः	(वामजानुनि)
३	सं	नमः	(दक्षश्रोत्रे)	३	ह्रीं	नमः	(नाभौ)
३	कं	नमः	(वामश्रोत्रे)				

अथ ऋष्यादिषडङ्गन्यासं यथोपदेशं कुर्यात्।।

षोडश्युपासकानां विशेषन्यासाः

।। श्रीषोडशाक्षरीन्यासाः।।

३ 'मूलं' नमः। दक्षमध्यमानामिकाभ्यां शिरसि न्यसेत्।
तत्र तां दीपाभां स्रवत्सुधारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा—

३ 'मूलं' नमः महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामि।
(सौभाग्यदण्डिन्या मुद्रयावामकर्णसंवेष्टनपूर्वकं आमस्तकचरणं वामाङ्गे न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः मम शत्रून्निगृह्णामि। (रिपुजिह्वाग्रया मुद्रया वामपादाधो न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः त्रैलोक्यस्याहं कर्ता। (त्रिखण्डया मुद्रया फाले न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया गलोर्ध्वमामस्तकं न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया मस्तकात् पादपर्यन्तं पादादामस्तकञ्च न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः। (योनिमुद्रया मुखे न्यसेत्)।।

३ 'मूलं' नमः। (योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत्)।।

।। सम्मोहनन्यासः।।

३ 'मूलं'। मूलविद्यां स्मृत्वा तत्प्रभया जगदरुणं विभावयन् अनामिकां मूर्ध्नि त्रिः परिभ्राम्य—

३ 'मूलं'। (ब्रह्मरन्ध्रे अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत्)

३ 'मूलं'। (मणिबन्धद्वये) ,,

३ 'मूलं'। (फाले) ,,

३ 'मूलं'। (शक्तितिलकं धारयेत्)।।

(महाषोडशीदीक्षितानामत्राधिकारः)

श्रीमहाषोडशी—अक्षरन्यासः—

संहारन्यासः

अथ त्रितारीनमस्सम्पुटितान् मूलविद्याषोडशार्णान् क्रमेण पादयोः जङ्घयोः जान्वोः कटिभागद्वये पृष्ठे लिङ्गे नाभौ पार्श्वयोः स्तनयोरंसयोः कर्णयोः मूर्ध्नि मुखे नेत्रयोः कर्णयुगलसन्निधौ कर्णवेष्टनयोश्च न्यसेत्। (अत्र कूटत्रयस्य वर्णत्रयत्वेन षोडशार्णत्वव्यपदेशः)। पादादिषु प्रथमं दक्षः ततो वाम इति बोध्यम्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः पादयोः, ह्रीं नमः जङ्घयोः, क्लीं नमः जान्वोः, ऐं नमः कटिभागद्वये, सौः नमः पृष्ठे, ॐ नमः लिङ्गे, ह्रीं नमः नाभौ, श्रीं नमः पार्श्वयोः, क ए ई ल ह्रीं नमः स्तनयोः, हसकहलह्रीं नमः अंसयोः, सकलह्रीं नमः कर्णयोः, सौः नमः मूर्ध्नि, ऐं नमः मुखे, क्लीं नमः नेत्रयोः, ह्रीं नमः कर्णयुगसन्निधौ, श्रीं नमः कर्णवेष्टनयोः।

सृष्टिन्यासः

पुनस्तथैव मूलविद्यार्णान् क्रमेण ब्रह्मरन्ध्रे भाले दृशोः कर्णयोः घ्राणपुटयोः गण्डयोः दन्तपंक्त्योः ऊर्ध्वाधरोष्ठयोः जिह्वायां चोरकूपे पृष्ठे सर्वाङ्गे हृदि स्तनयोरुदरे लिङ्गे च न्यस्य मूलेन व्यापकं कुर्यात्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं, श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे, ह्रीं नमः फाले, क्लीं नमः नेत्रयोः, ऐं नमः कर्णयो, सौः नमः नासापुटयोः, ॐ नमः गण्डयोः, ह्रीं नमः, दन्तपंक्तौ, श्रीं नमः ओष्ठयोः, क ए ई ल ह्रीं नमः जिह्वायाम्, हसकहलह्रीं नमः कण्ठे, सकलह्रीं नमः पृष्ठे, सौः नमः सर्वांगे, ऐं नमः हृदि, क्लीं नमः स्तनयोः, ह्रीं नमः उदरे, श्रीं नमः लिङ्गे। ततः व्यापकम्।

स्थितिन्यासः

अथ पूर्वक्रमेणैवाङ्गुष्ठादिकनिष्ठिकान्तकराङ्गुलिषु मूर्ध्नि मुखे हृदि आनाभेः पादद्वयावधि, कण्ठादानाभि मूर्ध्नि आकण्ठं पूर्ववत्पादाङ्गुलिषु च न्यसेत्। (अत्र दक्षवामकरचरणाङ्गुलिषु द्वयोर्द्वयोरेकैकमक्षरम्)। तथाहि—

ॐ ऐंह्रींश्रीं, श्रीं नमः अङ्गुष्ठयोः, ह्रीं नमः तर्जन्योः, क्लीं नमः

मध्यमयोः, ऐं नमः अनामिकयोः, सौः नमः कनिष्ठिकयोः, ॐ नमः मूर्ध्नि, ह्रीं नमः मुखे, श्रीं नमः हृदिः, क ए ई ल ह्रीं नमः नाभौः, हसकहलह्रीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तम्, सकलह्रीं नमः मूर्धादिकण्ठान्तम्, सौः नमः पादाङ्गुष्ठयोः, ऐं नमः पादतर्जन्योः, क्लीं नमः पादमध्यमयोः, ह्रीं नमः पादानामिकयोः, श्रीं नमः पादकनिष्ठिकयोः।

एते पञ्चैव ज्ञानार्णवमते। तन्त्रान्तरेषु तु अन्येऽपि पञ्चोपलभ्यन्ते।

एते पूर्वोक्तन्यासाः कर्तव्या एव, अन्येषामकरणे न प्रत्यवायः—करणे त्वभ्युदय एव।

लघुषोढ़ान्यासः

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः, (शिरसि) गायत्र्यै छन्दसे नमः, (मुखे) गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदये) श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।
ऐं ह्रीं श्रीं, अं कं खं गं घं ङं आं ऐं - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः
ऐं ह्रीं श्रीं, इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं- तर्जनीभ्यां नमः शिरसे स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं, उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः- मध्यमाभ्यां नमः शिखायै वषट्
ऐं ह्रीं श्रीं, एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं - अनामिकाभ्यां नमः कवचाय हुम
ऐं ह्रीं श्रीं, ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्
ऐं ह्रीं श्रीं, अंयंरंलंवंशंषंसंहं ळं क्षं अः सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्रायफट्
एवमेव हृदयादिन्यासः। ध्यानम्—

उद्यत्सूर्यसहस्राभां पीनोन्नतपयोधराम्।
रक्तमाल्याम्बरालेपां रक्तभूषणभूषिताम्।।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम्।
लसन्नेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिमस्तकाम्।।
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीं पराम्।।

आयुधक्रमस्तु सपर्याप्रकरण एवोक्त इहानुसन्धेयः। इति श्रीदेवीं समष्टिरूपेण ध्यात्वा गणेशादिव्यष्टिरूपेण च ध्यायेत्।

गणेशन्यासः

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनान्।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान्॥
ते तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालङ्कारभूषिताः।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः॥

वामोर्ध्वकरमारभ्य वामाधःकरपर्यन्तं गणेशानां पाशादिध्यानम्। शक्तीनान्तु वामकरे कमलं दक्षिणे च प्रियाश्लेष इति ध्यात्वा, मातृकास्थानेषु त्रितारीमातृकापूर्वकं गणेशान् न्यसेत्। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं,	अं	श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय	नमः,	शिरसि,
३	आं	ह्रींयुक्ताय विघ्नराजाय	नमः,	मुखवृत्ते,
३	इं	तुष्टियुक्ताय विनायकाय	नमः,	दक्षनेत्रे,
३	ईं	शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय	नमः,	वामनेत्रे,
३	उं	पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते	नमः,	दक्षकर्णे,
३	ऊं	सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे	नमः,	वामकर्णे,
३	ॠं	रतियुक्ताय विघ्नराजे	नमः,	दक्षनासापुटे,
३	ऌं	कान्तियुक्ताय एकदन्ताय	नमः,	दक्षगण्डे,
३	ॡं	कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय	नमः,	वामगण्डे,
३	एं	मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय	नमः,	ऊर्ध्वोष्ठे
३	ऐं	जटायुक्ताय निरञ्जनाय	नमः,	अधरोष्ठे,
३	ओं	तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते	नमः,	ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ,
३	औं	ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय	नमः,	अधोदन्तपंक्तौ,
३	अं	नन्दायुक्ताय शङ्कुकर्णाय	नमः,	जिह्वाग्रे,
३	अः	सुरसायुक्ताय वृषध्वजाय	नमः,	कण्ठे,
३	कं	कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय	नमः,	दक्षबाहुमूले,
३	खं	सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय	नमः,	दक्षकूर्परे,

३ गं जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय नमः, दक्षमणिबन्धे,
३ घं सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः, दक्षकराङ्गुलिमूले,
३ ङं विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः, दक्षकराङ्गुल्यग्रे,
३ चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः, वामबाहुमूले,
३ छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्त्तये नमः, वामकूपरि,
३ जं मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः, वाममणिबन्धे,
३ झं विकटायुक्ताय आमोदाय नमः, वामकराङ्गुलिमूले,
३ ञं पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः, वामकराङ्गुल्यग्रे,
३ टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः, दक्षोरुमूले,
३ ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः, दक्षजानुनि,
३ डं शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः, दक्षगुल्फे,
३ ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः, दक्षपादाङ्गुलिमूले,
३ णं मानुषीयुक्ताय शूराय नमः, दक्षपादाङ्गुल्यग्रे,
३ तं मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः, वामोरुमूले,
३ थं वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः, वामजानुनि,
३ दं भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय नमः, वामगुल्फे,
३ धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः, वामपादाङ्गुलिमूले,
३ नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः, वामपादाङ्गुल्यग्रे,
२ पं धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय नमः, दक्षपार्श्वे,
(नित्याषोडशिकार्णवे द्वितुण्डाय नमः)
३ फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः, वामपार्श्वे,
३ बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः, पृष्ठे,
३ भं चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः, नाभौ,
३ मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः, जठरे,
३ यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः, हृदये,
३ रं चपलायुक्ताय जटिने नमः, दक्षस्कन्धे,

३ लं ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने नमः, गलपृष्ठे (ककुदि),
३ वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः, वामस्कन्धे,
३ शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः, हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्,
३ षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः, हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्,
३ सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः, हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्,
३ हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः, हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्,
३ ळं कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः, हृदयादिगुह्यान्तम्,
३ क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः, हृदयादिमूर्धान्तम्।

ग्रहन्यासः

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतञ्च पाण्डुरम्।
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद्रविपूर्वकान्॥
कामरूपधरान्देवान् दिव्याभरणभूषितान्।
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान्॥
शक्तयोऽपि तथा ध्येया वराभयकराम्बुजाः।
स्वस्वप्रियाङ्कनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः॥ इति ध्यात्वा

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः (हृदयाधः हृज्जठरसन्धौ)।

३ यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः (भ्रूमध्ये,)
३ कं खं गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः (नेत्रयोः,)
३ चं छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः (श्रोत्रकूपाधः,)
३ टं ठं डं ढं णं शाङ्करीयुक्ताय बृहस्पतये नमः (कण्ठे,)
३ तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः (हृदि,)
३ पं फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः (नाभौ,)
३ शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः (मुखे,)
३ ळं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः (गुदे)॥

।। नक्षत्रन्यासः।।

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणयः।
नतिपाण्योऽश्विनीपूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः।। इति ध्यात्वा,

ऐं ह्रीं श्रीं,	अं आं अश्विन्यै	नमः,	ललाटे
३	इं भरण्यै	नमः,	दक्षनेत्रे
३	इं उं ऊं कृत्तिकायै	नमः,	वामनेत्रे
३	ऋं ॠं लृं ॡं रोहिण्यै	नमः,	दक्षकर्णे
३	एं मृगशिरसे	नमः,	वामकर्णे
३	ऐं आर्द्रायै	नमः,	दक्षनासापुटे
३	ओं औं पुनर्वसवे	नमः,	वामनासापुटे
३	कं पुष्याय	नमः,	दक्षस्कन्धे
३	खं गं आश्लेषायै	नमः,	कण्ठे
३	घं ङं मघायै	नमः,	वामस्कन्धे
३	चं पूर्वाफाल्गुन्यै	नमः,	पृष्ठे
३	छं जं उत्तराफाल्गुन्यै	नमः,	दक्षकूर्परे
३	झं ञं हस्ताय	नमः,	वामकूर्परे
३	टं ठं चित्रायै	नमः,	दक्षमणिबन्धे
३	डं स्वात्यै	नमः,	वाममणिबन्धे
३	ढं णं विशाखायै	नमः,	दक्षहस्ते
३	तं थं दं अनुराधायै	नमः,	वामहस्ते
३	धं ज्येष्ठायै	नमः,	नाभौ
३	नं पं फं मूलाय	नमः,	कटिबन्धे
३	बं पूर्वाषाढायै	नमः,	दक्षोरौ
३	भं उत्तराषाढायै	नमः,	वामोरौ
३	मं श्रवणाय	नमः,	दक्षजानुनि
३	यं रं धनिष्ठायै	नमः,	वामजानुनि

३ लं शततारकायै नमः, दक्षजङ्घायाम्
३ वं शं पूर्वभाद्रपदायै नमः, वामजङ्घायाम्
३ षं सं हं उत्तरभाद्रपदायै नमः, दक्षपादे
३ ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः, वामपादे।

योगिनीन्यासः

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णां त्रिणेत्रां
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसन्धारयन्तीम्।
वक्त्रेणैकेन युक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवन्द्याम्॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, डां डीं ड म ल व र यूं डाकिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः मां रक्ष रक्ष त्वगात्मानं नमः'

(इति मन्त्रेण कण्ठस्थषोडशदलविशुद्धिकमलकर्णिकायां डाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पुरोभागादिप्रादक्षिण्येन तदावरणशक्तीः न्यसेत्।) यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, अं अमृतायै नमः, आं आकर्षिण्यै नमः, इं इन्द्राण्यै नमः, ईं ईशान्यै नमः, उं उमायै नमः, ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः, ऋं ऋद्धिदायै नमः ॠं ॠकारायै नमः, ऌं ऌकारायै नमः, ॡं ॡकारायै नमः, एं एकपदायै नमः, ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः, ओं ओङ्कारायै नमः, औं औषध्यै नमः, अं अम्बिकायै नमः, अः अक्षरायै नमः, इति। ततो ध्यानम्—

हृत्पद्मे भानुपत्रद्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णाम्
अक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।
रक्तस्थां कालरात्रिप्रभृतिपरिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्तां
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां राकिणीं भावयामः॥ इति ध्यात्वा,

ऐं ह्रीं श्रीं, रां रीं र म ल व र यूं राकिण्यै नमः,
ऐं ह्रीं श्रीं, कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगात्मानं नमः' इति (हृदयस्थितद्वादशदलानाहतनलिनकर्णिकायां राकिणीं न्यस्य तद्दलेषु

प्राग्वत् तदावृतिशक्तीर्न्यसेत्।) यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, कं कालरात्र्यै नमः, खं खण्डितायै नमः, गं गायत्र्यै नमः, घं घण्टाकर्षिण्यै नमः, ङं ङार्णायै नमः, चं चण्डायै नमः, छं छायायै नमः, जं जयायै नमः, झं झङ्कारिण्यै नमः, ञं ज्ञानरूपायै नमः, टं टङ्कहस्तायै नमः, ठं ठङ्कारिण्यै नमः। इति।

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां
शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्।
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठां
गौड़ान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः॥

इति ध्वात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, लां लीं ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं, डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष मांसात्मानं नमः' इति (नाभिगतदशदलमणिपूरकसरोजकर्णिकायां लाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तत्परिवारशक्तीर्न्यसेत्।) यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, डं डामर्यै नमः, ढं ढङ्कारिण्यै नमः, णं णार्णायै नमः, तं तामस्यै नमः, थं स्थाण्व्यै नमः, दं दाक्षायण्यै नमः, धं धात्र्यै नमः, नं नार्यै नमः, पं पार्वत्यै नमः, फं फट्कारिण्यै नमः,। तदनु—

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्रां
हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाङ्कुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीमुख्ययुक्तां
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां काकिनीं भावयामः॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं कां कीं क म ल व र यूं काकिन्यै नमः,

ऐं ह्रीं श्रीं बं भं मं यं रं लं मां रक्ष रक्ष मेद आत्मानं नमः' इति (गुह्यस्थानगतषड्दलस्वाधिष्ठानसरसिजकर्णिकायां काकिनीं न्यस्य तद्दलेषु तदावरणशक्तीः प्राग्वन्न्यसेत्।) यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, बं बन्धिन्यै नमः, भं भद्रकाल्यै नमः, मं महामायायै नमः, यं यशस्विन्यै नमः, रं रक्तायै नमः, लं लम्बोष्ठ्यै नमः,। तत्रः—

मूलाधारस्य पत्रे श्रुतिदललसिते पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां
धूम्राभामस्थिसस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां
मुद्गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः।। इति ध्यात्वा,
ऐं ह्रीं श्रीं, सां सीं स म ल व र यूं साकिन्यै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं, वं शं षं सं मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मानं नमः' इति (पायूपस्थमध्यगतचतुर्दलमूलाधार– कमलकर्णिकायां साकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तदावृतिशक्तीर्न्यसेत्।) यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं, वं वरदायै नमः, शं श्रियै नमः, षं षण्डायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः। अथ–

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै–
र्बिभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालम्।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिणयनलसितां हंसवत्यादियुक्तां
हारिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः।। इति ध्यात्वा।।

ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं ह म ल व र यूं हाकिन्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं हं क्षं मां रक्ष–रक्ष मज्जात्मानं नमः' इति भ्रूमध्यगतद्विदलाज्ञाकमलकर्णिकायां हाकिनीं न्यस्य तद्दक्षवामदलयोः क्रमेण–

ऐं ह्रीं श्रीं, हं हंसवत्यै नमः, क्षं क्षमावत्यै नमः, इति तच्छक्तिद्वयं न्यसेत्। तदनु–

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थां
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम्।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीं
सर्वान्नासक्तचितां परशिवरसिकां याकिनीं भावयामः।। इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, यां यीं य म ल व र यूं याकिन्यै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं ....क्षं (५१) मां रक्ष–रक्ष शुक्रात्मानं नमः' इति (ब्रह्मरन्ध्र- गतसहस्रदलसरसिजकर्णिकायां याकिनीं न्यस्य तद्दलेषु प्रतिविंशतिदलं तदावरणशक्तीः अमृताद्याः क्षमावत्यन्ताः पूर्वोक्ताः प्राग्वन्न्यसेत्।)

राशिन्यासः

रक्तश्वेतहरित्पाण्डुचित्रकृष्णपिशङ्गकान्।

कपिशबभ्रुकिर्मीरकृष्णधूम्रान् क्रमात्स्मरेत्॥

राशीनिति शेषः। इति ध्यात्वा,

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं इं ईं मेषाय नमः, दक्षिणपादे
३ उं ऊं वृषाय नमः, लिङ्गदक्षभागे
३ ऋं ॠं लृं ॡं मिथुनाय नमः, दक्षकुक्षौ
३ एं ऐं कर्काय नमः, हृदयदक्षभागे
३ ओं औं सिंहाय नमः, दक्षबाहुमूले
३ अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः, दक्षशिरोभागे
३ कं खं गं घं ङं तुलायै नमः, वामशिरोभागे
३ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः, वामबाहुमूले
३ टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः, हृदयवामभागे
३ तं थं दं धं नं मकराय नमः, वामकुक्षौ
३ पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः, लिङ्गवामभागे
३ यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः, वामपादे।

पीठन्यासः

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात्।

पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः॥ इति भावयित्वा (मातृकाभिस्समं पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत्।) यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं, अं कामरूपाय नमः, शिरसि
३ आं वाराणस्यै नमः, मुखवृत्ते
३ इं नेपालाय नमः, दक्षनेत्रे
३ ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः, वामनेत्रे
३ उं पुरस्थितकाश्मीराय नमः, दक्षकर्णे

३	ऊं	कान्यकुब्जाय नमः,	वामकर्णे
३	ऋं	पूर्णशैलाय नमः,	दक्षनासापुटे
३	ॠं	अर्बुदाचलाय नमः,	वामनासापुटे
३	ऌं	आम्रातकेश्वराय नमः,	दक्षगण्डे
३	ॡं	एकाम्राय नमः,	वामगण्डे
३	एं	त्रिस्रोतसे नमः,	ऊर्ध्वोष्ठे
३	ऐं	कामकोटये नमः,	अधरोष्ठे
३	ओं	कैलासाय नमः,	ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ
३	औं	भृगुनगराय नमः,	अधोदन्तपंक्तौ
३	अं	केदाराय नमः,	जिह्वाग्रे
३	अः	चन्द्रपुष्करिण्यै नमः,	कण्ठे
३	कं	श्रीपुराय नमः,	दक्षबाहुमूले
३	खं	ओङ्काराय नमः,	दक्षकूर्परे
३	गं	जालन्धराय नमः,	दक्षमणिबन्धे
३	घं	मालवाय नमः,	दक्षकराङ्गुलिमूले
३	ङं	कुलान्तकाय नमः,	दक्षकराङ्गुल्यग्रे
३	चं	देवीकोटाय नमः,	वामबाहुमूले
३	छं	गोकर्णाय नमः,	वामकूर्परे
३	जं	मारुतेश्वराय नमः,	वाममणिबन्धे
३	झं	अट्टहासाय नमः,	वामकराङ्गुलिमूले
३	ञं	वैराजायै नमः,	वामकरागुल्यग्रे
३	टं	राजगेहाय नमः,	दक्षोरूमूले
३	ठं	महापथाय नमः,	दक्षजानुनि
३	डं	कोलापुराय नमः,	दक्षगुल्फे
३	ढं	एलापुराय नमः,	दक्षपादाङ्गुलिमूले
३	णं	कालेश्वराय नमः,	दक्षपादङ्गुल्यग्रे
३	तं	जयन्तिकायै नमः,	वामोरुमूले

३	थं	उज्जयिन्यै नमः,	वामजानुनि
३	दं	चित्रायै नमः,	वामगुल्फे
३	धं	क्षीरिकायै नमः,	वामपादाङ्गुलिमूले
३	नं	हस्तिनापुराय नमः,	वामपादाङ्गुल्यग्रे
३	पं	उड्डीशाय नमः,	दक्षपार्श्वे
३	फं	प्रयागाय नमः,	वामपार्श्वे
३	बं	षष्ठीशाय नमः,	पृष्ठे
३	भं	मायापुर्यै नमः,	नाभौ
३	मं	जलेशाय नमः,	जठरे
३	यं	मलयाय नमः,	हृदये
३	रं	श्रीशैलाय नमः,	दक्षस्कन्धे
३	लं	मेरवे नमः,	गलपृष्ठे
३	वं	गिरिवराय नमः,	वामस्कन्धे
३	शं	महेन्द्राय नमः,	हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्
३	षं	वामनाय नमः,	हृदयादिदवामकराङ्गुल्यन्तम्
३	सं	हिरण्यपुराय नमः,	हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्
३	हं	महालक्ष्मीपुराय नमः,	हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्
३	ळं	औड्याणाय नमः,	हृदयादिगुह्यान्तम्
३	क्षं	छायाच्छत्राय नमः,	हृदयादिमूर्धान्तम्

(इति षडवयवकः षोढान्यासस्समाप्तः)

अथ श्रीचक्रन्यासः

अस्य श्री श्रीचक्रन्यासस्येत्यनन्तरं जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन्यस्याह्निकप्रकरणोक्तवद् ध्यात्वा श्रीदेव्या उपचारमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्वा,

शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम्।
त्वगाद्याकारनिर्मुक्तं ज्वलत्कालाग्निसन्निभम्।। इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्य-परापरातिरहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः। इति सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्य।

ऐं ह्रीं श्रीं,	गं	गणपतये नमः,	दक्षोरौ
३	क्षं	क्षेत्रपालाय नमः,	दक्षांसे
३	यां	योगिनीभ्यो नमः,	वामांसे
३	बं	बटुकाय नमः,	वामोरौ
३	लं	इन्द्राय नमः,	पादाङ्गुष्ठद्वयाग्रे
३	रं	अग्नये नमः,	दक्षजानुनि
३	टं	यमाय नमः,	दक्षपार्श्वे
३	क्षं	निर्ऋतये नमः,	दक्षांसे
३	वं	वरुणाय नमः,	मूर्ध्नि
३	यं	वायवे नमः,	वामांसे
३	सं	सोमाय नमः,	वामपार्श्वे
३	हं	ईशानाय नमः,	वामजानुनि
३	हंसः	ब्रह्मणे नमः,	मूर्ध्नि
३	अं	अनन्ताय नमः,	मूलाधारे।

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य) ततः **ऐं ह्रीं श्रीं आद्यचतुरस्ररेखायै नमः**,– इति (दक्षांसपृष्ठादिवक्ष्यमाणेषु स्थानेष्वञ्जलिना व्यापकं न्यस्य)

ऐं ह्रीं श्रीं	अणिमासिद्ध्यै नमः,	दक्षांसपृष्ठे
३	लघिमासिद्ध्यै नमः,	दक्षपाण्यङ्गुल्यग्रेषु
३	महिमासिद्ध्यै नमः,	दक्षोरुसन्धौ
३	ईशित्वसिद्ध्यै नमः,	दक्षपादाङ्गुल्यग्रेषु
३	वशित्वसिद्ध्यै नमः,	वामपादाङ्गुल्यग्रेषु
३	प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः,	वामोरुसन्धौ

३ भुक्तिसिद्ध्यै नमः, वामपाण्यङ्गुल्यग्रेषु
३ इच्छासिद्ध्यै नमः, वामांसपृष्ठे
३ प्राप्तिसिद्ध्यै नमः, शिखामूले
३ सर्वकामसिद्ध्यै नमः, शिरःपृष्ठे।

ऐं ह्रीं श्रीं, चतुरस्रामध्यरेखायै नमः—इति (वक्ष्यमाणाङ्गेषु व्यापकं न्यस्य),

ऐं ह्रीं श्रीं, ब्राह्म्यै नमः, पादाङ्गुष्ठद्वये
३ माहेश्वर्यै नमः, दक्षपार्श्वे
३ कौमार्यै नमः, मूर्ध्नि
३ वैष्णव्यै नमः, वामपार्श्वे
३ वाराह्यै नमः, वामजानुनि
३ इन्द्राण्यै नमः, दक्षजानुनि
३ चामुण्डायै नमः,दक्षांसे
३ महालक्ष्म्यै नमः,वामांसे

ऐं ह्रीं श्रीं, चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः— इति (वक्ष्यमाणाङ्गेषु व्यापकं न्यस्य)

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः, पादाङ्गुष्ठद्वये
३ सर्वविद्राविण्यै नमः, दक्षपार्श्वे
३ सर्वाकर्षिण्यै नमः, मूर्ध्नि
३ सर्ववशङ्कर्यै नमः, वामपार्श्वे
३ सर्वोन्मादिन्यै नमः, वामजानुनि
३ सर्वमहाङ्कुशायै नमः, दक्षजानुनि
३ सर्वखेचर्यै नमः, दक्षांसे
३ सर्वबीजायै नमः, वामांसे
३ सर्वयोनये नमः, द्वादशान्ते
३ सर्वत्रिखण्डायै नमः, पादाङ्गुष्ठद्वये

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः, (हृदये)।

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयस्सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदि चक्रसमर्पणं न्यस्य,

सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः,(इति व्यापकं न्यस्य)

३ कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः, दक्षकर्णपृष्ठे
३ बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः, दक्षांसे
३ अहङ्काराकर्षिण्यै नमः, दक्षकूर्परे
३ शब्दाकर्षिण्यै नमः, दक्षकरपृष्ठे, हस्ततलपृष्ठयोः
३ स्पर्शाकर्षिण्यै नमः, दक्षोरौ, दक्षस्फिजि,
३ रूपाकर्षिण्यै नमः, दक्षजानुनि
३ रसाकर्षिण्यै नमः, दक्षगुल्फे,
३ गन्धाकर्षिण्यै नमः, दक्षपादतले, दक्षप्रपदे,
३ चित्ताकर्षिण्यै नमः, वामपादतले, वामप्रपदे,
३ धैर्याकर्षिण्यै नमः, वामगुल्फे
३ स्मृत्याकर्षिण्यै नमः, वामजानुनि
३ नामाकर्षिण्यै नमः, वामोरौ, वामस्फिजि,
३ बीजाकर्षिण्यै नमः, वामकरतलपृष्ठयोः
३ आत्माकर्षिण्यै नमः, वामकूर्परे
३ अमृताकर्षिण्यै नमः, वामांसे,
३ शरीराकर्षिण्यै नमः, वामकर्णपृष्ठे

ऐं क्लीं सौःसर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्यै नमः, हृदये

(एताः गुप्तयोगिन्यस्सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्वत्)।

सर्वसंक्षोभणचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं क्लीं सौः,सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमायै नमः, दक्षशंखे (ललाटास्थि)
३ अनङ्गमेखलायै नमः, दक्षजत्रुणि, (बाहुमूलसन्धिः)
३ अनङ्गमदनायै नमः, दक्षोरौ,

३ अनङ्गमदनातुरायै नमः, दक्षगुल्फे,
३ अनङ्गरेखायै नमः, वामगुल्फे,
३ अनङ्गवेगिन्यै नमः, वामोरौ,
३ अनङ्गाङ्कुशायै नमः, वामजत्रुणि,
३ अनङ्गमालिन्यै नमः, वामशङ्खे,
३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यैत्रिपुरसुन्दर्यै नमः, हृदये।

एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणचक्रे समुद्राः– इत्यादि प्राग्वत्।

सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः-इति व्यापकं न्यस्य,

३ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः, ललाटमध्ये,
३ सर्वविद्राविण्यै नमः, ललाटदक्षभागे,
३ सर्वाकर्षिण्यै नमः, दक्षगण्डे,
३ सर्वाह्लादिन्यै नमः, दक्षांसे,
३ सर्वसम्मोहिन्यै नमः, दक्षपार्श्वे,
३ सर्वस्तम्भिन्यै नमः, दक्षोरौ,
३ सर्वजृम्भिण्यै नमः, दक्षजङ्घायाम्
३ सर्ववशङ्कर्यै नमः, वामजङ्घायाम्,
३ सर्वरञ्जिन्यै नमः, वामोरौ,
३ सर्वोन्मादिन्यै नमः, वामपार्श्वे
३ सर्वार्थसाधिन्यै नमः, वामांसे
३ सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः, वामगण्डे
३ सर्वमन्त्रमय्यै नमः, ललाटवामभागे
३ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः, शिरःपृष्ठे

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः, हृदये।

एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः– (इत्यादि पूर्ववत् समर्पणं न्यसेत्।)

सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः-इति व्यापकं न्यास्य

३	सर्वसिद्धिप्रदायै नमः,	दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे
३	सर्वसम्पत्प्रदायै नमः,	नासामूले, दक्षसृक्विणि
३	सर्वप्रियङ्कर्यै नमः,	वामनेत्रे, दक्षस्तने
३	सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः,	वामबाहुमूले, दक्षवृषणे
३	सर्वकामप्रदायै नमः,	वामेरुमूले, सीविन्या दक्षभागे
३	सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः,	वामजानुनि, सीविन्या वामभागे
३	सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः,	दक्षजानुनि, वामस्तने
३	सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः,	गुदे वामवृषणे
३	सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः,	दक्षोरुमूले वामसृक्विणि
३	सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः,	दक्षबाहुमूले वामनासापुटे

३ ह्सै ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रिये नमः, हृदये।

(एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यःसर्वार्थसाधके चक्रे समुद्रा, इत्यादि पूर्ववत्)।

सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः, (इति व्यापकं न्यस्य)

३	सर्वज्ञायै नमः,	दक्षनासापुटे
३	सर्वशक्त्यै नमः,	दक्षसृक्विणि (ओष्ठप्रान्ते)
३	सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः,	दक्षस्तने
३	सर्वज्ञानमय्यै नमः,	दक्षमुष्के
३	सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः,	सीविन्यां (तस्या दक्षभागे)
	(सीविनी—अण्डद्वयमध्यवर्तिनी सिरा)	
३	सर्वाधारस्वरूपायै नमः,	वाममुष्के (सिविन्या वामभागे)
३	सर्वपापहरायै नमः,	वामस्तने
३	सर्वानन्दमय्यै नमः,	वामसृक्विणि
३	सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः,	वामनासापुटे
३	सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः,	नासाग्रे

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं क्लीं व्लें सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नम:, हृदि। (एता निगर्भयोगिन्य: सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्वत्।)

सर्वरोगहरचक्रन्यास:

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं सौ: सर्वरोगहरचक्राय नम:, (इति व्यापकं न्यस्य),

३ अं............अ: (१६) ब्ल्रूं वशिनीवाग्देवतायै नम: दक्षचिबुके,

३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नम:, दक्षकण्ठे

३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नम:, हृदयदक्षभागे

३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नम:, नाभिदक्षभागे,

३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नम:, नाभिवामभागे,

३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नम:, हृदयवामभागे,

३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नम:, वामकण्ठे,

३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नम:, वामचिबुके,

३ ह्रीं श्रीं सौ: सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नम:, हृदि,

(एता: रहस्ययोगिन्य: सर्वरोगहरे चक्रे समुद्रा इत्यादि पूर्ववत्।)

आयुधन्यास:

अथ हृदि त्रिकोणं विभाव्य तत्र प्रागादिदिक्षु क्रमेणायुधानां चतुष्टयं न्यसेत्। यथा— ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स: सर्वजम्भनेभ्यो बाणेभ्यो नम:, त्रिकोणपृष्ठे,

३ धं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नम: त्रिकोणदक्षे (स्ववामे),

३ ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नम: त्रिकोणाग्रे,

३ क्रों सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशाय नम: त्रिकोणवामे (स्वदक्षभागे)

।। सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यास:।।

३ **ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्सौ: सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नम:** (इति व्यापकं न्यस्य),

३ (मूलप्रथमकूटं) कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नम:, त्रिकोणाग्रकोणे,

३ (मूलद्वितीयकूटं) पूर्णगिरिपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नम:, तद्दक्षकोणे,

३ (मूलतृतीयकूटं) जालन्धरपीठस्थायै महाभगमालिन्यै नम:, तद्वामकोणे,

ऐं ह्रीं श्रीं, (मूलं) ओड्याणपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः, तन्मध्ये।

अथ तदन्तस्सपर्याप्रकरणोक्तप्रकारेण षोडशस्वरान् विभाव्य षोडशनित्याः न्यसेत्। यथा— कामेश्वरीनित्यामन्त्रमुच्चार्य कामेश्वरीनित्यायै नमः। एवं प्रकारेणावशिष्टाश्चतुर्दशनित्या विन्यस्य मध्ये मूलमुच्चार्य षोडशीं न्यसेत्।

३ **ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः**, हृदि। एता अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्वत्

सर्वानन्दमयचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं (मूलं) सर्वानन्दमयचक्राय नमः, (इति व्यापकं न्यस्य),

३ (मूलं) श्रीललितायै नमः हृदयमध्ये,

एषा परापरतिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा न्यस्ताऽस्तु।

ऐं ह्रीं श्रीं (मूलं) सर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै श्रीललितायै नमः, (इति हृदि न्यस्य), योनिमुद्रां प्रदर्श्य मूलं जपित्वा पुनः कराङ्गन्यासं कुर्यात्।

इति नित्याषोडशिकार्णवोक्तश्रीचक्रन्यासः। पूर्वोक्तौ **षोढाचक्रन्यासौ** श्रीषोडशाक्षर्या अपि समानौ।

अथ महाषोढान्यासः

प्रपञ्चो भुवनं मूर्तिर्मन्त्रदैवतमातरः।
महाषोढाह्वयो न्यासः सर्वन्यासोत्तमोत्तमः।।

अस्य श्री महाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीमदर्धनारीश्वरो देवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोग इति।
ऋष्यादिकं स्मृत्वा मूर्धादिषु विन्यस्याङ्गन्यासं कुर्यात्।

अङ्गन्यासस्तु—अङ्गुलीदेहवक्त्रात्मकः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (६) इति षडक्षरमन्त्रपूर्वकं सर्वं न्यसेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः	हौं	ईशानाय नमः अङ्गुष्ठयोः
६	हें	तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः
६	हुं	अघोराय नमः मध्यमयोः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः	हिं	वामदेवाय नमः	अनामिकयोः
६	हं	सद्योजाताय नमः	कनिष्ठिकयोः
६	हौं	ईशानाय नमः	मूर्ध्नि
६	हें	तत्पुरुषाय नमः	मुखे
६	हुं	अघोराय नमः	हृदये
६	हिं	वामदेवाय नमः	गुह्ये
६	हं	सद्योजाताय नमः	पादयोः
६	हौं	ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः मूर्ध्नि,	
६	हें	तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे	
६	हुं	अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः दक्षकर्णे,	
६	हिं	वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः वामकर्णे,	
६	हं	सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः चोरकूपे,	

(अयं पञ्चवक्त्रन्यासः, क्रमेणाङ्गुष्ठादिपञ्चाङ्गुलीभिरेकैकाङ्गुलिनैकैकवक्त्रे न्यस्तव्यः। एवमङ्गन्यासं विधाय ततो ह्सां ह्सीं ह्सूं ह्सैं इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा वक्ष्यमाणरूपं देवं हृदये ध्यात्वा न्यसेत्।)

ओघप्रकारान्तरेण ध्यानम्—

पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे॥

प्रपञ्चन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः	अं	प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः (शिरसि)
६	आं	द्वीपरूपायै मायायै नमः (मुखवृत्ते)
६	इं	जलधिरूपायै कमलायै नमः (दक्षनेत्रे)
६	ईं	गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः (वामनेत्रे)
६	उं	पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः (दक्षकर्णे)
६	ऊं	पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः (वामकर्णे)
६	ऋं	क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः (दक्षनासापुटे)
६	ॠं	वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः (वामनासापुटे)

६	लृं	आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः	(दक्षगण्डे)
६	लॄं	गुहारूपायै मायायै नमः	(वामगण्डे)
६	एं	नदीरूपायै रमायै नमः	(उर्ध्वोष्ठे)
६	ऐं	चत्वररूपायै पद्मायै नमः	(अधरोष्ठे)
६	ओं	उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः	(उर्ध्वदन्तपंक्तौ)
६	औं	स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः	(अधोदन्तपंक्तौ)
६	अं	अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः	(जिह्वाग्रे)
६	अः	जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः	(कण्ठे)
६	कं	लवरूपायै आर्यायै नमः	(दक्षबाहुमूले)
६	खं	त्रुटिरूपायै उमायै नमः	(दक्षकूर्परे)
६	गं	कलारूपायै चण्डिकायै नमः	(दक्षमणिबन्धे)
६	घं	काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः	(दक्षकराङ्गुलिमूले)
६	ङं	निमेषरूपायै शिवायै नमः	(दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
६	चं	श्वासरूपायै अपर्णायै नमः	(वामबाहुमूले)
६	छं	घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः	(वामकूर्परे)
६	जं	मुहूर्तरूपायै सत्यै नमः	(वाममणिबन्धे)
६	झं	प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः	(वाम कराङ्गुलिमूले)
६	ञं	दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः	(वाम कराङ्गुल्यग्रे)
६	टं	सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः	(दक्षोरूमूले)
६	ठं	रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः	(दक्षजानुनि)
६	डं	तिथिरूपायै सर्वमङ्गलायै नमः	(दक्षगुल्फे)
६	ढं	वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले)
६	णं	नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
६	तं	योगरूपायै महामायायै नमः	(वामोरुमूले)
६	थं	करणरूपायै महेश्वर्यै नमः	(वामजानुनि)
६	दं	पक्षरूपायै मृडान्यै नमः	(वामगुल्फे)
६	धं	मासरूपायै इन्द्राण्यै नमः	(वामपादाङ्गुलिमूले)

६	नं	राशिरूपायै शर्वाण्यै नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रे)
६	पं	ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः	(दक्षपार्श्वे)
६	फं	अयनरूपायै काल्यै नमः	(वामपार्श्वे)
६	बं	वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः	(पृष्ठे)
६	भं	युगरूपायै गौर्यै नमः	(नाभौ)
६	मं	प्रयलरूपायै भवान्यै नमः	(जठरे)
६	यं	पञ्चभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः	(हृदये)
६	रं	पञ्चतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै नमः (दक्षकक्षे)	
६	लं	पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः (गलपृष्ठे)	
६	वं	पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः (वामकक्षे)	
६	शं	पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः (हृदयादि दक्षकराङ्गुल्यन्तं)	
६	षं	गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः (हृदयादि वामकराङ्गुल्यन्तं)	
६	सं	अन्तःकरणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः (हृदयादि दक्षपादाङ्गुल्यन्तं)	
६	हं	अवस्थाचतुष्ठयरूपायै शारदायै नमः (हृदयादि वामपादाङ्गुल्यन्तं)	
६	ळं	सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)	
६	क्षं	दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः (कट्यादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं)	

इत्येकपञ्चाशच्छक्तिमातृकास्थानेषु विन्यस्य, ततः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (अकारादिक्षकारान्तां मातृकामुच्चार्य) **सकलप्रपञ्चाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ** इति सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात्। **इति प्रपञ्चन्यासः।**

अथ भुवनन्यासः

तत्र, पादयोः— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं अतललोकनिलय-शतकोटिगुह्याद्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।।

गुल्फयोः—६ ईं उं ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरानन्तयोगिनी - मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

जङ्घयोः—६ ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलयशतकोट्यतिगुह्याचिन्त्ययोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

जान्वोः—६ ॡं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्रयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ऊर्वोः—६ ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्येच्छायोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

स्फिचोः—६ अं अः रसातललोकनिलयशतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनीमूलदेवता-
युताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

मूलाधारे—६ कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतरक्रियायोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

स्वाधिष्ठाने—६ चंछंजंझंञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

मणिपूरके—६ टंठंडंढंणं भुवर्लोकनिलयशतकोटिमहारहस्यराकिणीयोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

अनाहते—६ तंथंदंधंनं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

विशुद्धौ—६ पंफंबंभंमं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

आज्ञायां—६ यं रं लं वं जनलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ललाटे—६ शं षं सं हं तपोलोकनिलयशतकोट्यतिगुप्तहाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे— ६ ळं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनीयोगिनीमूल-देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः। (इति विन्यस्य) ६ (समस्तमातृकामुच्चार्य) सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्। **इति भुवनन्यासः।**

अथ मूर्तिन्यासः

शिरसि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः		अं	केशवायाक्षरशक्त्यै नमः।
मुखे —	६	आं	नारायणाद्यशक्त्यै नमः,
दक्षिणांसे—	६	इं	माधवायेष्टदायै नमः,
वामांसे —	६	ईं	गोविन्दायेशान्यै नमः,
दक्षपार्श्वे—	६	उं	विष्णवे उग्रायै नमः,
वामपार्श्वे—	६	ऊं	मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः,
दक्षकट्यां—	६	ऋं	त्रिविक्रमाय ऋद्धयै नमः,
वामकट्यां—	६	ॠं	वामनाय रूपिण्यै नमः,
दक्षोरौ—	६	ऌं	श्रीधराय लुप्तायै नमः,
वामोरौ—	६	ॡं	हृषीकेशाय लूनदोषायै नमः,
दक्षजानुनि—	६	एं	पद्मनाभायैकनायिकायै नमः,
वामजानुनि—	६	ऐं	दामोदरायैककारिण्यै नमः,
दक्षजङ्घायां—	६	ओं	वासुदेवायौघवत्यै नमः,
वामजङ्घायां—	६	औं	सङ्कर्षणायौर्वकामायै नमः,
दक्षपादे—	६	अं	प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै नमः,
वामपादे—	६	अः	अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः,
दक्षपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्—६		कं भं	भवाय करभद्रायै नमः,
वामपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्—६		खं बं	शर्वाय खगबलायै नमः,
दक्षपार्श्वे—	६	गं फं	हराय गरिमाफलप्रदायै नमः,
वामपार्श्वे—	६	घं पं	पशुपतये घोरपादायै नमः,
दक्षदोर्मूले—	६	ङं मं	उग्राय पंक्तिवासायै नमः,
वामदोर्मूले—	६	चं धं	महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै नमः,
कण्ठे —	६	छं दं	भीमाय छन्दोमय्यै नमः,
वदने—	६	जं थं	ईशानाय जगत्स्थानायै नमः,
दक्षकर्णे—	६	झं तं	तत्पुरुषाय झङ्कृत्यै नमः,
वामकर्णे—	६	ञं णं	अघोराय ज्ञानदायै नमः,
भाले—	६	टं ढं	सद्योजाताय टङ्कढक्कधरायै नमः,
शिरसि—	६	ठं डं	वामदेवाय ठङ्कृतिडामर्यै नमः,

मूलाधारे—	६	यं	ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः,
स्वाधिष्ठाने—	६	रं	प्रजापतये रञ्जिन्यै नमः,
मणिपूरके—	६	लं	वेधसे लक्ष्म्यै नमः,
अनाहते—	६	वं	परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः,
विशुद्धौ—	६	शं	पितामहाय शशिधरायै नमः,
आज्ञायां—	६	षं	विधात्रे षडाधारालयायै नमः,
अर्धेन्दौ—	६	सं	विरिञ्चये सर्वनायिकायै नमः,
रोधिन्यां—	६	हं	स्रष्ट्रे हसिताननायै नमः,
नादे—	६	ळं	चतुराननाय ललितायै नमः,
नादान्ते—	६	क्षं	हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः, (इति विन्यस्य),

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलतृकामुच्चार्य) सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्।)

॥ इति मूर्तिन्यासः॥

अथ मन्त्रन्यासः

मूलाधारे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं एकलक्षकोटिभेदप्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

स्वाधिष्ठाने— ६ ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेदहंसादिद्व्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

मणिपूरके— ६ ऋं ॠं ऌं त्रिलक्षकोटिभेदवन्ह्यादित्र्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

अनाहते— ६ ॡं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

विशुद्धौ— ६ ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेदसूर्यादिपञ्चाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

आज्ञायां— कं खं गं षड्लक्षकोटिभेदस्कन्दादिषडक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

बिन्दौ—६ घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेदगणपत्यादिसप्ताक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

अर्धेन्दौ— ६ छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेदवटुकाद्यष्टाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

रोधिन्यां— ६ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

नादे— ६ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेदविष्ण्वादिदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

नादान्ते— ६ तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेदरुद्राद्येकादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

शक्तौ— धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादिद्वादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

व्यापिकायां—६ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेदलक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

समनस्थाने— ६ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेदगौर्यादिचतुर्दशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

उन्मन्यां— ६ लं वं शं पञ्चदशलक्षकोटिभेददुर्गादिपञ्चदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

ध्रुवमण्डले— ६ षं सं हं ळं क्षं षोडशलक्षकोटिभेदत्रिपुरादिषोडशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(इति मन्त्रन्यासः)

अथ देवतान्यासः

दक्षपादे— ॐ ऐंह्रींश्रीं, ह्सौः स्हौः अं आं सहस्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्यम्बादेव्यै नमः।

वामपादे— ६ इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः।

दक्षगुल्फे— ६ उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः।

वामगुल्फे— ६ ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः।

दक्षजङ्घायां– ६ लृं लॄं सहस्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः।
वामजङ्घायां–६ एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः।
दक्षजानुनि– ६ ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः।
वामजानुनि–६ अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः।
दक्षोरौ– ६ कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः।
वामोरौ– ६ गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः।
दक्षोरुमूले– ६ ङं चं सहस्रकोट्यप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः।
वामोरुमूले– ६ छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः।
दशपार्श्वे– ६ झं ञं सहस्रकोटिगुह्यककुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः।
वामपार्श्वे– ६ टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः।
दक्षस्तने– ६ डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः।
वामस्तने– ६ णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः।
दक्षदोर्मूले– ६ थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्र्यम्बादेव्यै नमः।
वामदोर्मूले– ६ धं नं सहस्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः।
दक्षभुजे– ६ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः।
वामभुजे– ६ बं भं सहस्रकोटिवटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः।
दक्षांसे– ६ मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः।
वामांसे– ६ रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः।
दक्षकर्णे–६ वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वैश्वर्यम्बादेव्यै नमः।
वामकर्णे–६ षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बादेव्यै नमः।
भाले– ६ हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः।
ब्रह्मरन्ध्रे– ६ क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्।)

(इति देवतान्यासः)

अथ मातृकाभैरवन्यासः

मूलाधारे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङं अनन्तकोटिभूचरीकुलसहितायै आं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूचरकुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः।

स्वाधिष्ठाने— ६ चं छं जं झं ञं अनन्तकोटिखेचरीकुलसहितायै ईं ळां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेतालकुलसहिताय इं ळं चर्चिकनाथाय इं ळं रुरुभैरवनाथाय नमः।

मणिपूरके— ६ टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसहितायै ऊं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुलसहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवनाथाय नमः।

अनाहते— ६ तं थं दं धं नं अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसहितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहिताय ॠं सं हरसिद्धनाथाय ॠं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः।

विशुद्धौ— ६ पं फं बं भं मं अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै ॣं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै ॣं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षसकुलसहिताय ऌं षं भट्टिनाथाय ऌं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः।

आज्ञायां— ६ यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शां किलिकिलाम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुलसहितायै एं शं किलिकिलिनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नमः।

भाले— ६ शं षं सं हं अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवनाथाय नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे— ६ ळं क्षं अनन्तकोटिजलचरीकुलसहितायै अः ळां भीषणाम्बादेव्यै अः ळां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अं ळं भीषणनाथाय अं ळं संहारभैरवनाथाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (समस्तमातृकामुच्चार्य) समस्तमातृकाभैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्।)

इति मातृकाभैरवन्यासः।

अनन्तरं पूर्वोक्तैः ह्सां ह्सीं इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यायेत्। यथा–

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे ।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे ।।
नवरत्नमयश्रीमत् – सिंहासनगताम्बुजे ।
त्रिकोणान्तस्समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम्।।
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम्।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ।।
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम्।।
पानपात्रञ्च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम्।।
महाषोढोदिताशेषदेवतागणसेवितम् ।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम्।।
पुरुषं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत्।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम् ।।
सर्वतेजोमयं ध्यायेत्सचराचरविग्रहम् ।

इति स्वाभेदेन ध्यात्वा, योनि-लिङ्ग-सुरभि-कपाल-ज्ञान-त्रिशूल-पुस्तक-वनमाला-नभो-महामुद्रा इति दशमुद्राः प्रदर्श्य शिरसि श्रीगुरुं ध्यायेत्।

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभम् ।
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम् ।।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं ।
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम्।।

इति श्रीगुरुं ध्यात्वा तद्विविद्यया तत्पादुकां शरसि विन्यस्य प्रणम्य स्वगुरुकृतं स्वनाम स्वमूलाधारे स्मृत्वा शिवरूपं स्वात्मानं ध्यायेत्।।

।। इति महाषोढ़ान्यासः।।

।। महाषोढान्यासफलम् कुलार्णवे ।।

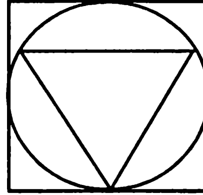
एवं न्यासे कृते देवि साक्षात्परशिवो भवेत् ।
मन्त्री चात्र न सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः ।।
महाषोढाह्वयं न्यासं यः करोति दिने दिने ।
देवास्सर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः ।।
महाषोढाह्वयं न्यासं यत्र मन्त्री न्यसेत्ततः ।
दिव्यक्षेत्रं समुद्दिष्टं समन्ताद्दशयोजनम् ।।
कृत्वा न्यासमिमं देवि यत्र गच्छति मानवः ।
तत्र श्रीर्विजयो लाभः स मान्यः पुरुषः प्रिये ।।
महाषोढाकृतन्यासः त्वदीक्षायाभिवन्दते ।
स मासान्मृत्युमाप्नोति यदि त्राता शिवः स्वयम् ।।
वज्रपञ्जरनामानमेवं न्यासं करोति यः ।
दिव्यान्तरिक्षभूशैल जलारण्यनिवासिनः ।।
उद्दण्डभूतवेताल देवरक्षोग्रहादयः ।
भयग्रस्तेन मनसा नेक्षन्ते साधकं प्रिये ।।
महाषोढाह्वयं न्यासं ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।
देवास्सर्वे प्रकुर्वन्ति ऋषयश्च मुनीश्वराः ।।
बहुनोक्तेन किं देवि सुशिष्याय प्रकाशयेत् ।
अक्षयां लभते सिद्धिं रहसि न्यासमाचरेत् ।।
अस्मात्परतरस्साक्षाद्देवताभावसिद्धिदः ।
लोके नास्ति न सन्देहः सत्यं सत्यं न संशयः ।।
ऊर्ध्वाम्नायप्रवेशश्च पराप्रासादचिन्तनम् ।
महाषोढापरिज्ञानं नाल्पस्य तपसः फलम् ।।

।। इति महाषोडान्यासफलम् ।।

अथ पात्रासादनम्

वर्धनीकलशस्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य—



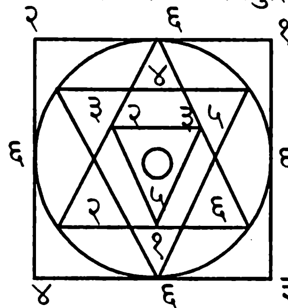
मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य, कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैरलङ्कृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत्॥

३ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती॥
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः॥
आयान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन पूजोपकरणानि आत्मानञ्च प्रोक्षयेत्॥ **ललितार्चनकाले हि यानीह साम्प्रतम्।**
वस्तूनि सौरभाढ्यनि पावित्राणि भवन्तु वै।

सामान्यार्घ्यविधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय॥



(चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च बालाषडङ्गैः सम्पूजयेत्।)यथा—

३ ऐं हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ क्लीं शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ सौः शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ ऐं कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ सौः अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

३ ऐं क—५ हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ क्लीं ह—६ शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ सौः स—४ शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ ऐं क—५ कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ क्लीं ह—६ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

३ सौःस—४ अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

३ ऐं क—५ नमः	३ सौः स—४ नमः
३ क्लीं ह—६ नमः	३ मूलं नमः (बिन्दौ)

ततः ३ अस्त्राय फट्—इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य

३ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः।। **(इति मण्डलोपरि संस्थाप्य)**

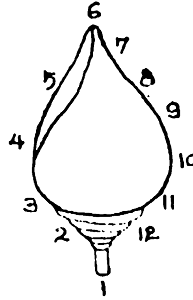
३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः, (इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत्।) तद्यथा—

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः	३ षं सुश्री कलायै नमः
३ रं ऊष्मा कलायै नमः	३ सं सुरूपा कलायै नमः
३ लं ज्वलिनी कलायै नमः	३ हं कपिला कलायै नमः
३ वं ज्वालिनी कलायै नमः	३ ळं हव्यवाहिनी कलायै नमः
३ शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः	३ क्षं कव्यवाहिनी कलायै नमः

३ **अस्त्राय फट्**— इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा—

३ **उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः**— इति संस्थाप्य

३ **आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः**—इति (सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्) तद्यथा—



शंख चित्र

३ कं भं तपिनी कलायै नमः	३ छं दं सुषुम्ना कलायै नमः
३ खं बं तापिनी कलायै नमः	३ जं थं भोगदा कलायै नमः
३ गं फं धूम्रा कलायै नमः	३ झं तं विश्वा कलायै नमः
३ घं पं मरीचि कलायै नमः	३ ञं णं बोधिनी कलायै नमः
३ ङं नं ज्वालिनी कलायै नमः	३ टं ढं धारिणी कलायै नमः
३ चं धं रुचि कलायै नमः	३ ठं डं क्षमा कलायै नमः

३ **मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः**— (इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्वा)।

३ **आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं भवावाजस्य सङ्गथे।
सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः**— इति
(सोममण्डलं विभाव्य षोडशसोमकलाः पूजयेत्।) तद्यथा—

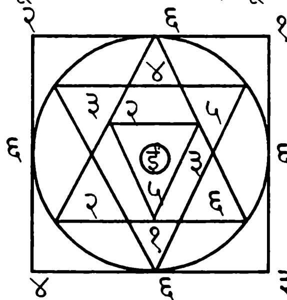
३	अं अमृता कलायै नमः	३	ऌं चन्द्रिका कलायै नमः
३	आं मानदा कलायै नमः	३	ॡं कान्ति कलायै नमः
३	इं पूषा कलायै नमः	३	एं ज्योत्स्ना कलायै नमः
३	ईं तुष्टि कलायै नमः	३	ऐं श्री कलायै नमः
३	उं पुष्टि कलायै नमः	३	ओं प्रीति कलायै नमः
३	ऊं रति कलायै नमः	३	औं अङ्गदा कलायै नमः
३	ऋं धृति कलायै नमः	३	अं पूर्णा कलायै नमः
३	ॠं शशिनी कलायै नमः	३	अः पूर्णामृता कलायै नमः

(ततस्तस्मिन्शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य), '**अस्त्राय फट्**— इति संरक्ष्य, '**कवचाय हुँ**' इति **अवगुण्ठ्य,** धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, (तत्सलिलपृषतैः पूजोपकरणानि, आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलं किञ्चित् वर्धन्यां निक्षिपेत्।।)

**ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै।।** इति प्रोक्षयेत्

विशेषार्घ्यविधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः पूर्ववत् बिन्दु—त्रिकोण—षट्कोण—वृत्त—चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य, चतुरस्रे प्राग्वत् षडङ्गं सम्पूज्य, षट्कोणे स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिन्दुञ्चार्चयेत्। तद्यथा—



चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

३ ऐं क ५ हृदयाय नमः, — हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ क्लीं ह ५ शिरसे स्वाहा, — शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ सौः स ४ शिखायै वषट्, — शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ ऐं क ५ कवचाय हुं, — कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ क्लीं ह ६ नेत्रत्रयाय वौषट् — नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ सौःस ४ अस्त्राय फट्, — अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः

ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

३ ऐं क—५ हृदयाय नमः, — हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ क्लीं ह—६ शिरसे स्वाहा, — शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ सौः स—४ शिखायै वषट्, — शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ ऐं क—५ कवचाय हुं, — कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ क्लीं ह—६ नेत्रत्रयाय वौषट् — नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ सौः स—४ अस्त्राय फट्, — अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

३ ऐं क—५ नमः ३ सौः स—४ नमः
३ क्लीं ह—६ नमः ३ मूलं नमः (बिन्दौ)

(षोडश्युपासकैस्तु षोडशीमन्त्रेणैव सर्वत्र पूजा विधेया।)

अथ ३ अस्त्राय फट् इति आधारं प्रक्षाल्य,

३ **ऐं क—५ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः,** (इति आधारं संस्थाप्य)

३ **अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः—**
(इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत्।) यथा—

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नम:	३ षं सुश्री कलायै नम:
३ रं ऊष्मा कलायै नम:	३ सं सुरूपा कलायै नम:
३ लं ज्वलिनी कलायै नम:	३ हं कपिला कलायै नम:
३ वं ज्वालिनी कलायै नम:	३ ळं हव्यवाहिनी कलायै नम:
३ शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नम:	३ क्षं कव्यवाहिनी कलायै नम:

तत: –

३ अस्त्राय फट् (इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य)।

३ **क्लीं ह–६ उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुर-सुन्दर्या: विशेषार्घ्यपात्राय नम:**, (इति आधारोपरि संस्थाप्य।।)

३ **ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्नि-भक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा**, (इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य।।)

३ **आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। हां हीं हूं हैं हौं ह: हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नम:**, (इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकला: पूजयेत्।) तद्यथा–

३ कं भं तपिनी कलायै नम:	३ छं दं सुषुम्ना कलायै नम:
३ खं बं तापिनी कलायै नम:	३ जं थं भोगदा कलायै नम:
३ गं फं धूम्रा कलायै नम:	३ झं तं विश्वा कलायै नम:
३ घं पं मरीचि कलायै नम:	३ ञं णं बोधिनी कलायै नम:
३ ङं नं ज्वालिनी कलायै नम:	३ टं ढं धारिणी कलायै नम:
३ चं धं रुचि कलायै नम:	३ ठं डं क्षमा कलायै नम:

ततो विशेषार्घ्यपात्रे

२ **सौ: स–४ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या: विशेषार्घ्यामृताय नम:**– (इति अकारादिक्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं सबिन्दुमातृकयार्पितं कस्तूरीकाद्यधिवासितं क्षीरं पूरयित्वा अष्टगन्ध-लोलितं पुष्पं निधाय,)

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् भवावाजस्य सङ्गथे।

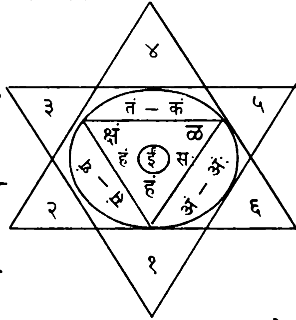
सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः–

(इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत्।) तद्यथा–

३ अं अमृता कलायै नमः	३ ऌं चन्द्रिका कलायै नमः
३ आं मानदा कलायै नमः	३ ॡं कान्ति कलायै नमः
३ इं पूषा कलायै नमः	३ एं ज्योत्स्ना कलायै नमः
३ ईं तुष्टि कलायै नमः	३ ऐं श्री कलायै नमः
३ उं पुष्टि कलायै नमः	३ ओं प्रीति कलायै नमः
३ ऊं रति कलायै नमः	३ औं अङ्गदा कलायै नमः
३ ऋं धृति कलायै नमः	३ अं पूर्णा कलायै नमः
३ ॠं शशिनी कलायै नमः	३ अः पूर्णामृता कलायै नमः

ततः ३ ॐ जुं सः स्वाहा, इति अष्टवारमभिमन्त्र्य।

तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादि–षोडशवर्णात्मक–रेखात्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादिकोणेषु अप्रादक्षिण्येन हळक्षान्, बहिः प्रादक्षिण्येन पञ्चदशीमूल–खण्डत्रयं, बिन्दौ सबिन्दुतुरीयस्वरं (ईं) तद्वामदक्षयोः क्रमेण हं सः इति च विलिख्य



३ **हं सः नमः, इति आराध्य,** त्रिकोणस्य परितः वृत्तं तद्बहिश्च षट्कोणं निर्माय, स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोणमभ्यर्च्य

३ **'मूलं' तां चिन्मयीं आनन्दलक्षणां अमृतकलशपिसितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा,** (इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य तदर्घ्यात्किञ्चित्–पात्रान्तरेण)

३ वषट् इत्युद्धृत्य,	३ स्वाहा, तत्रैव निक्षिप्य,
३ हुं, इति अवगुण्ठ्य,	३ वौषट्, इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य
३ फट्, इति संरक्ष्य,	३ नमः, इति पुष्पं दत्वा

३ (मूलेन) गालिन्या निरीक्ष्य ३ ऐं इति योनिमुद्रया नत्वा
३ (मूलेन) सप्तवारमभिमन्त्र्य, सुधादेवीं षोडशोपचारैः सम्पूज्य तद्विन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य, **सर्वं विद्यामयं विभावयेत्।**

शुद्धिसंस्कारः

विशेषार्घ्यपात्रस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य☞

३ ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय, इति मण्डलमभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं संस्थाप्य
३ ॐ श्लीं पशु हुं फट्, इति अष्टवारमभिमन्त्र्य
३ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।
३ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो, रुद्राय नमः, कालाय नमः, कलविकरणाय नमो, बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।
३ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।
३ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
३ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।। (इत्यभ्यर्च्य) तदधः, त्रिकोण—वृत्त—चतुरस्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य प्रथममण्डले—
३ हंसश्शिवस्सोहं, सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः। इत्यभ्यर्च्य,गुरुपात्रं निधाय, द्वितीयमण्डले हंस नमः इत्यभ्यर्च्य, आत्मपात्रं निदध्यात्
३ ततो विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवतिमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्—

वह्निकलाः

(१) ३ यं धूम्रार्चिषे नमः	(६) ३ षं सुश्रियै नमः
(२) ३ रं ऊष्मायै ,,	(७) ३ सं सुरूपायै ,,
(३) ३ लं ज्वलिन्यै ,,	(८) ३ हं कपिलायै ,,
(४) ३ वं ज्वालिन्यै ,,	(९) ३ ळं हव्यवाहिन्यै ,,
(५) ३ शं विस्फुलिङ्गिन्यै ,,	(१०)३ क्षं कव्यवाहिन्यै ,,

☞अस्य चित्रं १४४ पृष्ठे द्रष्टव्यम्

॥ सूर्य कला:॥

३ कं भं तपिन्यै नमः	३ छं दं सुषुम्नायै नमः
३ खं बं तापिन्यै नमः	३ जं थं भोगदायै नमः
३ गं फं धूम्रायै नमः	३ झं तं विश्वायै नमः
३ घं पं मरीच्यै नमः	३ ञं णं बोधिन्यै नमः
३ ङं नं ज्वालिन्यै नमः	३ टं ढं धारिण्यै नमः
३ चं धं रुच्यै नमः	३ ठं डं क्षमायै नमः

॥ सोमकला:॥

३ अं अमृतायै नमः	३ लृं चन्द्रिकायै नमः
३ आं मानदायै नमः	३ लॄं कान्त्यै नमः
३ इं पूषायै नमः	३ एं ज्योत्स्नायै नमः
३ ईं तुष्ट्यै नमः	३ ऐं श्रियै नमः
३ उं पुष्ट्यै नमः	३ ओं प्रीत्यै नमः
३ ऊं रत्यै नमः	३ औं अङ्गदायै नमः
३ ऋं धृत्यै नमः	३ अं पूर्णायै नमः
३ ॠं शशिन्यै नमः	३ अः पूर्णामृतायै नमः

॥ ब्रह्मकला:॥

३ कं सृष्ट्यै नमः	३ चं लक्ष्म्यै नमः
३ खं ऋद्ध्यै नमः	३ छं द्युत्यै नमः
३ गं स्मृत्यै नमः	३ जं स्थिरायै नमः
३ घं मेधायै नमः	३ झं स्थित्यै नमः
३ ङं कान्त्यै नमः	३ ञं सिद्ध्यै नमः

३ **हंसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत–सदव्योम सद्ब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥** नमः॥

॥ विष्णुकलाः॥

३ टं जरायै नमः	३ तं कामिकायै नमः
३ ठं पालिन्यै नमः	३ थं वरदायै नमः
३ डं शान्त्यै नमः	३ दं ह्लादिन्यै नमः
३ ढं ईश्वर्यै नमः	३ धं प्रीत्यै नमः
३ णं रत्यै नमः	३ नं दीर्घायै नमः

३ **प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरूषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा** ॥ नमः॥

॥ रुद्रकलाः॥

३ पं तीक्ष्णायै नमः	३ यं क्षुधायै नमः
३ फं रोद्र्यै नमः	३ रं क्रोधिन्यै नमः
३ बं भयायै नमः	३ लं क्रियायै नमः
३ भं निद्रायै नमः	३ वं उद्गार्यै नमः
३ मं तन्द्र्यै नमः	३ शं मृत्यवे नमः

३ **त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात्**॥ नमः॥

॥ ईश्वरकलाः॥

३ षं पीतायै नमः	३ हं अरुणायै नमः
३ सं श्वेतायै नमः	३ क्षं असितायै नमः

३ **तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाँसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्**॥ नमः॥

सदाशिवकलाः

३ अं निवृत्त्यै नमः	३ उं इन्धिकायै नमः
३ आं प्रतिष्ठायै नमः	३ ऊं दीपिकायै नमः
३ इं विद्यायै नमः	३ ऋं रेचिकायै नमः
३ ईं शान्त्यै नमः	३ ॠं मोचिकायै नमः

३ लृं परायै नमः
३ लॄं सूक्ष्मायै नमः
३ एं सूक्ष्मामृतायै नमः।
३ ऐं ज्ञानायै नमः।
३ ओं ज्ञानामृतायै नमः।
३ औं आप्यायिन्यै नमः।
३ अं व्यापिन्यै नमः।
३ अः व्योमरूपायै नमः।

३ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।। नमः।।

३ **'मूलं' नमः।।**

३ अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके।। नमः।।

३ अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि।। नमः।।

३ तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु।। नमः।।

३ ऐं ब्लूं झौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।। नमः।।

३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः नमः।।

(एवमभिमन्त्रिविशेषार्घ्यामृतात् किञ्चित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत्। गुरु सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत्।)

(पुनः आत्मपात्रे किञ्चिद्विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य, मूलाधारे बालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा)

३ कुण्डलिन्यधिष्ठितचदिग्निमण्डलाय नमः, इति मनसा सम्पूज्य

३ मूलं पुण्यं जुहोमि स्वाहा – ३ (मूलं) पापं जुहोमि स्वाहा
३ (मूलं) कृत्यं जुहोमि स्वाहा – ३ (मूलं) अकृत्यं जुहोमि स्वाहा
३ (मूलं) सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा– ३ (मूलं) विकल्पं जुहोमि स्वाहा
३ (मूलं) धर्मं जुहोमि स्वाहा – ३ (मूलं) अधर्मं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) अधमं जुहोमि वौषट्

३ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्व ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा-इति पूर्णाहुतिं विभाव्य

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्मामस्मि। सोऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

(इति आत्मनः कुण्डलिरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्। विशेषार्घ्यपात्रात्किञ्चित्क्षीरं क्षीरकलशे निक्षिपेत्।।)

आविसर्जनं शङ्खं विशेषार्घ्यपात्रञ्च न चालयेत्।

अन्तर्यागः

अद्यः सहस्रारे षड्दलपद्मे स च ज्ञानार्णवे दृष्टः- यथा मूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं विसतन्तुतनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परश्शतसुधामयूखशी- तलतेजोदण्डरूपां परचितिं भावयेत्। ततस्तत्तेजसिमूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे, रक्तवर्णषड्दलपद्मे, भूपूरस्थिता देवीः, मूलाधारे चतुर्दले षोडशदलदेवीः, स्वाधिष्ठाने षड्दले चतुर्दशारदेवीः, अष्टदलदेवीः, मणिपूरके दशदले बहिर्दशारदेवीः, अनाहते द्वादशदले, अन्तर्दशारदेवीः विशुद्धौ षोडशदले, अष्टारदेवी, लम्बिकाग्रे, आयुधदेवीः त्रिकोणदेवी आज्ञायां द्विदले, बिन्दौमहादेवीं च ध्यात्वा तत्तदग्रे जीवात्मनं पुष्पपूरिताञ्जलिनिष्ठं भावयन् तत्तत्पूजामन्त्रैः तत्तदावरणपूजां, देव्याः वामहस्ते पूजासमर्पणं च विभाव्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां सचक्रावयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य मध्यत्र्यस्राग्रे (देवीपादमूले) स्थितजीवात्मना सहितां श्रीदेवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैः तत्र तां सम्पूज्य, ततः अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः धरणिवियदनिलानलजललक्षणपञ्चभूतमयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्चदेवताः देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिताः भावयेत्।

ततो देव्या नासायां गन्धदेवता श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता, इति क्रमेण विलीना: विभाव्य, मूलविद्यां उच्चरन्, जीवात्मानं श्रीदेवीपादारविन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तत्रैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् संक्षोभिण्यादि नवमुद्रा: भावयित्वा, क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।

अथ देव्या प्रेरितमानस: सन् पुन: प्रकृतिमालम्ब्य तेजोरूपेण परिणतां परमशिवज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकारणां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्नापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नविधिविलसदमलदशशतदलकमलात् वहन्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डामुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुमगर्भितेऽञ्जलौ समानीय—

३ ह्रीं श्रीं सौ: श्रीललिताया: अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नम:।।

।। ध्यानम्।।

ध्यायेन्निरामयं वस्तु जगत्त्रयविमोहिनीम्। अशेषव्यवहाराणां स्वामिनीं सविदं पराम्।।
उद्यत्सूर्यसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम्। जपाकुसुमसङ्काशां पद्मरागमणिप्रभाम्।।
स्फुरत्पद्मनिभां तप्तकाञ्चनाभां सुरेश्वरीम्। रक्तोत्पलदलाकारपादपल्लवराजिताम्।।
अनर्घरत्नखचितमञ्जीरचरणद्वयाम्। पादाङ्गुलीयकक्षिप्तरत्नतेजोविराजिताम्।।
कदलीललितस्तम्भसुकुमारोरुकोमलाम्। नितम्बविम्बविलसद्रक्तवस्त्रपरिष्कृताम्।।
मेखलाबद्धमाणिक्यकिङ्किणीनादविभ्रमाम्। अलक्ष्यमध्यमां निम्ननाभिं शातोदरीं पराम्।।
रोमराजिलतोद्भूतमहाकुचफलान्विताम्। सुवृत्तनिबिडोत्तुङ्गकुचमण्डलराजिताम्।।
अनर्घमौक्तिकस्फारहारभारविराजिताम्। नवरत्नप्रभाराजद्ग्रैवेयकविभूषणाम्।।
श्रुतिभूषामनोरम्यकपोलस्थलमञ्जुलाम्। उद्यदादित्यसङ्काशताटङ्कसुमुखप्रभाम्।।
पूर्णचन्द्रमुखीं पद्मवदनां वरनासिकाम्। स्फुरन्मदनकोदण्डसुभ्रुवं पद्मलोचनाम्।।
ललाटपट्टसंराजद्रत्नाढ्यतिलकाङ्किताम्। मुक्तामाणिक्यघटितमुकुटस्थलकिङ्किणीम्।।

**स्फुरच्चन्द्रकलाराजन्मुकुटाञ्च त्रिलोचनाम्। प्रवालवल्लीविलसद्बाहुवल्लीचतुष्टयाम्।।
इक्षुकोदण्डपुष्पेषुपाशाङ्कुशचतुर्भुजाम्। सर्वदेवमयीमम्बां सर्वसौभाग्यसुन्दरीम्।।
सर्वतीर्थमयीं दिव्यां सर्वकामप्रपूरिणीम्। सर्वमन्त्रमयीं नित्यां सर्वागमविशारदाम्।।
सर्वक्षेत्रमयीं देवीं सर्वविद्यामयीं शिवाम्। सर्वयागमयीं विद्यां सर्वदेवस्वरूपिणीम्।।
सर्वशास्त्रमयीं नित्यां सर्वागमनमस्कृताम्। सर्वाम्नायमयीं देवीं सर्वायतनसेविताम्।।
सर्वानन्दमयीं ज्ञानगह्वरां सविदं पराम्।एवं ध्यायेत्परामम्बां सच्चिदानन्दरूपिणीम्।।**

अथवा स्वमन्त्रदेवताध्यानं—

इति निजलीलाङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य।

३ ह्सैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः

**महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि।।**

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः।।

नित्यादिकमणिमान्तं श्रीकामेश्वराङ्कोपवेशनं विना श्रीदेवीसमानाकृतिवेष—भूषणायुधशक्तिचक्रं ओघत्रयगुरुमण्डलं च वक्ष्यमाणेषु आवरणेषु निजस्वामिन्यभिमुखोपविष्टमवमृश्य।

३	मूलं	आवाहिता भव।	३	,,	सन्निरुद्धा	भव।
३	,,	संस्थापिता भव।	३	,,	सम्मुखी	भव।
३	,,	सन्निधापिता भव।	३	,,	अवगुण्ठिता	भव।

इति मन्त्रैरावाहनादिषण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत्। अथ हृदयादिषडङ्गमुद्राः बाणाद्यायुधमुद्राश्च तत्तन्मन्त्रपूर्वकं प्रदर्शयेत्।।

।। चतुःषष्ट्युपचारपूजाः।।

अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्षष्ट्युपचारानाचरेत्। तेष्वशक्तानां भावनया पुष्पाक्षतानर्पयेत्।।

३ श्रीललितायै पाद्यं कल्पयामि नमः (इति सर्वत्र योगः)

,,	आभरणावरोपणं	,,	,,	मज्जनशालामणि —
,,	सुगन्धितैलाभ्यङ्गं	,,	,,	पीठोपवेशनं
,,	मज्जनशालाप्रवेशनं	,,	,,	दिव्यस्नानीयोद्वर्तनीयं ,,

३ श्रीललितायै उष्णोदकस्नानं
+ कनककलशच्युत
,, सकलतीर्थाभिषेकं
,, धौतवस्त्रपरिमार्जनं
,, अरुणदुकूलपरिधानं
,, अरुणकुचोत्तरीयं
,, आलेपमण्डप्रवेशनं
,, आलेपमण्डपमणिपीठोपवेशनं
,, दिव्यगन्धसर्वाङ्गीणविलेपनं
,, केशभारस्य कालागरुधूपं
,, कुसुममालाः
,, भूषणमण्डपप्रवेशनं
,, भूषणमण्डपमणिपीठोपवेशनं
,, नवमणिमुकुटं
,, चन्द्रशकलं
,, सीमन्तसिन्दूरं
,, तिलकरत्नं
,, कालाञ्जनं
,, वालीयुगलं
,, मणिकुण्डलयुगलं
,, नासाभरणं
,, अधरयावकं

३ प्रथमभूषणं माङ्गल्सूत्रं ,,

कनकचिन्ताकं
पदकं
महापदकं
मुक्तावलिं
एकावलिं
छन्नवीरं
केयूरयुगलचतुष्टयं
वलयावलिं
ऊर्मिकावलिं
काञ्चीदाम
कटिसूत्रं
सौभाग्याभरणं
पादकटकं
रत्ननूपुरं
पादाङ्गुलीयकं

एककरे पाशं
अन्यकरेऽङ्कुशं
इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं
अपरकरे पुष्पबाणान्
श्रीमन्माणिक्यपादुके

,, स्वसमानवेषाभिरावरणदेवताभिः सह महाचक्राधिरोहणं कल्पयामि नमः।
,, कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं कल्पयामि नमः।
,, अमृतासवचषकं कल्पयामि नमः।

+ इह श्रीसूक्तेनाभिषेको विधेयः॥

३ श्रीललितायै आचमनीयं कल्पयामि नमः।
,, कर्पूरवीटिकां कल्पयामि नमः।
,, आनन्दोल्लासविलासहासं कल्पयामि नमः।

अथ मङ्गलारार्तिकम्— कलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादिलिखित-स्याष्टषट्चतुर्दलाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारचरुगोलकवत्यां चणकमुद्गजुषि वा कर्णिकायां दलेषु च पयःशर्करापिण्डीकृतयवगोधूमादिपिष्टोपादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलोत्सेधानि घृतमाचितानि नवसप्तपञ्चान्यतमसंख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं कर्षप्रमितं आपूर्य कर्पूरगर्भितां वर्तिकां ह्ल्लेखया प्रज्वाल्य—

३ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा—इति मन्त्रपूर्वकं गन्धाक्षतादिना घण्टां सम्पूज्य तां वादयन् जानुचुम्बितभूतलः तत्पात्रं आमस्तकमुद्धृत्य —

३ श्रीललितायै मङ्गलारार्तिकं कल्पयामि नमः।

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये॥

इति नववारं श्रीदेव्या आचूडं आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्।

३ श्रीललितायै छत्रं कल्प०नमः।	३ श्रीललितायै गन्धं कल्प०नमः।
,, चामरयुगलं ,,	,, पुष्पं ,,
,, दर्पणं ,,	,, धूपं ,,
,, तालवृन्तं ,,	,, दीपं ,,

अथ नैवेद्यम्— देव्याः पुरतः स्वदक्षिणे चतुरस्रमण्डलं निर्माय तत्र आधारोपरि नैवेद्यं निधाय मूलेन प्रोक्ष्य वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मूलेन त्रिवारं अभिमन्त्र्य आपोशनं दत्वा—

३ श्रीललितायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः।

अथ श्रीललितायै पानीयं उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं गण्डूषं आचमनीयं ताम्बूलञ्च कल्पयेत्।

एलालवङ्गकर्पूरकस्तूरीकेशरादिभिः, जातीफलदलैः पूगैः
लाङ्गल्यूषणनागरैः चूर्णैः खदिरसारैश्च युक्ता कर्पूरवीटिका।

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्स्ख्फ्रें ह्सौः ऐं— इति सर्वसंक्षोभिण्यादिनवमुद्राः प्रदर्शयेत्।

षोडश्युपासकास्तु ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः इति त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेयुः॥

॥ चतुरायतनपूजा॥

नित्योत्सवे तु, तत्तद्देवतामन्त्रैः तर्पणमात्रमेव। विस्तरेणापि लिख्यते। यथेच्छं विधेयम्।

नैर्ऋते च गणेशानं सूर्यं वायव्य एव च ।
ईशाने विष्णुमाग्नेये शिवं चैव प्रपूजयेत् ॥

॥ श्री महागणपतिपूजा ॥

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया।
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः॥

श्रीमहागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि पाद्यं समर्पयामि अर्घ्यं समर्पयामि आचमनीयं समर्पयामि मधुपर्कं समर्पयामि स्नानं समर्पयामि वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि गन्धान् धारयामि। पुष्पाणि समपर्ययामि

सुमुखाय नमः	धूमकेतवे नमः
एकदन्ताय नमः	गणाध्यक्षाय नमः
कपिलाय नमः	फालचन्द्राच नमः
गजकर्णकायनमः	गजाननाय नमः
लम्बोदराय नमः	वक्रतुण्डाय नमः
विकटाय नमः	शूर्पकर्णाय नमः
विघ्नराजाय नमः	हेरम्बाय नमः
विनायकाय नमः	स्कन्दपूर्वजाय नमः

श्रीमहागणतपये नमः नानाविधपरिमलद्रव्याणि समर्पयामि॥

३ 'गणपतिमूलं' महागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सन्तर्पयेत्॥

महागणपतये नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्। महागणपतये नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहागणपतिः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

।। सूर्यपूजा।।

अध्यारूढं रथेन्द्रे वसुदलसहिते वृत्तषट्कोणमध्ये
भास्वन्तं भास्करं तं शुभदमसिगदाशङ्खचक्राब्जयुग्मम्।
वेदाकारं त्रिमूर्तिं त्रिविधनयगुणं विश्वरूपं पुराणं
ह्रांह्रींह्रूङ्काररूपं सुरनुतमनिशं भावयेद्धृत्सरोजे।।

आदित्यं ध्यायामि। आवाहयामि। आदित्याय नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ मित्राय	नमः	हिरण्यगर्भाय	नमः
रवये	नमः	नीलरुचये	नमः
सूर्याय	नमः	आदित्याय	नमः
भानवे	नमः	सवित्रे	नमः
खगाय	नमः	अर्काय	नमः
पूष्णे	नमः	भास्कराय	नमः

आदित्याय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।।

३ 'आदित्यमूलं' आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिःसन्तर्पयेत्।।

आदित्याय नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलञ्च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्। आदित्याय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि। अनया पूजया भगवान् सर्वदेवात्मकः आदित्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

।। विष्णुपूजा।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

श्रीमहाविष्णुं ध्यायामि। आवाहयामि। महाविष्णवे नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि।

ॐ केशवाय नमः
नारायणाय नमः
माधवाय नमः
गोविन्दाय नमः
विष्णवे नमः
मधुसूदनाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
वामनाय नमः
श्रीधराय नमः
हृषीकेशाय नमः
पद्मनाभाय नमः
दामोदराय नमः

महाविष्णवे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।।

३ 'अष्टाक्षरी' महाविष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति त्रिःसन्तर्पयेत्।

महाविष्णवे नमः। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं समर्पयामि कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान्

समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहाविष्णुः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

।। शिवपूजा।।

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं
वामाङ्कारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम्।
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशम्।।

साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि। परमेश्वराय नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि।

ॐ भवाय	देवाय नमः	ॐ रुद्राय	देवाय नमः
शर्वाय	देवाय नमः	उग्राय	देवाय नमः
ईशानाय	देवाय नमः	भीमाय	देवाय नमः
पशुपतये	देवाय नमः	महते	देवाय नमः

परमेश्वराय नमः। नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

३ 'पञ्चाक्षरी' साम्बपरमेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति त्रिःसन्तर्पयेत्।।

परमेश्वराय नमः। धूममाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलञ्च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। परमेश्वराय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि। अनया पूजया भगवान् सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम्।।

इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्याः वामहस्ते पूजां समर्पयेत्।।

।। लयाङ्गपूजा।।

३ 'मूलं' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (पराभट्टारिका) श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति बिन्दौ देवीं त्रिःसन्तर्पयेत्।

।। षडङ्गार्चनम्।।

देव्यङ्गे (बिन्दौ) अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च–

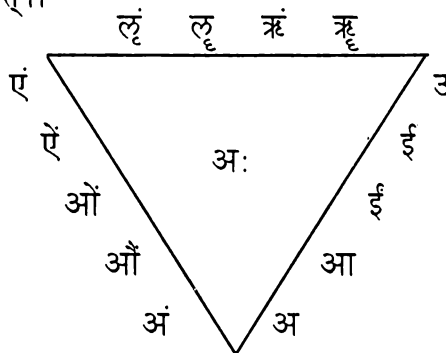
३ ऐं क–५ हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पू०त० नमः
३ क्लीं ह–६ शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स–४ शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ ऐं क–५ कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ क्लीं ह–६ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स–४ अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

षोडश्युपासकानान्तु षोडशीषट्कूटेन षडङ्गपूजा।

।। नित्यादेवी-यजनम्।।

३ अःपञ्चदशी अः श्रीललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति विन्दौ महानित्यां त्रिर्यजेत्।।

अथ तत्तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तत्तिथिनित्यां बिन्दौ त्रिर्यजेत्। ततः पूर्ववत् महानित्यां त्रिर्यजेत्।।



ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ई उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं इति, उत्तररेखायां ईशानादिवारुण्यन्तं एं ऐं ओं औं अं इति, पञ्चपञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत्। बिन्दौ षोडशं स्वरं (अ:) विचिन्त्य महानित्यां यजेत्। यथा—

३ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगाह्वये भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगनि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं, आं भगमालिनीनित्याश्रीपादुकां पू०त० नमः।।

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा, इं नित्यक्लिन्ना नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा, ईं भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः, उं वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं, ऊं महावज्रेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः, ऋं शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पू० त० नमः।।

३ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे चः छे क्षः स्त्री हुं क्षें ह्रीं फट्, ॠं त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ लृं ऐं क्लीं सौः,लृं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ ॡं ह्स्क्ल्र्डैं ह्स्क्ल्र्डीं ह्स्क्ल्र्डौः ॡं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ एं ह्लीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुँ फ्रें ह्लीं एं नीलपताका-नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ ऐं भ्म्र्यूं, ऐं विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ ओं स्वौं, ओं सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनी हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ अं च्क्रौं अं चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

३ अः पञ्चदशी अः ललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(एवं शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे तु चित्राद्याः कामेश्वर्यन्ताः तिथिनित्याः स्वस्वमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य बिन्दौ महानित्यां यजेत्।।)

।। गुरुमण्डलार्चनम्।।

३ **परौघेभ्योः नमः। इति बिन्दुत्रिकोणयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा बिन्दौ महापादुकां यजेत्।** यथा—

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्द— नाथात्मकचर्यानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।। (त्रिकोणे वामकोणादारभ्य) **पूर्वरेखायां**—

३ उड्डीशानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ प्रकाशानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ विमर्शानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ आनन्दानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

(दक्षकोणादारभ्य दक्षरेखायां)

३ षष्ठीशानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ ज्ञानानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ सत्यानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ पूर्णानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

(स्वाग्रकोणादारभ्य वामरेखायां)

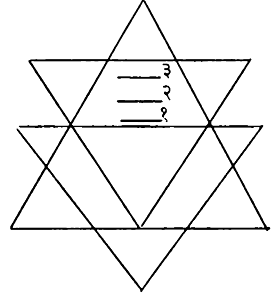
३ मित्रेशानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ स्वभावानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ प्रतिभानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

३ सुभगानन्दनाथश्री०पू०त०नमः।

ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणपूर्वरेखायाः तदव्यवहितप्रागग्रत्रिकोणपश्चिमरेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणावाग्देवतासन्निधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं विभाव्य दक्षिण–संस्थाक्रमेण दिव्यसिद्धमानवाख्यमोघत्रयं मुनिवेदवसुसङ्ख्यं समर्चयेत्।



यथा –

३ **दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः**– इति पुष्पाञ्जलिः।

दिव्यौघ। प्रथमरेखायां–

३ परप्रकाशानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ परशिवानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ पराशक्त्यम्बा श्री.पू.त.नमः।
३ कौलेश्वरनन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ शुक्लदेव्यम्बा श्री.पू.त.नमः।
३ कुलेश्वरानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ कामेश्वर्यम्बा श्री.पू.त.नमः।

सिद्धौघः द्वितीयरेखायां–

३ भोगानन्दनाथ श्रीपादुकां पू. त. नमः।
३ क्लिन्नानन्दनाथ श्रीपादुकां पू. त. नमः।
३ समयानन्दनाथ श्रीपादुकां पू. त. नमः।
३ सहजानन्दनाथ श्रीपादुकां पू. त. नमः।

मानवौघः तृतीय रेखायाम्।

३ गगनानन्दनाथ श्री. पू.त.नमः।
३ विश्वानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ विमलानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ मदनानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ भुवनानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ लीलाम्बा श्री.पू.त.नमः।
३ स्वात्मानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।
३ प्रियानन्दनाथ श्री.पू.त.नमः।

ततः प्रथमरेखायां परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरु, द्वितीयरेखायां परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, तृतीयरेखायां स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरूञ्च यजेत्।।

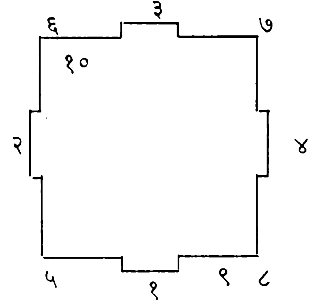
।। आवरणपूजा।।

ऐं ह्रीं श्रीं सविन्मये परे देवि परामृतचरुप्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे।।

।। प्रथमावरणम्।।

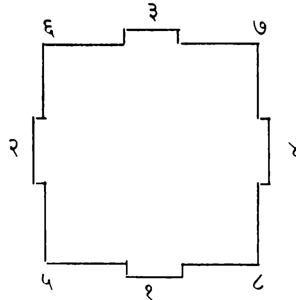
३ अं आं: सौ: त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः। (इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।।)

क्रमेण शुक्लारुणपीतवर्णरेखात्रयस्य लकारप्रकृतिकपृथिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादिद्वार-चतुष्टयदक्षिणभागेषु वाय्व्यादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयो: पूर्वेशानयोश्च मध्ये क्रमेण-



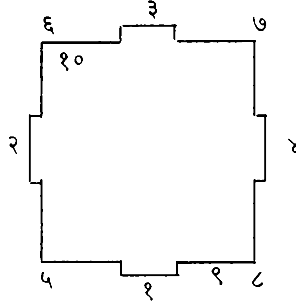
३ अं अणिमासिद्धिश्री.पू.त.नमः।	३ पं प्राकाम्यसिद्धिश्री.पू.त.नमः।
३ लं लघिमासिद्धिश्री.पू.त.नमः।	३ भुं भुक्तिसिद्धिश्री.पू.त.नमः।
३ मं महिमासिद्धिश्री.पू.त.नमः।	३ इं इच्छासिद्धिश्री.पू.त.नमः।
३ ईं ईशित्वसिद्धिश्री.पू.त.नमः।	३ पं प्राप्तिसिद्धिश्री.पू.त.नमः।
३ वं वशित्वसिद्धिश्री.पू.त.नमः।	३ सं सर्वकामसिद्धिश्री.पू.त.नमः।

इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत्। एवमुत्तरत्रापि।।
(अथ चतुरस्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु च क्रमेण)—



३ आं ब्राह्मीमातृश्रीपादुकां नमः	३ लॄं वाराहीमातृश्रीपादुकां नमः
३ ईं माहेश्वरीमातृश्रीपादुकां नमः	३ ऐं माहेन्द्रीमातृश्रीपादुकां नमः
३ ऊं कौमारीमातृश्रीपादुकां नमः	३ औं चामुण्डामातृश्रीपादुकां नमः
३ ॠं वैष्णवीमातृश्रीपादुकां नमः	३ अः महालक्ष्मीमातृश्रीपादुकां नमः

ततः चतुरस्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण—



३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पू. तर्पयामि नमः।

३ एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(अणिमासिद्धेः पुरतः—)

३ अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ अं अणिमासिद्धि[१]:श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ द्रां इति सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्श्य—

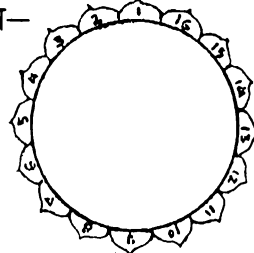
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

प्रकटयोगिनी मयूखायै महात्रिपुर सुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।।

।। द्वितीयावरणम्।।

३ **ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः।** (पुष्पाञ्जलिः)

श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिकषोडशकलात्मके चन्द्रस्वरूपे स्रवदमृतरसे षोडशदलकमले देव्यग्रदलमारभ्य वामावर्तेन—



३ अं कामाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ आं बुद्ध्याकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ इं अहङ्काराकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ईं शब्दाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ उं स्पर्शाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऊं रूपाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऋं रसाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॠं गन्धाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऌं चित्ताकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ लॄं धैर्याकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एं स्मृत्याकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऐं नामाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ओं बीजाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ औं आत्माकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ अं अमृताकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ अः शरीराकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

कामाकर्षिण्याः पुरतः—

३ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ लं लघिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

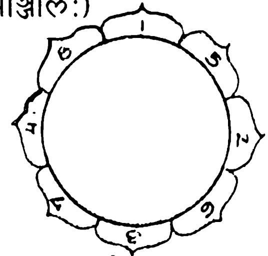
३ द्रीं—इति सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्श्य—

३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।। इति पूजां समर्प्य—

३ गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुर—सुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।)

।। तृतीयावरणम् ।।

३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)



हकारप्रकृतिक—अष्टमूर्त्यात्मक—
शिवाभिन्ने जपाकुसुममित्रे अष्टपत्रे
श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु
आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमेण—

३ कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीदेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशादेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ळं क्षं अनङ्गमालिनीदेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारै सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तुः नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

अनङ्गकुसुमायाः पुरतः—

३ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ मं महिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्लीं—इति सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्श्य—

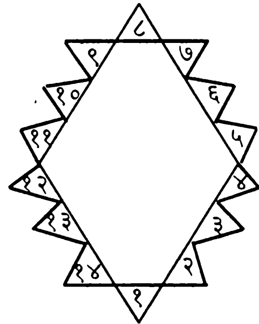
३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य)—

३ गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुर—सुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।।)

।। तुरीयावरणम्।।

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

ईकारप्रकृतिकचतुर्दशभुवनात्मक-महामायारूप दाडिमीप्रसूनसहोदरे चतुर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—



३ कं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति श्रीपादुकां पू. त. नमः।	३ जं सर्ववशङ्करीशक्ति श्रीपादुकां पू. त. नमः।
३ खं सर्वविद्राविणीशक्ति ,,	३ झं सर्वरञ्जिनीशक्ति ,,
३ गं सर्वाकर्षिणीशक्ति ,,	३ ञं सर्वोन्मादिनीशक्ति ,,
३ घं सर्वाह्लादिनीशक्ति ,,	३ टं सर्वार्थसाधिनीशक्ति ,,
३ ङं सर्वसम्मोहिनीशक्ति,,	३ ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्ति ,,
३ चं सर्वस्तम्भिनीशक्ति ,,	३ डं सर्वमन्त्रमयीशक्ति ,,
३ छं सर्वजृम्भिणीशक्ति ,,	३ ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्ति ,,

३ एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (पुष्पाञ्जलिः)। **सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः**—

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ब्लूं इति सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्श्य—

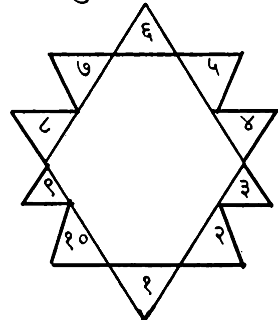
३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागगतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम्।। इति पूजां समर्प्य—

३ सम्प्रदाययोगिनीमयूखायै तुरीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।)

।। पञ्चमावरणम्।।

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

एकारप्रकृतिकदशावतारात्मकविष्णुस्वरूपे प्रभापराभूतसिन्दूरे बहिर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—



३ णं सर्वसिद्धिप्रदादेवी श्रीपादुकां पू. त. नमः।	३ नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी श्रीपादुकां पू. त. नमः।
३ तं सर्वसम्पत्प्रदादेवी ,,	३ पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवी ,,
३ थं सर्वप्रियङ्करीदेवी ,,	३ फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी ,,
३ दं सर्वमङ्गलकारिणीदेवी ,,	३ बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी ,,
३ धं सर्वकामप्रदादेवी ,,	३ भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी ,,

३ एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) **सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः**—

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूज० तर्पयामि नमः।

३ वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ सः—इति सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य—

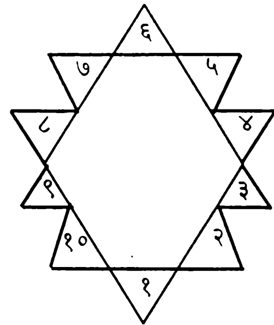
३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥ इति पूजां समर्प्य—

३ कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पञ्चमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। इति योनिमुद्रया प्रणमेत्॥

॥ षष्ठावरणम्॥

३ **ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाचक्राय नमः।** (पुष्पाञ्जलिः)

रेफप्रकृतिक—दशकलात्मक वैश्वानराभिन्ने जपासुमनसहचरे अन्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन :—



३ मं सर्वज्ञादेवी श्रीपादुकां पू. त. नमः।	३ शं सर्वाधारस्वरूपादेवी श्रीपादुकां पू. त. नमः।
३ यं सर्वशक्तिदेवी ,,	३ षं सर्वपापहरादेवी ,,
३ रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी ,,	३ सं सर्वानन्दमयीदेवी ,,
३ लं सर्वज्ञानमयीदेवी ,,	३ हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी ,,
३ वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी,,	३ क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी ,,

३ एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

सर्वज्ञायाः पुरतः–

३ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

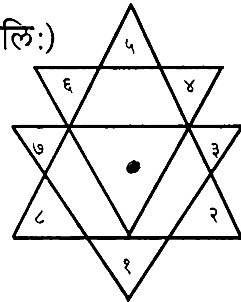
३ क्रों–इति सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्श्य–

३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम्।। इति पूजां समर्प्य–

३ निगर्भयोगिनीमयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।)

।। सप्तमावरणम्।।

३ **ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः** (पुष्पाञ्जलिः)



ककारप्रकृतिकअष्टमूर्त्यात्मक कामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन–

३ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूँ वशिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पू.त. नमः।

३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।
३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।
३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमला वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।
३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।
३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।
३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।
३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ एताः रहस्योगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तायः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) **वशिन्याः पुरतः**—

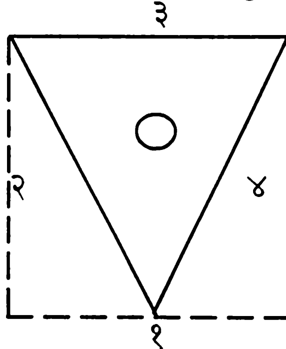
३ ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ भुं भुक्तिसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ह्स्ख्फ्रें— इति सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य —

३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।। इति पूजां समर्प्य—

३ रहस्योगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी-पराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।।)

।। अष्टमावरणम्।।

मध्यत्र्यस्रस्य बहिः पश्चिमादिदिक्षु प्रादक्षिण्येन—



३ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यो नमः। बाणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ थं धं सर्वसम्मोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां नमः। धनुःशक्ति श्रीपादुकां पू. त. नमः।

३ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां नमः। पाशशक्तिश्रीपादुकां पू. त. नमः।

३ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां नमः। अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पू. त. नमः। इत्यायुधार्चनं विदध्यात्। ततः—

३ **ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्सौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः।** (पुष्पाञ्जलिः)

नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखात्रयात्मके बन्धूकपुष्पबन्धुकिरणे त्रिकोणे अग्रदक्षवामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण—

३ ऐं क-५ अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोगिनिचक्रात्मक-आत्मतत्त्व-सृष्टिकृत्य-जाग्रद्दशाधिष्ठायक-इच्छाशक्ति-वाग्भवात्मक-वागीश्वरीस्वरूप-ब्रह्मात्मशक्ति-महाकामेश्वरी-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ क्लीं ह-६ सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीनाथ-दशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मकविद्यातत्त्व-स्थितिकृत्य-स्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्ति-कामराजात्मक-कामकलास्वरूप-विष्ण्वात्मशक्ति-महावज्रेश्वरी श्रीपादुकां पू.त. नमः।

३ सौः स-४ सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाश-अष्टदलषोडशदलचतुरस्रचक्रात्मक-शिवतत्त्व- संहारकृत्य- सुषुप्तिदशाधिष्ठायक- क्रियाशक्तिबीजात्मक-परापरशक्तिस्वरूप-रुद्रात्मशक्ति-महाभगमालिनी श्रीपादुकां पू.त.नमः।

३ ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ-समस्तचक्रात्मक-सपरिवारपरमतत्त्व- सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य-तुरीयदशाधिष्ठायक-इच्छाज्ञानक्रियाशान्ताशक्ति-वाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मक-परमशक्तिस्वरूप—परब्रह्मात्मशक्ति—श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ एता: अतिरहस्ययोगिन्य: सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्रा: ससिद्धय: सायुधा: सशक्तय: सवाहना: सपरिवारा: सर्वोपचारै: सम्पूजिता: सन्तर्पिता: सन्तुष्टा: सन्तु नम:। (पुष्पाञ्जलि:) **महाकामेश्वर्या: पुरत:**—
३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौ: त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू.त. नम:।
३ इं इच्छासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:।
३ ह्सौ:— सर्वबीजमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:।
३ ह्सौ:—इति सर्वबीजमुद्रां प्रदर्श्य—
३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्।। इति पूजां समर्प्य—
३ अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नम:। (योनिमुद्रया प्रणमेत्।।)

।। नवमावरणम्।।

३ क—१५ सर्वानन्दमयचक्राय नम:। (पुष्पाञ्जलि:)
बिन्द्वभिन्नपरब्रह्मात्मके बिन्दुचक्रे—
३ 'मूलं' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। इति त्रि: सन्तर्प्य।
३ एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धि: सायुधा सशक्ति: सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारै: सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टास्तु नम:। (पुष्पाञ्जलि:) महात्रिपुरसुन्दर्या: पुरत:—
३ 'पञ्चदशी' श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:।
३ पं प्राप्तिसिद्धि श्रीपादुकां पू० तर्पयामि नम:।
३ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पू. त. नम:।
३ ऐं—इति सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्श्य[१]
३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।। इति पूजां समर्प्य—

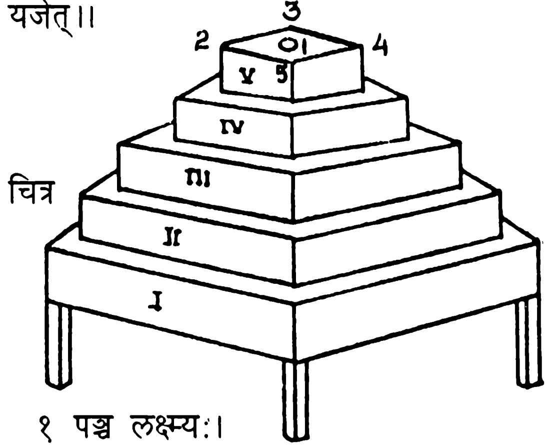
---

१ षोडश्युपासकानामेव—
३. हसकल हसकहल सकलह्रीं तुरीयाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। इति त्रि: संतर्प्य—

३ परापरातिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपु रसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। योनिमुद्रया प्रणमेत्। **इति नवावरणार्चनम्।**

पञ्चपञ्चिकापूजा

बिन्दुचक्रोपरि सिंहासनाकारेण पीठभावनां कृत्वा मध्ये वाय्वीशानाग्नि–निर्ऋतिकोणेषु च क्रमेण यजेत्।।



चित्र

१ पञ्च लक्ष्म्यः।

३ (मूलं) श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मध्ये)

३ श्रीं। लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथत्मकतुरीयातीतदशाधिष्ठायक-शान्त्यतीतकलातमक-प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मक परब्रह्म-स्वरूपिणी परामृतशक्ति सर्ववीरेश्वरी सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वयोगेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वसिद्धेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सकलजगदुत्पत्तिमातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टास्तु नमः। इति समष्ट्यञ्जलिं विधाय।

३ सं सर्वकामसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पू. त.नमः।

३ ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्रां प्रदर्श्य। **(ततः पूजा समर्पणम्।)**

३ श्रीं ह्रीं क्लीं कमले कमलाये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीलक्ष्म्यश्रीपादुकां पू. त. नमः। (ईशाने)

३ श्री ह्रीं क्लीं। त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (आग्नेये)

३ श्रीं सहकलह्रीं श्रीं। सर्वमाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू.त. नमः। (नैऋते)

२ पञ्च कोशाम्बाः

३ (मूलं) श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (मध्ये)

३ ॐ ह्रीं हंसस्सोहं स्वाहा। परंज्योतिः—कोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ॐ हंसः। परानिष्कलाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (ईशाने)

३ हंसः। अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (आग्नेये)

३ अं आं + ळं क्षं। मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (नैर्ऋते)

३ पञ्च कल्पलताः

३ (मूलं) श्रीविद्याकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (मध्ये)

३ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। (पञ्चकामेश्वरी) त्वरिताकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ॐ ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं सरस्वत्यै नमः ह्स्त्रैं। पारिजातेश्वरीकल्प—लताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः। (कुमारी) त्रिपुटाकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (आग्नेये)

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः। पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (नैर्ऋते)

४ पञ्च कामदुधाः

३ (मूलं) श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मध्ये)

३ ॐ ह्रीं हंसः जुं संजीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा। अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः, सुधाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। अमृतेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू.त.नमः। (आग्नेये)

३ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवतिं माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा। अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू. त. नमः। (नैर्ऋते)

५ पञ्च रत्नाम्बाः

३ (मूलं) श्रीविद्यारत्नाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मध्ये)

३ ज्झ्रीं महाचण्डे तेजःसङ्कर्षिणी कालमन्थाने हः। सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जनि क्लींह्रींश्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। राजमातङ्गीश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ श्रीं ह्रीं श्रीं। भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि त. नमः। (आग्नेये)

३ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठःठःठःठःहुं अस्त्राय फट् वाराहीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पू.त.नमः। (नैर्ऋते)।

षड्दर्शनविद्या

३ तारे तुत्तारे तु स्वाहा। तारादेवताधिष्ठितबौद्धदर्शनश्रीपादुकां पू.त.नमः। **(भूगृहत्रये)**

३ 'गायत्री' परोरजसे सावदों। ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(षोडशदले)**

३ ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यों। सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(चतुर्दशारे)**

३ ॐ नमो नारायणाय। विष्णुदेवताधिष्ठितवैष्णवदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(द्विदशारे)**

३ ॐ श्रींह्रींश्रीं। भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्री.पू.त.नमः। **(अष्टारे)**

३. ॐ ह्रीं नमशिवायं रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(त्रिकोणे)**

षडाधारपूजा

३ सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहितगणनाथस्वरूपिण्यै नमः। गणनाथस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ कां सोहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः। ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ हंसस्सोऽहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहितविष्णुस्वरूपिण्यै नमः। विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ रां हंसश्शिवस्सोऽहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिवस्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ डां सोऽहं हंसशिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वर-स्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू. तर्पयामि नमः।

३ हां हंसश्शिवस्सोहं सोहं हंशश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै डाकिनी-सहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्री.पू.त.नमः।

आम्नायसमष्टिपूजा

३ ह्सैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौ। पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनीदेव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **सष्टचात्म केचतुरस्र-षोडशदल-अष्ट-दलात्मके पूर्वाम्नाये।**

३ (मूलम्) गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशति-

सहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पुजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः। दक्षिणाम्नायसमयविद्ये-श्वरीभोगिनीदेव्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **स्थित्यात्मके मन्वस्र-द्विदशार-दक्षिणाम्नये।**

३ (मूलम्) भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्यादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरिपीठस्थितायै दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्सैं ह्स्रीं ह्स्रौ हस्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघारमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्रौः ह्स्ख्फ्रें हस्रौः। पश्चिमाम्नायसमय-विद्येश्वरीकुब्जिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अष्टारंत्र्यस्र संहारात्मके पश्चिमाम्नाये।

३ (मूलम्) ददूती-मण्डलत्रय-दशवीर-चतुःषष्टिसिद्धिनाथसहितायै लोपा-मुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थि-तायै पशिमाम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **बिन्दुचक्रे उत्तराग्नाये**

३ हस्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नायसमयविद्येश्वरी-कालिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(बिन्दौ)**

३ (मूलम्) नवमुद्रा-पञ्चवीरावलिसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्त-द्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नाय समष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **षोडश्युपासकानाम्।**

३ मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(बिन्दौ)**

२. (मूलम्) श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज-गुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्ताशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रें ह्स्रौः। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **(बिन्दौ)**

३. (मूलम्) परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्यादिश्रीपूर्ति-विद्यासहितानन्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पू. त. नमः।

(ततः बाला-अन्नपूर्णा-अश्वारूढामन्त्रैः अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गदेवतार्चनं कृत्वा मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्पयेत्)।

दण्डनाथानामानि

३	पञ्चम्यै	नमः	३	पोत्रिण्यै	नमः
	दण्डनाथायै	,,		शिवायै	,,
	सङ्केतायै	,,		वार्ताल्यै	,,
	समयेश्वर्यै	,,		महासेनायै	,,
	समयसङ्केतायै	,,		आज्ञाचक्रेश्वर्यै	,,
	वाराह्यै	,,		अरिघ्न्यै	,,

मन्त्रिणीनामानि

३	संगीतयोगिन्यै	नमः	३	वीणावत्यै	नमः
	श्यामायै	,,		वैणिक्यै	,,
	श्यामलायै	,,		मुद्रिण्यै	,,
	मन्त्रनायिकायै	,,		प्रियकप्रियायै	,,
	मन्त्रिण्यै	,,		नीपप्रियायै	,,
	सचिवेशान्यै	,,		कदम्बेश्यै	,,
	प्रधानेश्यै	,,		कदम्बवनवासिन्यै	,,
	शुकप्रियायै	,,		सदामदायै	,,

ललितानामानि

३	सिंहासनेश्यै	नमः	३	कामेश्यै	नमः
	ललितायै	,,		परमेश्वर्यै	,,
	महाराज्ञ्यै	,,		कामराजप्रियायै	,,
	वराङ्कुशायै ,,			कामकोटिकायै	,,
	चापिन्यै	,,		चक्रवर्तिन्यै	,,
	त्रिपुरायै	,,		महाविद्यायै	,,
	महात्रिपुरसुन्दर्यै	,,		शिवायै	,,
	सुन्दरिचक्रनाथायै	,,		अनङ्गवल्लभायै	,,
	सम्राज्ञ्यै	,,		सर्वपाटलायै	,,
	चक्रिण्यै	,,		कुलनाथायै	,,
	चक्रेश्वर्यै	,,		आम्नायनाथायै	,,
	महादेव्यै	,,		सर्वाम्नायनिवासिन्यै	,,

ॐ शृङ्गारनायिकायै नमः

(अथ यथावकाशं सहस्रनामावल्यादिनां अर्चनं कुर्यात्।)

धूपम्

लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैःश्रीवाससम्मिश्रितैः,
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषाऽऽलोडितैः।
श्रीखण्डागुरुगुग्गुलप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः,
धूपं ते परिकल्पयामि जननि! त्वं धूमपुञ्जीकुरु॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै धूपमाघ्रापयामि नमः॥

दीपम्

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै दीपं दर्शयामि नमः।

महानैवेद्यम्

एवं **सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्राः सबीजाः प्रदर्श्य, मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत्।** यथा- श्रीदेव्यग्रे चतुरस्रमण्डलं सामान्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरौप्यकांस्यादिस्थालीचषकभरितं भक्ष्य-भोज्यष्यलेह्यपेयात्कं सद्रव्यशु- ध्यादिरसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं निधाय।)

''स्विन्नं वामे आमं दक्षिणे निदध्यात्'' इति श्यामारहस्ये दृष्टम्। सुन्दरीमहोदये तु—''देव्या वामे दीपो दक्षिणे नैवेद्यम्'' इत्युक्तम्।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन त्रिः प्रोक्ष्य, वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, सप्तवारं मूलेनाभिमन्त्र्य,

३ ऐं ह्रः— इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य—

३ ओं जुं सः वौषट्—इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य, चक्रमुद्रां प्रदर्श्य—

३ यं—इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारं जपन् तद्गत-दोषान् संशोष्य—३ रं—इति वह्निबीजेनाधोमुखदक्षकरेण सन्दह्य— मूलेन विशेषार्घ्यविन्दुभिः प्रोक्ष्य

३ वं—इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य—(मूलेन) सप्तवारमभिमन्त्र्य

३ ॐ क्लीं कामदुधे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर श्रीं परश्रीं— इति कामधेनु-विद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य—देव्यै पाद्यम्, अर्घ्यम् आचमनीयं च दत्त्वा—

३ (मूलेन) देवीं त्रिः सन्तर्प्य—

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चिद् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्

३ (मूलम्)—साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः। इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य, कृताञ्जलिः।

हेमपात्रगतं देवि परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परेश्वरि।। इति। प्रार्थ्य,

'अमृतोपस्तरमसि' इति देव्यै आपोशनं दत्वा पूर्वोक्तनैवेद्योपचारमन्त्रेण निवेद्य, तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत्। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं प्रणाय स्वाहा, ३ क्लीं अपानाय स्वाहा, ३ सौः व्यानाय स्वाहा, ३ ऐंक्लीं उदानाय स्वाहा, ३ ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। इति।

३ क ए ई ल ह्रीं नमः आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।
३ ह स क ह ल ह्रीं नमः विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीललिता तृत्यतु।
३ स क ल ह्रीं शिवतत्त्व न्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।
३ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः
सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।

इति किञ्चित्, किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं समर्पयेत्। प्रार्थयेच्च

३ चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेकभक्षणम्।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत्॥
मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

इति पुष्पाञ्जलि विन्यस्य नैवेद्यजातं तदात्म्येन समर्पयेत्।

अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम्।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब! पीयताम्॥
३ नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम्।
अमृतानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्॥

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै अमृतपानीयं समर्पयामि। ततो भुञ्जनां परदेवतां ध्यायेत्—

३. ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद्,
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्,
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री॥

इति देवीं भुक्तवतीं सुतृप्तां ध्यात्वा–
३ **अमृतापिधानमसि।** इत्युत्तरापोशनं दत्वा–
३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं आचमनीयं च कल्पयामि नमः। (ताम्रबलिपात्रे निवेदनसामग्रीः किञ्चिदायाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलमस्त्रेण शोधयेत्।)

ताम्बूलम्–

३. वनस्पतिदैत्याय ताम्बूलाय नमः। (इति सामान्याघ्योदकेन प्रोक्ष्य–)

३ **तमाल-दल-कर्पूर-पूगभाग-समन्वितम्।**
एलापत्रकसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूलवल्लिदलनिर्जित हेमवर्ण-स्वर्णाक्तपूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम्।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं, ताम्बूलमम्ब! वदनाम्बुरुहे गहाण॥

३. श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै मुखमण्डनार्थं ताम्बूलं कल्पयामि नमः॥

अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,
त्रिभुवन-कमनीयैः पूजयत्विा च वस्त्रैः।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां,
जननि! कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि॥

नीराजनम्।

ततः सुवर्णादिभाजनलिखितं कुङ्कुमपङ्करेखात्मकम्, अष्टदलकमलकर्णिकास्थां-मणिमयस्वर्ण-रजत-ताम्रपात्रस्थंदीपं कर्पूरं च प्रज्वाल्य पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकम् नीराजयेत् रत्नेश्वरी विद्यया अभिमन्त्र्य–नव चक्रेश्वरीमन्त्रै तथा ललिता नीराजनपद्यैः निराजनं कुर्यात्।

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत्॥

रत्नालङ्कृत-हेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै–
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः।
आताम्रज्वलदुज्ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा,
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः॥

महति कनकपात्रे स्थापयित्वाः विशालान्,
डमरु-सदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान्।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पैर्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्त्तिकं ते।।
न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।
(इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्।)

मन्त्रपुष्पम्

शिवे शिवशुशीतलामृततरङ्गगन्धोलस–
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः।।
इति उक्त्वा पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्।
(इत्येते कतिचिच्चतुष्षष्ट्युपचारातिरिक्ता उपचारास्तु पूर्ववत् धूपदीपे–तिसूत्रगतेनादिपदेन गृह्यन्ते।)

प्रदक्षिणा

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति।
तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां-प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।
(इति प्रदक्षिणां विभाव्य[२] नमस्कुर्यात्–)
रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानी-पदपङ्कजाभ्याम् ।।
कञ्जासनादि-सुरवृन्दलसत्किरीटकोटिप्रघर्षण-समुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे ।
त्वामेव यामि शरणं विगतात्यभावं,दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन।।
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतंसमानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतुः।।
महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं, स्वतो न्यस्तबिन्दुं स्वयं न्यस्तहार्दम्।
भवद्वक्त्र-वक्षोज-गुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद् भावयेत् स त्वमेव।।
तथाऽन्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयं ते।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः।।

मिहिरबिन्दुमुखीं तदधो लसच्छशि-हुताशन-बिन्दुयुगस्तनीम्।
हसपरार्धकलारचनास्पदां भजत नित्यमिमां परदेवताम्।।
अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये।।

कामकलाध्यानम्

अथ बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन स्तनौ सपरार्धेन योनिरिति सानुस्वारे तुरीयस्वरे कामकलात्मिकां ध्यात्वा, सौः इति देवीशक्तिबीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भायेत्।

होमस्य कृताकृतत्वम्

अथ होमः। स च "यद्यग्निकार्यसम्पत्तिः" इति सूत्रगतेन यदिशब्देन कृताकृतः सूचितः। तस्य च करणपक्षे तदितिकर्तव्यता होमप्रकरणाद् ज्ञातव्या। तत्र महाव्याहृतिहोमादर्वागेव बलिदानम्। होमाकरणपक्षे तु बलिदानमात्रम्।

बलिदानविधिः

यथा—देव्या दक्षभागे सामान्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य, ३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्घभक्त-पूरितोदकं सक्षीरादित्रयं पात्रं तत्र विन्यस्य।

३ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा, इति मन्त्रं त्रि पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्वा वाम प्राष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो वाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्रासितं विभाव्य, प्रणमेत्।

इति बलिदानविधिः।

प्रदक्षिणा

अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमाः।
वेदार्धचन्द्रवह्न्यद्रिसंख्याः स्युः सर्वसिद्धये।।

अथ जपप्रकारणोक्तविधिना जपं निर्वर्त्य स्तुवीत—

पुष्पाञ्जलि स्तोत्रम्

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लसन्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः॥
समस्तमुनियक्षकिम्पुरुषसिद्धविद्याधरगुहासुरसुराप्सरोगणमुखैर्गणैः सेविते।
निवृत्तितिलकाम्बरप्रकृतिशान्तिविद्याकलाकलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः॥
त्रिवेदकृतविग्रहे त्रिविधकृत्यसन्धायिनि त्रिरूपसमवायिनि त्रिपुरमार्गसञ्चारिणि।
त्रिलोचनकुटुम्बिनि त्रिगुणसंविदुद्यत्पदे त्रयि त्रिपुरसुन्दरि त्रिजगदीशि पुष्पाञ्जलिः॥
पुरन्दरजलाधिपान्तककुबेररक्षोहरप्रभञ्जनधनञ्जयप्रभृतिवन्दनानन्दिते।
प्रवालपदपीठिकानिकटनित्यवर्तिस्वभूविरिञ्चिविहितस्तुते विहित एष पुष्पाञ्जलिः॥
यदानतिबलादलङ्कृतिरुदेति विद्यावयस्तपोद्रविणसौरभाकृतिकवित्वसविन्मयी।
जरामरणजन्मजं भयमपैति तस्यै समाहिताखिलसमीहितप्रसवभूमि तुभ्यं नमः॥
निरावरणसंविदुद्गमपरास्तभेदोल्लसत्पदास्पदचिदेकतावरशरीरिणि स्वैरिणि।
रसायनतरङ्गिणीरुचितरङ्गञ्चारिणि प्रकामपरिपूरणि प्रसृत एष पुष्पाञ्जलिः॥
तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदं सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः।
क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणतिरम्ब तस्यै सदा शिवङ्करि शिवे परे शिवपुरन्ध्रि तुभ्यं नमः॥
त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा त्वमायुरपरं त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कला।
त्वमेव वपुषःस्थितिस्त्वखिलायतिस्त्वं गुरुः प्रसीद परमेश्वरि प्रणतिपात्रि तुभ्यं नमः॥

कञ्जासनादिसुरवृन्दलसत्किरीट कोटिप्रघर्षणसमुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे।
त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन॥
महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं स्वतो न्यस्तविन्दुं स्वयं न्यस्तहार्दम्।
भवद्वक्त्रवक्षोजगुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद्भावयेत् स त्वमेव॥
तथान्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय विन्दुत्रयन्ते।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः॥

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्लक्ष्मी स्वयम्वरणमङ्गलदीपिकाभिः।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्॥१॥
एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रें।
सान्निध्यमुद्यदरुणायतसोदरस्यत्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य॥ २॥
ईशित्वभावकलुषाः कतिनाम सन्ति ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति॥३॥
लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम्
कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु ॥४॥
ह्रीङ्कारमेव तव नाम गृणन्ति वेदाः मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
यत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः॥५॥
हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः क्रूरः कथन्नु भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय किल मातरिदं तववार्धं देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य॥६॥
सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरूहयोः प्रणामः।
किञ्चि स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति॥७॥
कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनार्थं त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम्॥८॥
हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरमि त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव॥९॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानामालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित्।।
नूनं मयापि सदृशः करुणैकपात्रं जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा।।१०।।
ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां जनानां किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे।
मालाकिरीटमदवारणमाननीयां स्तान् सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः।।११।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरितौघहरोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्।।१२।।
कल्पोपसंहरणकल्पिततताण्डवस्य देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य।
पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका।।१३।।
लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम्।।१४।।
ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासभूले।
त्वत्तेजसा परिणतं जगदादिमूलं सङ्गं तनोतु सरसीरुहसङ्गमस्य।।१५।।

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितं
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगाः लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणीनिर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः।।१६।।

सर्वसिद्धिकृत् स्तोत्रम्

३ गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्।।१।।

प्रणमामि महादेवीं मातृकां परमेश्वरीम्।
कालहल्लोहलोल्लोलकलनाशमकारिणीम्।। २।।
यदक्षरैकमात्रेऽपि संसिद्धे स्पर्धते नरः ।
रविताक्ष्र्येन्दुकन्दर्पशङ्करानलविष्णुभिः ।। ३।।
यदक्षरशशिज्योत्स्नामण्डितं भुवनत्रयम् ।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं महाश्रीसिद्धमातृकाम्।। ४।।
यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं तां वन्दे सिद्धमातृकाम्।। ५।।
यदेकादशमाधारं बीजं कोणत्रयोद्भवम्।
ब्रह्माण्डदिकटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते ।। ६।।
अकचादिटतोन्नद्धपयशाक्षरवर्गिणीम्।
ज्येष्ठाङ्गबाहुहृत्पृष्ठकटिपादनिवासिनीम् ।। ७।।
तामीकाराक्षरोद्धारां सारात् सारां परात् पराम्।
प्रणमामि महादेवीं परमानन्दरूपिणीम् ।। ८।।
अद्यापि यस्या जानन्ति न मनागपि देवताः।
केयं कस्मात् क्व केनेति सरूपारूपभावनाम्।। ९।।
वन्दे तामहमक्षय्यामकाराक्षररूपिणीम्।
देवीं कुलकलोल्लासप्रोल्लसन्तीं परां शिवाम्।। १०।।
वर्गानुक्रमयोगेन यस्यां मात्रष्टकं स्थितम्।
वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्ध्यष्टकेश्वरीम्।। ११।।

कामपूर्णजकाराख्यश्रीठान्तर्निवासिनीम्।
चतुराज्ञाकोशमूलां नौमि श्रीत्रिपुरामहम्॥ १२॥
इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत्।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तथ्यतः॥
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे॥
जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलिसितम्॥
पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्बान्धवजनः
प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम्।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः॥
दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः॥
हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि।

वे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे

हे श्रीमल्ललिताम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम्॥

नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते

नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे।

नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये

नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते॥

जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये

जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे।

जय जय निखिलार्थदानशौण्डे

जय जय हे ललिताम्बचित्सुखाब्धे ॥

षडङ्गदेवतां नित्यां दिव्या द्योघत्रयीगुरून्।

नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥

अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः॥

अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥

अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने॥

यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणम् ॥

बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम्॥

मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम्॥

एवामादिभिरन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिरखिललोकतातरमभिष्टुत्य शक्तिं पूजयेत्।

सुवासिनीपूजनम्

यथा प्राङ्निमन्त्रितां गौरीरूपिणीं दीक्षितां सुवासिनीं प्रक्षालितपादामासन उपवेशयेत्। सा चेददीक्षिता तदा ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा, इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वकं सामान्यसलिलेन त्रिः शक्तिं सम्प्रोक्ष्य ३ **ॐ शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु प्रणश्यत्वशुभञ्च यत् यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु,** इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृल्लेखां जपेत्। अथ तां देवतारूपां विभाव्य ३ ऐं क्लीं सौ शक्त्यै अमुकं समर्पयामि इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमचन्दनपट्टवासः पुष्पधूपदीपनैवेद्य-ताम्बूलानि वसनाभरणानि च दद्यात्। समस्तप्रकटयोगिनीत्यादिसमष्टिमन्त्रेण श्रीदेव्यै आवरणदेवताभ्यश्च दत्तपुष्पाञ्जल्याः तस्याः करे विशेषार्घ्यादमृतं पात्रान्तरे कृत्वा समर्पयेत्। साप्युत्थाय तदादाय शिरसि गुरुपादुका मन्त्रेण गुरुं त्रिरिष्ट्वा हृदि देवीञ्च सन्तर्प्य मूलेन, गुर्वाज्ञां गृहीत्वा मूलान्ते सर्वतत्त्व शोधयामि नमः स्वाहा, इति मन्त्रेण सर्वतत्त्वं संशोधयेत्। ततश्च तत्स्वीकुर्य्यात्। पश्चात्तां भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तर्प्य विसृजेत्।

तत्त्वशोधनम्

३ क—५ प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्श्रोत्रत्वक्चक्षुः-जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपाद-पायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूम्यात्मना अं....अः

३ क—५ आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। आत्मा में शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ ह—६ मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना कं......मं ३ ह—६ विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। अन्तरात्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ स—४ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं.....क्षं शिवतत्त्वेन कार्मणमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। परमात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ 'मलं' प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्श्रोत्रत्वक्चक्षुः-जिह्वाघ्राणवाक्पाणि-पादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमायाकलाऽविद्या-रागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्माना अं आं..ळं क्षं 'मूलं सर्वतत्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। ज्ञानात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।❖

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। सोऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

इति (गुरौ सन्निहिते होष्यामि इति सम्प्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्ध्वा) चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्। ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य।

३ देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पात्रं पूर्णतरं कुरु।।

इति गुरवे समर्पयेत्। असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रमण्डले निक्षिपेत्।

देवतोद्वासनम्

ततः सामान्यार्घ्योदकात् किञ्चिदादाय—

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम।।

इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य—

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
पाहि पाहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरांकुरु।।

शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि त्रिःपरिभ्राम्य तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानात्मानञ्च 'मूलेन' प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात्। ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि यन्मयाऽऽचरितं शिवे।

❖ षोडश्युपासकानां पञ्चमपात्रेण—

३ 'मूलं' पूर्णमद पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।

इति क्षमाप्य सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्याङ्गे विलयं विभाव्य, खेचरीं बद्ध्वोद्वास्य तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववत् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्तिं पञ्चधोपचर्य पुनरात्माभिन्नसंविद्रूपेण विभावयेदिति विसर्जनम्। ततः

। शान्तिस्तवः।

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः।।

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्।।
शिवाद्यवनिपर्यन्तं बह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु।।

इत्यादि शान्तिश्लोकान् पठित्वा, विशेषार्घ्यविसर्जनं कुर्यात्।

विशेषार्घ्यपात्रं मूलेनामस्तमुद्धृत्य तत् क्षीरं पात्रान्तरेणादाय ''आर्द्रा ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्मामस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा' इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्वा तत्पात्रमन्यानि च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्याग्नौ प्रताप्यावस्थापयेत्।

अथ यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत।

इति नित्यसपर्याविधिः।।

श्रीचक्रे त्रिवृत्तार्चनम्

सम्प्रदायविशेषज्ञानां रीत्या हयग्रीवसम्प्रदाये श्रीचक्रे वृत्तत्रयं नोल्लिख्यते। आनन्दभैरवसम्प्रदाये वृत्तत्रये लिखितेऽपि तत्रार्चनं न भवति। श्रीदक्षिणामूर्तिसम्प्रदाये वृत्तत्रयमुल्लिख्यते पूज्यते च।

तद्यथा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राय नमः। संहारक्रमेण शुक्लारुण–

कृष्णवर्णरेखात्रयस्य मायाबीजप्रकृतिकस्य गुणप्रकृतिपरादिवागात्मकस्य प्रथमवृत्तरेखायां देव्यग्रमारभ्याप्रादक्षिण्येन।

(१)	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	कं	कालरात्रि	श्रीपादुकां	पूजयामि।
(२)	,, ,,	खं	खण्डिता	,,	,, ।
(३)	,, ,,	गं	गायत्री	,,	,, ।
(४)	,, ,,	घं	घण्टाकर्षिणी	,,	,, ।
(५)	,, ,,	ङं	ङार्णा	,,	,, ।
(६)	,, ,,	चं	चण्डा	,,	,, ।
(७)	,, ,,	छं	छाया	,,	,, ।
(८)	,, ,,	जं	जया	,,	,, ।
(९)	,, ,,	झं	झङ्कारिणी	,,	,, ।
(१०)	,, ,,	ञं	ज्ञानरूपा	,,	,, ।
(११)	,, ,,	टं	टङ्कहस्ता	,,	,, ।
(१२)	,, ,,	ठं	ठङ्कारिणी	,,	,, ।
(१३)	,, ,,	डं	डामरी	,,	,, ।
(१४)	,, ,,	ढं	ढङ्कारिणी	,,	,, ।
(१५)	,, ,,	णं	णार्णा	,,	,, ।
(१६)	,, ,,	तं	तामसी	,,	,, ।
(१७)	,, ,,	थं	स्थाण्वी	,,	,, ।
(१८)	,, ,,	दं	दाक्षायणी	,,	,, ।
(१९)	,, ,,	धं	धात्री	,,	,, ।
(२०)	,, ,,	नं	नारी	,,	,, ।
(२१)	,, ,,	पं	पार्वती	,,	,, ।
(२२)	,, ,,	फं	फट्कारिणी	,,	,, ।
(२३)	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	बं	बन्धिनी	श्रीपादुकां	पूजयामि।
(२४)	,, ,,	भं	भद्राकाली	,,	,, ।

(२५) ,,	,,	मं महामाया	,,	,, ।
(२६) ,,	,,	यं यशस्विनी	,,	,, ।
(२७) ,,	,,	रं रक्ता	,,	,, ।
(२८) ,,	,,	लं लम्बोष्ठी	,,	,, ।
(२९) ,,	,,	वं वरदा	,,	,, ।
(३०) ,,	,,	शं श्री	,,	,, ।
(३१) ,,	,,	षं षण्ढा	,,	,, ।
(३२) ,,	,,	सं सरस्वती	,,	,, ।
(३३) ,,	,,	हं हंसवती	,,	,, ।
(३४) ,,	,,	क्षं क्षमावती	,,	,, ।

द्वितीयवृत्तरेखायाम्—अप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं		अं अमृता	श्रीपादुकां	पूजयामि।
(२) ,,	,,	आं आकर्षिणी	,,	,, ।
(३) ,,	,,	इं इन्द्राणी	,,	,, ।
(४) ,,	,,	ईं ईशानी	,,	,, ।
(५) ,,	,,	उं उमा	,,	,, ।
(६) ,,	,,	ऊं ऊर्ध्वकेशी	,,	,, ।
(७) ,,	,,	ऋं ऋद्धिदा	,,	,, ।
(८) ,,	,,	ॠं ॠकारा	,,	,, ।
(९) ,,	,,	ऌं ऌकारा	,,	,, ।
(१०) ,,	,,	ॡं ॡकारा	,,	,, ।
(११) ,,	,,	एं एकपदा	,,	,, ।
(१२) ,,	,,	ऐं ऐश्वर्यात्मिका	,,	,, ।
(१३) ,,	,,	ओं ओङ्कारा	,,	,, ।
(१४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं		औं औषधि	श्रीपादुकां	पूजयामि।
(१५) ,,	,,	अं अम्बिका	,,	,, ।
(१६) ,,	,,	अः अक्षरा	,,	,, ।

तृतीयवृत्तरेखायामप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं		अं कामेश्वरी	श्रीपादुकां	पूजयामि।
(२) ,,	,,	आं भगमालिनी	,,	,, ।
(३) ,,	,,	इं नित्यक्लिन्ना	,,	,, ।
(४) ,,	,,	ईं भेरुण्डा	,,	,, ।
(५) ,,	,,	उं वह्निवासिनी	,,	,, ।
(६) ,,	,,	ऊं महावज्रेश्वरी	,,	,, ।
(७) ,,	,,	ऋं शिवदूती	,,	,, ।
(८) ,,	,,	ॠं त्वरिता	,,	,, ।
(९) ,,	,,	ऌं कुलसुन्दरी	,,	,, ।
(१०) ,,	,,	ॡं नित्या	,,	,, ।
(११) ,,	,,	एं नीलपताका	,,	,, ।
(१२) ,,	,,	ऐं विजया	,,	,, ।
(१३) ,,	,,	ओं सर्वमङ्गला	,,	,, ।
(१४) ,,	,,	औं ज्वालामालिनी	,,	,, ।
(१५) ,,	,,	अं चित्रा	,,	,, ।
(१६) ,,	,,	अः ललितामहानित्या	,,	,, ।
(१७) ,,	,,	कामेश्वरी	,,	,, ।

एता मातृकायोगिन्यः त्रिवर्गसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्त्विति तासां समष्ट्यर्चनं विधाय कालरात्र्याः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेशिनी-चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। गं गरिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनिमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनिमुद्रां प्रदर्श्य—

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

एतद्रीत्या सर्वाशापरिपूरकचक्रे तृतीयावरणम्। तथा च दशावरणानि सम्पद्यन्ते।

अन्तश्चक्रन्यासेऽपि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै कालरात्र्यादिसहितमातृका योगिनीरूपायै त्रिपुरेशिनीदेव्यै नमः। इति त्रिवृत्तार्चनम्।

श्रीचक्रस्वरूपम्

अधः सहस्रारोपरिभागे—

सृष्टिस्थितिसंहारक्रमेण श्रीचक्रार्चनमधिकारभेदेन भवति।

यथोक्तम्—

'स्थितिक्रमो गृहस्थस्य संहारो वनिनो यतेः।
ब्रह्मचारिण उत्पत्तिः स्त्रियः शूद्रस्य चेष्टतः।।'

दक्षिणामूर्तिसम्प्रदाये बिन्दुमारभ्यभूपुरपर्यन्तं सृष्टिक्रमेणार्चनम्। भूपुरमारभ्याष्टारपर्यन्तं पुनश्च बिन्दुमारभ्य चतुर्दशारं यावत् पूजनं स्थितिक्रमे। भूपुरमारभ्यबिन्दुपर्यन्तमर्चनं संहारक्रमे।

हयग्रीवानन्दभैरवसम्प्रदाययोश्च स्थितिक्रमे पूर्वं बिन्दुत्रिकोणकामेश्वर्यादिनित्या-गुरुपंक्ति पूजनम्, तदनुभूपुरमारभ्य क्रमेणाष्टारत्रिकोणपूजनम्। अन्यत् समानम्।

बिन्दुमाभ्य अष्टदलपर्यतं सृष्टिचक्रं, चतुर्दशारमाभ्यान्तर्दशारं यावत्, स्थितिचक्रं, अष्टारमारभ्य बिन्दुं यावत् संहारचक्रम्, तादृक् चक्रत्रयस्य त्रिपुरस्वरूपत्वम्, तत्प्रधाननायिकात्वेन ललिता पराम्बा त्रिपुरसुन्दरी प्रोच्यते।

भूपुर-वृत्त-त्रिकोणादपरे गुणत्रयकालत्रयावस्थात्रयलोकत्रयादि बोधकाः। बिन्दुस्तुरीयरूपस्तुरीयातीतरूपो वा। पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यात् श्रीचक्रस्य-ब्रह्माण्डरूपत्वं पिण्डरूपत्वञ्च। प्रणवस्वरूपशब्दब्रह्मणोऽपि प्रतीकस्वरूपम् श्रीचक्रम्। तद्रीत्या (अ, उ, म्) इति नादविन्दुत्रयस्य प्रणवस्य जाग्रदाद्याश्चतस्त्रोऽवस्थाः वैखरीमध्यमा-पश्यन्ती-परारूपाणि, श्रीचक्रस्य सृष्टि-स्थितिसंहानाख्याचक्रेष्वन्तर्भवन्ति। पञ्चमं कार्यकारणातीतं भासा चक्रात्मकं

भवति।

शरीरस्य मूलाधार-स्वाधिष्ठान-मणिपूरनाहत-विशुद्ध्याज्ञारूपाणां चक्राणामपि श्रीचक्रावयवेश्वन्तर्भावः। भूपुर-त्रिवृत्तषोडश दलाष्टदलानां समुदायः सृष्टिचक्रं चतुर्दशारबहिर्दशारान्तर्दशाराणां समूहः स्थितिचक्रं अष्टार-त्रिकोणबिन्दूनां समवायः संहारचक्रम्। तेषां समष्टौ द्वितीयबिन्दुं यावदनाख्या चक्रम्, तृतीयबिन्दुं यावत् भासाचक्रम्। श्रीकल्पे पञ्चानामेषां क्रमेण स्वाधिष्ठान-मणिपूर-अनाहत-विशुद्धि-आज्ञा-चक्रेष्वन्तर्भावः।

कालीक्रमे सृष्टिचक्रं मूलाधारे भवति।

तत्रापि—**'चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि'**। **'चतुर्भिः शिव चक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः। नवचक्रैश्च संसिद्धं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः॥'** इत्यादिरीत्या त्रिकोणाष्टकोण-दशारद्वय चतुर्दशारञ्च शक्तिचक्राणि। विन्द्वष्ट दलकमलषोडशदलकमल-चतुरस्रत्रयाणि चत्वारि शिवचक्राणि। त्रिकोणे-नाष्टदलम् अष्टारेण षोडशदलम् अन्तर्दशार-बहिर्दशाराभ्यां भूपरं चतुर्दशारेण संश्लिष्टम्। तत एवैषामविनाभावसम्बन्धः।

'त्रिकोणमष्टाकोणञ्चदशकोणद्वयं तथा।
चतुर्दशारं चैतानि शक्तिचक्राणि पञ्च च॥
बिन्दुश्चाष्टदलं पद्मं पद्मं षोडशपत्रकम्।
चतुरस्रञ्च चत्वारि शिवचक्राण्यनुक्रमात्॥
त्रिकोणे बैन्दवं श्लिष्टमष्टारेऽष्टदलाम्बुजम्।
दशारयोः षोडशारं भूगृहं भुवनास्रके॥'

एवमेव श्रीविद्यापञ्चदश्यामपि ककारत्रयं हकारद्वयञ्च शैवो भागः। ह्रींङ्कारश्चोभयात्मकः। शेषाणिशक्त्यक्षराणि।

'कत्रयं हद्वयञ्चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः।
शेषाणिशक्त्यक्षराणि ह्रींङ्कार उभयात्यकः॥'

बिन्दुचक्रे सत्यलोकः, त्रिकोणे तपोलोकः, अष्टकोणे जनलोकः अन्तर्दशारे महर्लोकः बहिर्दशारे स्वर्लोकः, चतुर्दशारे भुवर्लोकः, प्रथमवृत्ते

भूलोकः।

अष्टदलेऽतलम्, अष्टदलबहिर्वृत्ते वितलं, षोडशदलकमले सुतलम् वृत्तत्रये तलातलम्, भूपुरप्रथमरेखायां महातलम्, द्वितीयरेखायां रसातलम्, तृतीयरेखायां पातालम्।

श्रीचक्रमहिमा

ब्रह्मेन्द्रादि देवाः, सूर्यचन्द्रादि ग्रहाः, अश्विन्यादि-नक्षत्राणि, मेषादि-राशयः, वस्वादयो नागाः, वरुणवैनतेयादयो मन्दारादयो वृक्षाः, रम्भाद्यप्सरसः, कपिलादयः सिद्धाः, वसिष्ठाद्याः मुनीश्वरा, कुबेरप्रमुखा यक्षाः, राक्षसाः गन्धर्वाः, किन्नराः विश्वावस्वादयो गायकाः, ऐरावताद्या गजेन्द्राः, उच्चैःश्रव आद्याश्वाः, हिमालयाद्याः पर्वताः, गङ्गाद्याः पुण्यनद्यः, सर्वे समुद्राः, सर्वाणि नगरराष्ट्राणि सर्वाण्येतानि श्रीचक्रोत्पन्नानि।

बिन्दु ब्रह्मरन्ध्रे, त्रिकोणं मस्तके, ललाटे-अष्टकोणं, भ्रूमध्ये अन्तर्दशारम्, कण्ठे-बहिर्दशारं, हृदये-अन्तर्दशारं, कुक्षौ-वृत्तं, नाभौ अष्टदलं, कट्याम्-अष्टदलबहिर्वृत्तम्, स्वाधिष्ठाने षोडशदलं, मूलाधारे बहिस्त्रिवृत्तं, जान्वोः-भूपुरस्य प्रथमरेखा, जङ्घायां द्वितीयरेखा, पादयोः भूपुरस्य तृतीयरेखा।

'त्रिपुरेशीमहायन्त्रं पिण्डात्मकमीश्वरि।
यो जानाति स योगीन्द्रः स शम्भुः स हरिर्विधिः॥
पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्य विशेषतः।
ज्ञात्वाशम्भुफलावाप्तिः नाल्पस्य तपसः फलम्॥'

(इति योगिनीहृदये)

तथैव मन्त्रयन्त्रयोरप्यैक्यम्। लकारेण भूपुरं सकारेण षोडशदलम्, हकारेणाष्टमूर्त्यात्मकमष्टदलम्, भुवनेश्वरीरूपेणेकारेण चतुर्दशारम्, एकारेण दशावतारात्मकं बहिर्दशारम्, हल्लेखागतेन रेफेणान्तर्दशारम्, ककारेणाष्टरम्, अर्धचन्द्रेण त्रिकोणम्, तदन्तर्गता देव्यस्तत्त्वानि च तन्मयान्येव।

नादरूपाया अर्धमात्रायाः सकाशात् त्रिकोणा योनिरुत्पद्यते। बिन्दो-बिन्दुचक्रम्। बिन्दुचक्रं च कामेश्वरस्वरूपम्, तदेव च विश्वाधारस्वरूपम्।

श्रीविद्यान्तर्गतलंबीजरूपाल्लकारात्पृथिवी–तदन्तवर्तिवृक्षपर्वतादय-उत्पद्यन्ते। तत एव एकपञ्चाशत्पीठानि सर्वतीर्थानि गङ्गाद्यानद्यः पुण्यक्षेत्राणि चोत्पद्यन्ते। मन्त्रस्थितसकारात् चन्द्र-नक्षत्र-ग्रह-राश्यादय उत्पद्यन्ते।

'गणेशग्रहनक्षत्र–योगिनीराशि– रूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्।।

इति नित्याषोडशिकार्णवतन्त्रात्।

हं बीजरूपादाकाशस्य, भुवनेश्वरीबीजरूपादीकाराच्चतुर्दशभुवनाना-मुत्पत्तिः। दशावतारविष्णुस्वरूप एकारः वैष्णवीशक्तिरूपः। रं बीजरूपो-रेफः परमज्योतिर्मयीपराशक्तिः। ककारात्सर्वकामपूरणी कामदा शक्तिर्गृह्यते। अर्धचन्द्रात् (ँ) विश्वयोनिर्गृह्यते। बिन्दोः (ं) महाकामेश्वरी व्यज्यते। बिन्दुरेव सर्वानन्दमयचक्रं तच्चब्रह्माभिन्नम्। तत्रैव महाकामेश्वरीमहाकामेश्व-रयोर्वासः। तत्पदार्थभूतं निर्गुणब्रह्म महाकामेश्वरः, त्वं पदार्थभूत संविद्रूपः कूटस्थः साक्षी महाकामेश्वरीरूपः तयोरभेद एव सामरस्यम्। तत एव ज्ञातृज्ञेययोरहन्तेदन्तोः प्रकाशविमर्शयोश्चैक्यम्। भूमि बिन्दुचक्रं तत्रत्या परापरातिरहस्यायोगिनी भवति। तत्रैव तुरीयाम्बायजनम्। सर्वानन्दमयचक्रमे-वोड्याणपीठोऽप्युच्यते। तत एवोड्याणपीठनिलयैव बिन्दुमण्डलवासिनी भवति।

अथ जपविधिः

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ आनन्दभरवाऋषये नमः– शिरसि। ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः– मुखे। ३ श्रीमहत्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः–हृदि। ३ ऐं बीजाय नमः– गुह्ये। ३–सौः शक्तये नमः– पादयोः। ३ क्लीं कीलकाय नमः–नाभौ। (उक्तबीजशक्तिकीलकानि नाभिगुह्यपादेषु प्रायशो न्यस्तव्यनीति, मूलविद्याखण्डत्रयेणापि न्यस्तव्यानीति च केषाञ्चिदभिमतम्)। ३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः–करसम्पुटे।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलविद्यया सर्वाङ्गे त्रिव्यापकम्।

३	क ए ई ल ह्रीं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
३	ह स क ह ल ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा।
३	स क ल ह्रीं	मध्यमाभ्यां वषट्।
३	क ए ई ल ह्रीं	अनामिकाभ्यां हुं।
३	ह स क ह ल ह्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
३	स क ल ह्रीं	करतलकरपृष्ठाभ्यां फट।

एवं हृदयादिन्यासः। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं	क ए ई ल ह्रीं	हृदयाय नमः।
३	ह स क ह ल	ह्रीं शिरसे स्वाहा।
३	स क ल ह्रीं	शिखायै वषट्।
३	क ए ई ल ह्रीं	कवचाय हुम्।
३	ह स क ह ल ह्रीं	नेत्रत्रयाय वौषट्।

३ स क ल ह्रीं अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरों इति दिग्बन्धः अथ ध्यानम्। तच्च पूर्वोक्तमेव।

श्रीषोडशाक्षर्यास्तु दक्षिणामूर्तिः ऋषिः। करषडङ्गन्यासयोः तत्कूटषट्कमिति विशेषः।

ततः शक्त्युत्थापनमुद्रया स्वदेहे शून्यतां विभाव्य बिन्दुत्रयसपरार्धरूपां कामकलां विचिन्त्य तस्याः स्वात्मतया परिणामं श्रीगुरुमुखावगतं विभाव्य श्रीगुरुदेवतामन्त्रात्मनामैक्यं भावयेत्। अथ मूर्ध्नि शिरोमुद्रां न्यस्य ३ ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा, इति द्वादशाक्षरीं कुल्लुकाविद्यां, ततो हृदयमुद्रया (हृदि हस्तं दत्वा) ३ ॐ इत्येकाक्षरं सेतुम्, अथ कण्ठे न्यासमुद्रया ३ ह्रीं इत्येकाक्षरं महासेतुम्, तदनु नाभौ पूर्वमुद्रयैव ३ ॐ अं... क्षं (५१) ऐं मूलं ऐं अं क्षं (५१) इति एकविंशाधिकैकशताक्षरं निर्वाणमन्त्रञ्च त्रिस्त्रिः जपेत्। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं, इति कामेश्वरीमन्त्रं स्वाधिष्ठाने त्रिः जपेत्।

३ ईं इति कामकलामन्त्रं मूलाधारे त्रिः जपेत्।

३ समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्य-

परापरातिरहस्ययोगिनीभ्यो नमः इति समष्टिमन्त्रं जपेत्।

३ ई ए क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं
इति पञ्चदशाक्षरमुत्कीलनं सप्तवारं जपेत्।

३ विद्युदक्षीं परां विद्यां कालिकां देशभाषिणीम्।
खड्गमुण्डविकाराख्यां व्याघ्रचर्मविभूषिताम्।।
रक्तमाल्याम्बरधरां घोररूपां चतुर्भुजाम्।
खड्गं शूलं कपालञ्च दधतीं तीक्ष्णनासिकाम्।
सिद्ध्यर्थं चिन्तयेद्देवीं सर्वविद्यासुजीविनीम्।।

इति सञ्जीविनीं ध्यात्वा पञ्चधोपचर्य, ३ श्रीं क्लीं क्लीं हैं हैं क ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं इति सप्तदशाक्षरं सञ्जीविनीमन्त्रं सप्तवारं जपेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं सः क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं हं सः ह्रीं श्रीं, इति त्रयोविंशत्यक्षरं प्राणमन्त्रं सप्तवारं जपेत्।

३ ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह स क ह ल ह्रीं ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ह क ल ए ह्रीं ह क ह ल ह्रीं ह ए क ल ह्रीं, ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं क ह ल ए ह्रीं क ह ए ल ह्रीं क ह ह ल ह्रीं हंसः, ॐ ह्रीं श्रीं हं सः सोऽहं स क ल ह्रीं, इति चतुः सप्तत्यक्षरं दीपिनीमन्त्रञ्च प्रत्येक सप्तवारं जपेत्। (इमे मन्त्राः पञ्चदशीषोडशीनां साधारणाः)।

महाषोडशाक्षर्या असाधारणाः पञ्चमन्त्रा। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं, स ह क्ष म ल व र यीं, य र ल व क्ष म ल वर यूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं इति महाकामेश्वरमन्त्रं दशवारं जपेत्।

३ (पञ्चदशी) क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। त्रिवारं जपेत्।१।।

३ (षोडशी) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं, त्रिवारं जपेत्।। २।।

ऐं क्लीं सौः बालायै नमः त्रिवारं जपेत्।। ३।।

३ ऐं क्लीं उच्छिष्टचाण्डालि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा—त्रिवारं जपेत्।। ४।।

३ ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा, त्रिवारं जपेत्।। ५।। **एते पञ्च मन्त्राः पञ्चरत्नपदेन उच्यन्ते।**

(ततः सूतकनिवारणाय प्रणवसम्पुटितां मूलविद्यां (पञ्चदशीं) दशवार—मावर्त्यानन्तरं विघ्नहरान् षण्मन्त्रान् त्रिस्त्रिर्जपेत्।) यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, इ रि मि लि कि रि कि लि प रि मिरोम्।

३ ॐ नमो भगवति महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुररक्षां कुरु कुरु।

३ संहर संहर विघ्नरक्षोविभीषकान् कालय हुं फट् स्वाहा।

३ ब्लूं रक्ताभ्यो योगिनीभ्यो नमः।

३ सां सारसाय बह्वाशनाय नमः।

३ दु मु लु षु मु लु षु ह्रीं चामुण्डायै नमः।

एते कुल्लूकाद्या विघ्नहरान्ता जपस्य पूर्वाङ्गमन्त्राः।

(त्रितारीपूर्वकत्वन्तु सर्वेषां सिद्धमेव)।

३ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति त्रिपुरसुन्दरि स्वाहा, कुलुकां शिरसि, ॐ, सेतुं हृदि, द्रीं महासेतुं कण्ठे, ह्रीं महासेतुं सहस्रारे, ॐ श्रीं अं एं क्लीं सौः अं आं इं ईं उं ऊं.......क्षं इति निर्वाणं नाभौ, क्लीं कामबीजं लिङ्गे, जिह्वायां मूलविद्यां विचिन्त्य जपेत्।

ततः पेशीच्छन्नां सुवर्णरत्नस्फटिकमणिपुत्रजीवरुद्राक्षाद्यन्यतमनिर्मितां मालां श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन संस्कारविधिना संस्कृतामादाय, क्वचित्पात्रे वामपाणौ वा निधाय, सामान्यार्घ्योदकेन शुद्धोदकेन वा मूलेनाभ्युक्ष्य,

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

इति प्रार्थ्य, ह्रीं सिद्ध्यै नमः, इति मन्त्रेण पुनः पुनः आवृत्तेन गन्धादिभिः पञ्चभिः गन्धपुष्पाभ्यामेव वा सम्पूज्य,

ऐं ह्रीं श्रीं गं **अविघ्नं कुरु माले त्वं करे गृह्णामि दक्षिणे।**
जपकाले तु सततं प्रसीद मम सिद्धये॥

इति दक्षिणहस्तेन मालां गृहीत्वा मध्यमामध्यपर्वावलम्बिनीं ता तर्जन्या वामहस्तेन चास्पृशन् एकमणिग्रहण अन्यमनुपाददानः क्रमादङ्गुष्ठाग्रेण मणीन् परिवर्तयन् जृम्भाक्षुताद्यकुर्वन् अनिद्राणः, एतेषां सम्भवे—आचम्य देवतात्मत्वं भावयन्, मालामपातयन् प्रमादपतितायामुक्तसंस्कारं कृत्वा खटखटाशब्दमकुर्वाणः अश्लिष्टमनुमुच्चारयन् असम्भाषमाणो मालामप्रदर्शयन् अन्यदप्युक्तमाचरन् श्रीगुरुमुखादवगतं षडर्थाद्यन्यतममर्थं चतुर्विधैक्यशून्यषट्कावस्थापञ्चकविषुवत्सप्तकमन्त्रचैतन्यादिरहस्यजातं चानु-सन्दधानो यथाऽधिकारं मनसोपांशुना वा सहस्रं त्रिशतं शतं वा मूलविद्या-मारम्भे प्रोक्तसंख्यावधौ च प्रणवपुटितां सकृज्जपित्वा उत्तराङ्गमन्त्रान् जपदशांस्तमावर्तयेत्।

जपोत्तराङ्गमन्त्राः

ते तु त्रिपुराद्यष्टचक्रेश्वरीमन्त्रा अष्टौ—

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः, ३ ऐं क्लीं सौः, ३ ह्रीं क्लीं सौः, ३ हैं ह्क्लीं ह्सौः, ३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः, ३ ह्रीं क्लीं ब्लें, ३ ह्रीं श्रीं सौः, ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः।

मूलमेकं—ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं।

तत्तत्तिथिनित्याविद्या—ताश्च शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादिचित्रान्ताः। कृष्णपक्षे तु चित्रादिकामेश्वर्यन्ताः। तिथिवृद्धावेकां नित्यां दिनद्वये तिथिक्षये एकस्मिन् दिवसे नित्याद्वयम्, इति क्रमेण जप्याः। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अं ऐं स क ल ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः।

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदारि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नत्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय

अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ह्रब्लें ह्रीं।

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा:।

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा।

३ उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः।

३ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं।

३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

३ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट्।

३ लृं ह स क ल र डैं हस क ल र डीं ह स क ल र डौः।

३ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं।

३ ऐं भ्म्र्यूं।

३ ॐ स्वौं।

३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा।

३ अं च्क्लौम्।

अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गीभूता बाला, अन्नपूर्णा, अश्वारूढा इति त्रयो वक्ष्य–माणाश्चेति मन्त्राः त्रयोदश।

३ ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः, इति श्रियोऽङ्गबाला।

३ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णेश्वरि ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा, इति श्रिय उपाङ्गमन्नपूर्णा।

३ ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा, इति श्रीप्रत्यङ्गमश्वारूढा। कालनित्या तु सूत्रकृता नोपात्ता।

अथ पुनरपि ऋष्यादि मानसपूजान्तं विधाय, सबीजाः सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्राः प्रदर्श्य,

गुह्यातिगुह्यगोत्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।

इति देव्याः वामकरे सामान्यर्घ्यप्रक्षेपेण जपं निवेद्य,

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।

इति मालां सम्प्रार्थ्य, निगूढं निधाय, श्रीगुरुपादुकामन्त्रं मुहुर्मुहुरुच्चारयन् गुरुपरमगुरुपरमेष्ठीगुरून् तत्तन्नामपूर्वं प्रणमेत्। इति जपविधिः।

हादि विद्यान्यासध्यानानि

अस्य हादिपञ्चदशी श्रीविद्यामहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीदेवीभूषितोत्सङ्ग—श्रीकामेश्वरो देवता हसकलह्रीं बीजं स क ल ह्रीं शक्तिः ह स क ह ल ह्रीं कीलकम् श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गश्रीकामेश्वरदेवता प्रीत्यर्थे श्रीगुरोराज्ञया जपे विनियोगः।

ह स क ल ह्रीं	सर्वज्ञताशक्ति धाम्ने	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यतृप्तिशक्ति धाम्ने	तर्जनीभ्यां नमः।
स क ल ह्रीं	अनादिबोधशक्ति धाम्ने	मध्यमाभ्यां नमः।
ह स क ल ह्रीं	स्वतन्त्रताशक्ति धाम्ने	अनामिकाभ्यां नमः।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यमलुप्तशक्ति धाम्ने	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
स क ल ह्रीं	अनन्तशक्ति धाम्ने	करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः।
ह स क ल ह्रीं	सर्वज्ञताशक्ति धाम्ने	हृदयाय नमः।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यतृप्तिशक्ति धाम्ने	शिरसे स्वाहा।
स क ल ह्रीं	अनादिबोधशक्ति धाम्ने	शिखायै वषट्।
ह स क ल ह्रीं	स्वतन्त्रताशक्ति धाम्ने	कवचाय हुम्।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यमलुप्तशक्ति धाम्ने	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स क ल ह्रीं	अनन्तशक्ति धाम्ने	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम्।

हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम्।।
उद्यद्दिनकरप्रख्यं जपाकुसुमसन्निभम्।
नवरत्नसमायुक्तं मुकुटेन विराजितम्।।
चतुर्बाहुमुदाराङ्गं मोहयन्तं जगत्त्रयम्।
श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं ध्यायेत्परशिवं प्रभुम्।।
एवं ध्यायेन्महादेवं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्। इति।

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य न्यासध्यानानि

बालामन्त्रन्यासादि

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी महामन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लींकीलकम् श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीदेवता प्रीत्यर्थे श्रीगुरोराज्ञया जपे विनियोगः।

दक्षिणा मूर्तये ऋषये नमः शिरसि। पङ्क्तिश्छन्दसे नमो मुखे।
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमो हृदये। ऐं बीजाय नमो गुह्ये।
सौः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठिकाभ्यांनमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः।

ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुम्। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

अरुणकिरणजालैः रञ्जिता सावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता
इतरकरवदाढ्या फुल्लकल्हारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला।

ऐंकाराङ्कितगर्भितानलशिखा सौः क्लीं कलां बिभ्रतीम्,
सौवर्णम्बुजधारिणीं वरधरां धाराधराङ्गोज्ज्वलाम् ।
वन्दे साङ्कुशपाशपुस्तकधरां स्रग्भासितोद्यत्कराम्,
तां बालां त्रिपुरां पदत्रयतनुं षट्चक्रसञ्चारिणीम् ।।
मालासृणी-पुस्तक-पाश-हस्तां

बालाम्बिकां श्रीललितां कुमारीम्।
कुमारकामेश्वरकेलिलोलां
नमामि गौरीं नवर्षवेषाम्।।

श्रीमहाषोडशीमहिमा

समस्तजगतामुत्पत्तिभूताशिवा। सेयं श्रीर्ब्रह्मास्वरूपा सकलगुणमयी निर्गुणा निष्प्रपञ्चा साक्षात्कामदुधा सुरमुनिनिवहैर्वन्दिताऽऽन्दरूपा।

वाक्यकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि।
वर्णितुं नैव शक्येऽहं श्रीविद्यां षोडशाक्षरीम्।।
वैखरीवाच्यभावत्वादशक्ता गुणवर्णने।
यतो निरक्षरं वस्तु परा तत्रैव कारणम्।।
मूकीभूता हि पश्यन्ती मध्यमा मध्यमा भवेत्।
ब्रह्मविद्यास्वरूपा हि भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।।
एकोच्चारेण देवेशि ! वाजपेयस्य कोटयः।
अश्वमेधसहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा।।
काश्यादितीर्थयात्राःस्युः सार्धकोटित्रयान्विताः।
तुलां नार्हन्ति देवेशि ! नात्र कार्या विचारणा।।
एकोच्चारेण गिरिजे किं पुनर्ब्रह्म केवलम्।
षोडशार्णा महाविद्या न प्रकाश्या कदाचन।।
गोपितव्या त्वया भद्रे स्वयोनिरिव पार्वति।
षोडशीयं सुगोप्या हि स्नेहाद्देवि प्रकाशिता।।
अपि प्रियतमं देयं सुतदारधनादिकम्।
राज्यं देयं शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी।।

श्रीसुन्दरी भेदाः

रुद्रयामले—ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए क ई ल ह्रीं हसकलहह्रीं सकलह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं क्लीं हूँ, हसकलह्रीं हसकलहलह्रीं हंसः। हसकलहह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। हसकलह्रीं, सहसकहलह्रीं सकलह्रीं। (इति षोडशीद्वयम्)।

(सप्तदशी) हसकलहह्रीं। सहकहलह्रीं। सकलहह्रीं, लोपामुद्रा १७।
ऐं हसकलह्रीं क्लीं हसकलहह्रीं सौः सकलह्रीं लोपा० विद्या १८।

ॐ ऐं क्लीं सौं कएलहह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः ह स क ल ह्रीं सौं क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः स क ह ल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ (इति परमा)। **क ल ईं, (ब्रह्मविद्या)**

कएईलह्रीं हकहलह्रीं हसकलह्रीं, (इयमुन्मनीश्रीविद्या)।

कएईलह्रीं हकहलह्रीं सहकलह्रीं, (इयं वरुणोपासिता)।

कएकलह्रीं हकहह्रीं सहकलह्रीं, (धर्मराजोपासिता)।

कसकलह्रीं हसलकलह्रीं सकलरलह्रीं, (वह्न्युपासिता)।

हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलरलह्रीं (नागराजोपासिता)।

कएरलरह्रीं हकलरहलह्रीं सरकलरह्रीं, (वायूपासिता)।

कएईरलह्रीं हकहलरह्रीं सहकलरह्रीं (बुधोपासिता)।

कहलह्रीं हकलहललरह्रीं सकलह्रीं ईशानोपासिता।

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं, (रत्युपासिता)।

कादि स०ह०क० (विलोममिलिता ३० नारायणोपासिता)।

कएईलह्रीं हकहसरह्रीं हसकलह्रीं, (ब्रह्मोपासिता)।

हसकलह्रीं हकहसरह्रीं हसकलह्रीं, (जीवोपासिता)।

हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं, (लोपामुद्रोपासिता)।

कहएईलह्रीं हकएईलह्रीं सकएईलह्रीं, (मनूपासिता)।

कामराजाख्यविद्यायाः शक्तिं तुर्याञ्च सुन्दरि।
हित्वा मुखे शिवेन्द्राख्या लोपामुद्रा प्रकाशिता।

एकारं ईकारं हित्वा हकारं सकारं च दद्याद् अन्यत्समानम्।

शक्तिमादनमध्यगं शिवं कुर्याद् वाग्भवे तु शिवाद्यं कामराजकं चन्द्राद्यन्तुं तृतीयं स्यान्मनूपासिता।

सहाद्यं वाग्भवं देवि ! चन्द्राद्यं शिवमध्यगम्।
मादनं कामबीजं तु शक्तिबीजं हसाननम्।। (चन्द्राराधिता)।।
हसाद्यं वाग्भवं शिवाद्यं सहमध्यगम्।
मादनं कामबीजं तु तार्तीयं शृणु पार्वति।
हसाद्यं शक्तिबीजं तु कुबेरेण प्रपूजिता।
हसकएईह्रीं हकहएईलह्रीं हसकएईलह्रीं, (कुबेरोपासिता)।
कामराजाख्यविद्यायास्तृतीयं शृणु पार्वति।।
शक्तिबीजं सहाद्यं स्याद्विद्याऽगस्त्य-प्रपूजिता।।

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स ह स क ल ह्रीं, (इयमगस्त्योपासिता द्वितीया लोपामुद्रोपासिता च)।

कामराजख्यविद्याया वाग्भवे मादनं त्यज।
चन्द्रं तत्रैव संयोज्य कामराजे ततः परम्।।
हित्वा चन्द्रं मुखे कुर्य्याद्विद्येयं नन्दिपूजिता।

सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं, (नन्दिपूजिता)।

कामराजमिदं भद्रे षड्वर्णं सर्वमोहनम्। (हसकहलह्रीं)
शक्तिबीजं वरारोहे चन्द्राद्यं सर्वसिद्धिदम्।
कामराजाख्यविद्याया हित्वा भूमिं तृतीयके।
शक्तिबीजे स्थितां देवि! चन्द्राधः कुरु तत्र च।
इन्द्राराधितविद्येयं भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकलह्रीं।
इन्द्रलोपामुद्राख्यविद्या द्वितीया या महेश्वरी।
कामराजे भृगुं हित्वा मुखे कुर्यात्तमेव हि।।
शिवं विना चतुर्थं तु तार्तीये शक्रगः शिवः।

एषा विद्या वरारोहे त्रिपुरा सूर्यपूजिता।

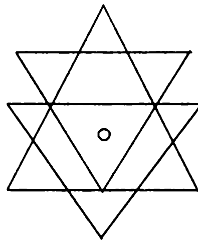
कएईलह्रीं सहकलह्रीं सहसकलह्रीं। (सूर्य्येण) क ए ई ल ह स क ह ल स ह स क ल ह्रीं (शिवोपासिता)।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ल ह ह्रीं स क ल ह्रीं ह्रीं (भुवनेशानी बिन्दुहीना नादहीना दुर्वाससा पूजिता)।

श्रीबीजं शक्तिबीजञ्च कामबीजञ्च वाग्भवम्।
बालान्तः संस्थितं बीजं प्रणवञ्च ततः परम्।।
शक्तिबीजं रमां चैव विद्यां च परमेश्वरि।।
लोपां वा कामराजं वा त्रिकूटामथवा पराम्।।
विन्यस्य पुनराद्यानि पञ्चबीजानि सुन्दरि।।
विपरीतक्रमेणैव विन्यसेत्षोडशीपरा।

(एषा श्रीपरमा परात्परतमा सर्वार्थसिद्धिप्रदा सारात्सारतरा)।

इति सुन्दरीभेदाः।



अथ होमप्रकरणम्

पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुरस्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं स्थण्डिलं परिकल्प्य, 'मूलेन निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य कुशेन ताडयित्वा, हुं इत्यवगुण्ठ्य स्थण्डिलोपरि मध्यमदक्षिणोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि मध्यमपश्चिमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ब्रह्मणे नमः। ७ यमाय नमः। ७ सोमाय नमः। ७ रुद्राय नमः। ७ विष्णवे नमः। ७ इन्द्राय नमः। इत्यभ्यर्चयेत्॥

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात्॥ यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वास्हा। ७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्। ७ धूमव्यापिने कवचाय हुं। ७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

अननैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थपिण्डलमभ्यर्च्य तत्र अष्टकोणषट्कोणात्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वग्रादिप्रादक्षिण्येन दिक्षु मध्ये च क्रमात्—

७ पीतायै नमः। ७ श्वेतायै नमः। ७ अरुणायै नमः। ७ कृष्णायै नमः। ७ धूम्रायै नमः। ७ तीव्रायै नमः। ७ स्फुलिङ्गिन्यै नमः। ७ रुचिरायै नमः। ७ ज्वालिन्यै नमः, इति पीठशक्तिः समर्चयेत्॥

ततः पीठमध्ये—७ तं तमसे नमः। ७ रं रजसे नमः। ७ सं सत्वाय नमः। ७ आं आत्मने नमः। ७ अं अन्तरात्मने नमः। ७ पं परमात्मने नमः। ७ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। इति पूजयेत्।

ततः त्रिकोणे—७ ॐ ह्रीं वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः— इति मन्त्रेण, जनिष्यमाणस्य वह्नेः पितरौ वागीश्वरीवागीश्वरौ सम्पूज्य तयोर्मिथुनी भावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा वह्निमुत्पाद्य द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वा अग्निं स्थपिण्डलाद्बहिः आग्नेय्यां ऐशान्यां नैर्ऋत्यां वा दिशि

'निधाय, तस्मात्क्रव्यादांशमेकमग्निशकलं "फट्" इति अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्यां निरस्य अग्निं मूलेन निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च, अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा, कवचेनावगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, ततः **७ ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा,** इति (मूलाधारोद्गतं सम्विदग्निं ललाटनेत्रद्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्ध्या बाह्याग्नौ संयोजयेत्।।)

ततः "कवचाय हुं" इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य **७ अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।** (इत्युपस्थाय।) **७ उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा,** इति वह्निमुत्थाप्य ततः "ॐ ह्रीं" इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्रामयित्वा स्थण्पिडले स्थापयेत्। **७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा,** (इति प्रज्वाल्य) ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य, (प्राक्तोयं निधाय), वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा, '७ ऐं नमः' अस्य होमाग्नेः **गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, ललिताग्निरिति नाम्ना नामकरणकर्म** कल्पयामि नमः, ७ ऐं नमः अस्य ललिताग्नेः **अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म** कल्पयामि नमः— इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतैरभ्यर्चयेत्।।

ततः सामान्यार्घ्योदकेनाग्निं मूलेन परिषिच्य अग्निमलङ्कृत्य प्राग— ग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य **त्रिभिः परिधिभिः प्राग्वर्जं परिधानं कृत्वा।**

त्रिनयनमरुणाप्तं बद्धमौलिं सुशुक्लां—
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम्।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
नमत कनकमालालङ्कृतांसं कृशानुम्।।

(शारदातिलके—वैश्वनरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः। शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु।।)

अथ अष्टकाणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

७ जातवेदसे नमः। ७ सप्तजिह्वाय नमः। ७ हव्यवाहनाय नमः। ७ अश्वोदराय नमः। ७ वैश्वानराय नमः। ७ कौमारतेजसे नमः। ७ विश्वमुखाय नमः। ७ देवमुखाय नमः। इत्युभिपूज्य।।

षट्कोणे षडङ्गं यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा। ७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्। ७ धूमव्यापिने कवचाय हुम्। ७ सप्त-जिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्। इत्यभ्यर्च्य।

त्रिकोणे— **७ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा,** इमि मन्त्रेण अग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत्। ततः पात्रासादनम्।

प्रणीता, प्रोक्षणी, ब्रह्मावरणं घृतसंस्कारपूर्वकअभिमन्त्रणम्। श्रीविद्यारत्नाकरे ३३४ पृष्टे द्रष्टव्यं महागणपति मन्त्रस्य दश खण्डाहुतयःकर्तव्याः इति पात्रासादनम्।

अथ अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैकां आज्याहुतिं कुर्यात्। यथा—

७	हिण्यायै नमः स्वाहा—	**हिरण्याया इदं न मम**			(ऐशान्यां)
७	कनकायै	स्वाहा	कनकाया	,,	(प्राच्यां)
७	रक्तायै	स्वाहा	रक्ताया	,,	(आग्नेय्यां)
७	कृष्णायै	स्वाहा	कृष्णाया	,,	(नैर्ऋत्यां)
७	सुप्रभायै	स्वाहा	सुप्रभाया	,,	(पश्चिमायां)
७	अतिरक्तायै	स्वाहा	अतिरक्ताया	,,	(वायव्यायां)
७	बहुरूपायै	स्वाहा	बहुरूपाया	,,	(मध्ये)

ततस्तिस्र आहुतीःजुहुयात्। यथा—

७ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा—अग्नय इदम्। **७ उत्तिष्ठपुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा**—अग्नय इदम्। **७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा**—अग्नय इदम्। अथ (अग्नेर्मध्यभागे स्थितायां दक्षिणोत्तरायतायां बहुरूपाख्यजिह्वायां,)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रै ह्स्क्लरीं ह्स्रौः। महापद्मवनान्तस्थे करणानन्दविग्रहे। सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि। इति। श्रीदेवीमावाह्य उपचारमन्त्रैः गन्धादीन् पञ्चोपचारानानर्च्य पूजाक्रमेण जुहुयात्। यथा—

४ गणपतिमूलं महागणपतये स्वाहा (त्रिः)।।

४ मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (दशकृत्वः)।।

क–५ हृदयाय नमः हृदयदेव्यै, स्वाहा ह–६ शिरसे स्वाहा शिरोदेव्यै, स–४ शिखायै वषट् शिखादेव्यै, स्वाहा क–५ कवचाय हुं कवचदेव्यै, स्वाहा ह–६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै,स्वाहा स–४ अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा।।

अःक–१५ अः ललितामहानित्यायै स्वाहा (त्रिः), तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तिथिनित्यायै, अः क–१५ अः ललितामहानित्यायै स्वाहा।।(त्रिस्त्रिवारं)

४ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै स्वाहा।।

४ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लीन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हे ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै स्वाहा।।

४ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै स्वाहा।

४ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै स्वाहा।।

४ उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै स्वाहा।।

४ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै स्वाहा।।

४ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै स्वाहा।

४ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै स्वाहा।।

४ ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै स्वाहा।।

४ ॡं ह्स्क्ल्र्डैं ह्स्क्ल्र्डीं ह्स्क्ल्र्डौः ॡं नित्यानित्यायै स्वाहा।।

४ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं– नीलपताकानित्यायै स्वाहा।।

४ ऐं भ्म्र्यूं ऐं विजयानित्यायै स्वाहा।

४ ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गलानित्यायै स्वाहा।।

४ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा औंज्वालामालिनीनित्यायै स्वाहा।।

४ अं च्क्रौं अं चित्रानित्यायै स्वाहा।।

४ अः पञ्चदशी अः ललितामहानित्यायै स्वाहा।।

४ ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथाय स्वाहा,

उड्डीशानन्दनाथाय, प्रकाशानन्दनाथाय, विमर्शानन्दनाथाय, आनन्दानन्दनाथाय, षष्ठीशानन्दनाथाय, ज्ञानानन्दनाथाय, सत्यानन्दनाथाय, पूर्णानन्दनाथाय, मित्रेशानन्दनाथाय, स्वभावानन्दनाथाय, प्रतिभानन्दनाथाय, सुभगानन्दनाथाय स्वाहा।।

४ परप्रकाशानन्दनाथाय, स्वाहा परशिवानन्दनाथाय, पराशक्त्यम्बायै, कौलेश्वरानन्दनाथाय, शुक्लदेव्याम्बायै, कुलेश्वरानन्दनाथाय, कामेश्वर्यम्बायै, भोगानन्दनाथाय, क्लिन्नानन्दनाथाय, समयानन्दनाथाय, सहजानन्दनाथाय, गगनानन्दनाथाय, विश्वानन्दनाथाय, विमलानन्दनाथाय, मदनानन्दनाथाय, भुवनानन्दनाथाय, लीलाम्बायै, स्वात्मानन्दनाथाय, प्रियानन्दनाथाय स्वाहा, (परमेष्ठिगुरु) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा, (परमगुरु) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा, (स्वगुरु) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा।।

४ अं आं सौः त्रैलौक्यमोहनचक्राय स्वाहा, अं अणिमासिद्ध्यै, लं लघिमासिद्ध्यै, मं महिमासिद्ध्यै, ईं ईशत्वसिद्ध्यै, वं वशित्वसिद्ध्यै, पं प्राकाम्यसिद्ध्यै, भुं भुक्तिसिद्ध्यै, इं इच्छासिद्ध्यै, पं प्राप्तिसिद्ध्यै, सं सर्वकामसिद्ध्यै, आं ब्राह्मीमात्रे स्वाहा, ई माहेश्वरीमात्रे, ऊं कौमारीमात्रे, ॠं वैष्णवीमात्रे, ॡं वाराहीमात्रे, ऐं महेन्द्रीमात्रे, औं चामुण्डामात्रे, अः महाक्ष्मीमात्रे स्वाहा, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, सः सर्वोन्मादिनी-मुद्राशक्त्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्त्यै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै स्वाहा, ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै, प्रकटयोगिनीभ्यः स्वाहा, अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वर्यै स्वाहा, अं अणिमासिद्ध्यै, द्रा सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा, **(मूल) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।**

४ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय स्वाहा, अं कामाकर्षिण्यै, आं बुद्ध्याकर्षिण्यै, इं अहङ्काराकर्षिण्यै, ईं शब्दाकर्षिण्यै, उं स्पर्शाकर्षिण्यै, ऊं रूपाकर्षिण्यै, ऋं रसाकर्षिण्यै, ॠं गन्धाकर्षिण्यै, ऌं चित्ताकर्षिण्यै, ॡं धैर्याकर्षिण्यै, एं स्मृत्याकर्षिण्यै, ऐं नामाकर्षिण्यै, ओं बीजाकर्षिण्यै; औंआत्माकर्षिण्यै, अं अमृताकर्षिण्यै, अः शरीराकर्षिण्यै स्वाहा, गुप्तयोगिनीभ्यः स्वाहा, ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वर्यै स्वाहा, लं लघिमासिद्ध्यै स्वाहा, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा, ''मूलं'' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय स्वाहा, कं-५ अनङ्गकुसुमायै, चं-५ अनङ्गमेखलायै, टं-५ अनङ्गमदनायै, तं-५ अनङ्गमदनातुरायै, पं-५ अनङ्गरेखायै, यं-४ अनङ्गवेगिन्यै, शं-४ अनङ्गाङ्कुशायै, ळंक्षं अनङ्गमालिन्यै स्वाहा, गुप्ततरयोगिनीभ्यः स्वाहा, ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै स्वाहा, मं महिमासिद्ध्यै स्वाहा, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा, **''मूलं'' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।**

४ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय स्वाहा, कं सर्वसंक्षोभिण्यै खं सर्वविद्राविण्यै, गं सर्वाकर्षिण्यै, घं सर्वाह्लादिन्यै, ङं सर्वसम्मोहिन्यै, चं सर्वस्तम्भिन्यै, छं सर्वजृम्भिण्यै, जं सर्ववशङ्कर्यै, झं सर्वरञ्जिन्यै, ञं सर्वोन्मादिन्यै, टं सर्वार्थसाधिन्यै, ठं सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै डं सर्वमन्त्रमय्यै, ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै स्वाहा, सम्प्रदाययोगिनीभ्यः स्वाहा, हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वर्यै स्वाहा, ईं ईशित्वसिद्ध्यै स्वाहा, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्य स्वाहा, 'मूलं' ललितामहात्रिपुसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय स्वाहा, णं सर्वसिद्धिप्रदायै, तं सर्वसम्प्रदायै, थं सर्वप्रयङ्कर्यै, दं सर्वमङ्गलकारिण्यै, धं सर्वकामप्रदायै, नं सर्वदुःखविमोचिन्यै, पं सर्वमृत्युप्रशमन्यै, फं सर्वविघ्ननिवारिण्यै, बं सर्वाङ्गसुन्दर्यै, भं सर्वसौभाग्यदायिन्यै स्वाहा, कुलोत्तीर्णयोगिनीभ्यःस्वाहा, ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वर्यै स्वाहा, वं वशित्वसिद्ध्यै स्वाहा, सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै स्वाहा, **'मूलं' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।**

४ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय स्वाहा, मं सर्वज्ञायै, यं सर्वशक्त्यै, रं सर्वैश्वर्यप्रदायै, लं सर्वज्ञानमय्यै, वं सर्वव्याधिविनाशिन्यै, शं सर्वाधार

स्वरूपायै स्वाहा षं सर्वपापहरायै, सर्वानन्दमय्यै, हं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै, क्षं सर्वेप्सितफलप्रदायै, निगर्भयोगिनीभ्य: स्वाहा, ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै स्वाहा, पं प्राकाम्यसिद्ध्यै स्वाहा, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै स्वाहा, **'मूलं' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।**

४ ह्रीं श्रीं सौ: सर्वरोगहरचक्राय स्वाहा, अं++अ:(१६) ब्लूँ वशिनीवाग्देवतायै स्वाहा, कं-५ क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै, चं-५ न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै, टं-५ य्लूं विमलावाग्देवतायै, तं-५ ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै, पं-५ ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै, यं-४ झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै, शं-६ क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै स्वाहा, रहस्ययोगिनीभ्य: स्वाहा, ह्रीं श्रीं सौ: त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै स्वाहा, भुं भुक्ति सिद्ध्यै स्वाहा, हस्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै स्वाहा, **'मूलं' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।।**

४ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स: सर्वजम्भनेभ्य: कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्य: स्वाहा।।

४ थं धं सर्वसंमोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां स्वाहा।

४ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां स्वाहा।

४ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां स्वाहा।

४ ह्स्रैं हस्क्ल्रीं ह्स्रौ: सर्वसिद्धिप्रदचक्राय स्वाहा, ऐं क-५ महाकामेश्वर्यै स्वाहा, क्लीं ह-६ महावज्रेश्वर्यै स्वाहा, सौ: स-४ महाभगमालिन्यै स्वाहा, ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौ: स-४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा, अतिरहस्ययोगिनीभ्य: स्वाहा, ह्स्रै हस्क्ल्रीं ह्स्रौ: त्रिपुराम्बाचक्रेश्वर्यै स्वाहा, इं इच्छासिद्ध्यै, स्वाहा,हसौ: सर्वबीजमुद्राशक्त्यै स्वाहा, **'मूलं' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।।**

४ (पञ्चदशी) सर्वानन्दमयचक्राय स्वाहा, 'मूलं' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। इति (दशवारं), परापरातिरहस्ययोगिन्यै स्वाहा, मूलं त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै स्वाहा, पं प्राप्तिसिद्ध्यै स्वाहा, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै स्वाहा, **'मूलं' ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।।**

४ षोडश्युपासकानां— 'तुरीयविद्या' तुरीयाम्बायै स्वाहा, सं सर्वकामसिद्ध्यै स्वाहा, ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौ: सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै स्वाहा, 'महाषोडशी' महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा।

(पञ्चपञ्चिकादिहोमे तत्तन्मन्त्रेण प्रदर्शितरीत्या होम: कर्तव्य:।।)

(यथेप्सितवस्तुभि: मूलमन्त्रेणहोम:)

ततो होमावशिष्टेन आज्येन स्रुचं पूरयित्वा पुष्पं फलं अग्रे निधाय स्रुवेणाच्छाद्य **'मूलेन'** वौषट् इति उत्थितो जुहुयात्।। ततो बलिदानम् (पुटं १८६)। ततो महाव्याहृतिहोमः। यथा–

७ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा। अग्नये पृथिव्यै महत इदम्।
७ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवे अन्तरिक्षाय महत इदम्।
७ स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महत इदम्।
७ भूर्भुवःस्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा। चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदम्। इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्य-वस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। **परब्रह्मण इदम्**। इति **(ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात्।।)**

अस्मिन् ललिताहोमकर्मणि मध्ये सम्भावितसमस्तमन्त्रलोपतन्त्रलोप-द्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यासप्रायश्चित्तार्थं सर्व-प्रायश्चित्तं होष्यामि। **ॐ भूर्भुवस्वः स्वाहा। प्रजापतय इदम्। श्रीविष्णुवे स्वाहा। विष्णवे परमात्मन इदम्। नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा। रुद्राय पशुपतय इदम्। (अप उपस्पृश्य)। सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा। अग्नये सप्तवत इदम्। (आज्यपात्रादीनुत्तरतो निधाय प्राणायामं कृत्वा), अग्निं परिषिञ्चति। अदितेऽन्यमँस्थाः। अनुमतेऽन्वमँस्थाः। सरस्वतेऽन्वमँस्थाः। देव सवित प्रासावीः।।**

ततः प्रणीतापात्रं स्वस्य पुरत आदाय, **पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः। सदसि सन्मे भूयाः। सर्वमसि सर्वं मे भूया।।** इति (अन्यजलं निनीय) तज्जलं प्रागादिप्रदक्षिणं-**प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो मार्जयन्ताम्। उदीच्यां दिश्याप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम्। ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः**

सम्वत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयन्ताम्-इति प्रतिदिशमुत्सृज्य पुरस्तान् निस्राव्य, तेन-**ब्रह्मणेष्वमृतं हितं येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु मा-इत्यात्मानं प्रोक्ष्य**, प्रागादिपरिस्तरण-मुत्तेरे (वह्नौवा) विसृजेत्।

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।। (इत्युपस्थाय) **चिदग्निं, उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन्। आयुः प्रजाँ रयिमस्मासु धेहि अजस्रो दीदिहि नो दुरोणे।।** (ललिताग्निमात्यन्युद्वासयामि नमः इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलिं दद्यात्।)

तद्भूतितिलकं–**त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेसु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्।** इति त्र्यायुषेण मन्त्रेण धारयेत्।

होमप्रकरणम् सम्पूर्णम्।।

जपप्रकरणे सूत्रकृता पुरश्चरणादिकं न विधित्सितम् काम्यकर्मण्येव-तस्यावश्यकत्वात्। युक्तं चैतत्–

शुभं वाऽप्यशुभं वाऽपि काम्यं कर्म करोति यः।
तस्यारित्वं व्रजेन्मन्त्रो न तस्मात् तत्परो भवेत्।।
काम्यकर्मप्रसक्तानां तावन्मात्रं फलं भवेत्।
निष्कामं भजतां देवमखिलाभीष्टसिद्धयः।।

देवेत्युपलक्षणं देव्या अपि। काम्यकर्मविधिश्च दुःसाध्यश्चेत् कस्यचित् काम्यफललिप्सा, तेन तदा श्यामाक्रमोक्तं पुरश्चरणादिकं काम्यहोम-द्रव्यं चानुसन्धेयम्।

श्यामदीनामुपासनाकालः

ललिता प्राह्णे, अपराह्णे श्यामा, रात्रौ दण्डिनी, ब्राह्मे महूर्त्ते परा, (सूर्यपरावृत्तिप्राक्कालः प्राह्णः।)

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्य्याः प्रधानसचिवपदमलङ्करोति श्यामा, तदुपासनद्वारा श्रीविद्या प्रसीदति। यथा राजदर्शनोत्सुका आदौ प्रधान-सचिवमुपसेव्य तद्द्वारा राजदर्शनं कुर्वन्ति तथैव श्यामायाः प्रथममुपासनं

न्याय्यम्। 'प्रधानद्वारा राजप्रसादनं हि न्याय्यम्' इति परशुरामसूत्रात्।

साङ्गां सङ्गीतमातृकां श्यामामिष्ट्वा सिंहासनारूढायाः ललितायाः महाराज्ञाः दण्डनायिकास्थानीयां दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहनिरर्गलाज्ञां चन्द्रां कोलमुखीं वरिवस्येत्। इयञ्च महारात्रे पूज्या। ततश्च श्रीविद्याया महाराज्ञ्या हृदयात्मिकां परां पूजयेत्। तत्प्रीतौ श्रीविद्याप्रीतिः सुतरां सम्पद्यते 'प्रभुहृदयज्ञातुः पदे पदे सुखानि भवन्तीति परशुरामसूत्रात्।

क्रत्वर्थनियमाः

कृष्णाष्टमीतच्चतुर्दश्यमापूर्णिमासंक्रान्तिसंज्ञेषु पर्वसु पञ्चसु सविशेषैः साधनैराधयेत्। तत्प्रकारस्तु नैमित्तिकप्रकरणे वक्ष्यते। नित्यनैमित्तिकक्रमौ च शिष्यसुतादिभिरपि कारयितुं शक्यते।

श्रीललितोपासको नेक्षुखण्डं भक्षयेत्। न दिवा स्मरेद्वार्तालीम्। न जुगुप्सेत सिद्धद्रव्याणि। न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम्। वीरस्त्रियं न गच्छेत्। न तां हन्यात्। न तत् द्रव्यमपहरेत्। नात्मेच्छया मपञ्चकमुररीकुर्यात्। कुलभ्रष्टैः सह नासीत। न बहु प्रलपेत्। योषितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत्। कुलपुस्तकानि गोपायेत्। एते क्रत्वर्थनियमाः अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः साधकेनावश्यमनुष्ठेयाः। अन्यांश्च दीक्षाक्रमोक्तान् सामयिकानामाचाराननुतिष्ठेत्। अनिशमात्मानं कामकलात्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत्। एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य सर्वतः कृतकृत्यता।

शरीरविमोके च श्वपचगृहकाश्योर्नान्तरम्। स एव जीवन्मुक्तः सुखीः विहरेदिति॥

श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः

दीक्षप्रकरणोक्ते शुभे दिवसे कृताह्निकः साधको गणपतिमाराध्य ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मवर्मादिरहं महात्रिपुरसुन्दरीमाराधयिष्यन् श्रीचक्रराजप्रतिष्ठापनं करिष्ये, इति दुग्धदधिघृतशकृन्मूत्रात्मकं पञ्चगव्यमानीय सम्मिश्र्य **हौं** इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्र्य, तत्र प्रणवेन यन्त्रं निक्षिप्य ततः उद्धृत्य पात्रान्तरे

निधाय, मिश्रितेन गोदुग्धदधिघृतमधुशर्करात्मकेन पञ्चामृतेन संस्नाप्य धूपयेत्। अथ– प्रत्येकं दुग्धादिभिः क्रमेण अन्तरान्तरा धूपनपूर्वकं स्नपयित्वा पुनर्मिश्रितैश्च तैः स्नपयेत्। ततोऽष्टासु दिक्षु शालितण्डुलपुञ्जोपरि निहितैः नूतनवसनवेष्टितैः गन्धपुष्पार्चितैः कुङ्कुमरोचनाचन्दनकस्तूरीसुरभिलशीतलसलिलपूर्णैः कुशाग्रेण स्पृष्ट्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रितैः सौवर्णादिमार्तिकान्यन्ततमैरष्टभिः कलशैरभिषिञ्चेत्। इह सर्वमपि पञ्चगव्यादिकं स्नानं मूलमन्त्रकरणकमेव। अथ यन्त्रं धौतेन वाससा परिमृज्य पीठे निधाय कुशाग्रैः स्पृशन्–**ऐं ह्रीं श्रीं ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्,** इति यन्त्रगायत्रीम् अष्टोत्तरशतवारानावर्त्यात्मनो भूतशुद्ध्यादिमातृकान्यासान्तं कृत्वा यन्त्रं करेण संस्पृश्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। यथा–

अस्य श्रीयन्त्रराजस्य प्राणप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, चैतन्यं देवता। आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकम् मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठायै जपे विनियोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
३ इं चं छं जं झं ञं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं मध्यमाभ्यां नमः।
३ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
३ औं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणविसर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

३ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तान्तःकरणात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः। ध्यानम्–

रक्ताम्बोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमलिगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः श्रीचक्रस्य प्राणाः

इह प्राणाः, ३ ॐ हंसः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः, ३ ॐ हंसः श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ३ ॐ हंसः, श्रीचक्रस्य वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति।

(यन्त्रान्तरप्राणप्रतिष्ठायां तत्तन्नाम्न ऊहः कार्यः) अथ तत्र श्रीक्रमोक्तेन विधिना देवीमावाह्याभ्यर्च्य यन्त्रं कुशाग्रैः स्पृशन् मूलमष्टोत्तरसहस्रं शतं वा वारानावर्त्य होमप्रकरणोक्तेन क्रमेणाष्टोत्तरशतमाज्याहुतीः मूलेन हुत्वा सम्पाताज्यं मध्ये मध्ये यन्त्रे अवनीय सव्यञ्जनेनान्नेन सर्वभूतबलिं प्रदाय होमशेषं समाप्य गुरुवे सुवर्णशृङ्गालङ्कृतां गां वसनाभरणानि च प्रदाय देवीमुद्दास्य कुमारीं योगिनीं ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। इमाञ्च यन्त्रप्रतिष्ठां गुर्वादिना वा कारयेदिति वामकेश्वरतन्त्रीयो यन्त्रप्रतिष्ठापनविधिः।

।। श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः सम्पूर्णः।।

अथ वाञ्छाकल्पलता

श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीक्षेत्रपालाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः। मूलमुच्चार्य। तालत्रयं कृत्वा मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा।

ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलताविद्यागणेशस्य मनोर्नानासूक्तसमूहस्य, आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवनना ऋषयः, देवीगायत्री-निचृद्गायत्रीपङ्क्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी-महागणपतिसम्वादाग्न्यमृतरुद्रा देवताः, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्ति, क्लीं कीलकम्, मम श्रीमहागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसम्वादाग्न्यमृतरुद्रप्रसादवाञ्छितार्थफल-प्रसिद्धये वाञ्छाकल्पलतोपस्थाने विनियोगः। इति सङ्कल्प्य।

आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवननऋषिभ्यो नमः शिरसि, देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपंक्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगतीछन्दोभ्यो नमः मुखे, श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीगणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदये, श्रीं बीजाय नमो नाभौ, ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये, क्लीं कीलकाय नमः आधारे, इति न्यस्य मूलेन व्यापकं चरेत्।

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं क ए ई ल ह्रीं गणपतये हसकहलह्रीं वरवरद सकलह्रीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।" **इति त्रिचत्वारिंशदर्णोमनुः।**

ऐं क्लीं सौः श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ११ ह्रीं सर्वज्ञायै ह्रां गां ब्रह्मात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ऐं० ११ ह्रीं नित्यतृप्तायै ह्रीं गीं विष्ण्वात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा। ऐं० ११ ह्रीं अनादिबोधितायै ह्रूं गूं रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं० ११ ह्रीं स्वतन्त्रायै ह्रैं गैं ईश्वरात्मने अनामिकाभ्यां हुम्। ऐं० ११ ह्रीं नित्यमलुप्तायै ह्रौं गौं सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ऐं० ११ ह्रीं अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यासं विधाय पुनर्मूलेन त्रिर्व्याप्य ध्यायेत्। यथा—

हेमाद्रौ हेमपीठस्थितिममरगणैरीड्यमानां विराजत्–
पुष्पेष्विक्ष्वासिपाशाङ्कुशकरकमलां रक्तवेषातिरक्ताम्।
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणिमयकलशैः पञ्चशक्त्यैकविद्याम्,
स्वस्थां क्लृप्ताभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्ययामे।। १ ।।
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल–
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः।। २ ।।

धवलनलिनराजच्चन्द्रमध्ये निषण्णम्,करधृतवरपाशं साभयं साङ्कुशञ्च ।
अमृतवपुषमिन्दुक्षीरवर्णं त्रिनेत्रम्, प्रणमत सुरवन्द्यं मङ्क्षु सम्वादयन्तम्।।३।।
स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा-गलदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम्।
स्वकरकलितमुद्रावेदपाशाक्षमालम्, स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि।।४।।

(मुद्रा ज्ञानमुद्रेत्यर्थः)

इति ध्यात्वा, मुद्रां प्रदर्श्य–

श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसम्वादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्याम्। श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी-महागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्। श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्। श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां। श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी-महागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्। श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी महागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः सं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि नमः इति संहताभिः सर्वाङ्गुलीभिः दद्यात्। एवं मानसोपचारैः सम्पूज्य, **गुरुदेवतात्मनामैक्यं भावयित्वा।** रात्रौ अन्त्ययामे सूर्योदयात्पूर्वं शनैः शनैः जपेत्।

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं "ईं"
(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परोरजसे सावदोम्,
(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकल हसकहल सकलह्रीं, प्रत्येकं दशवारं जपित्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुगुरीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐं क्लीं सौः २९। **यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य सर्वं तदिन्द्र ते वशे** २३। गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वर वरद आं ह्रीं क्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं। ३६।। १।।

ॐ ऐं...सौः २९। **तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्** २३। गं....ऐं ३६।। २।।

ॐ ऐं...सौः २९। **त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्** ३२। गं....ऐं ३६।। ३।।

ॐ ऐं...सौः २९। **जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः** ४३। गं....ऐं ३६।।४।।

ॐ ऐं...सौः २९। **समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि** ४४। गं....ऐं ३६।। ५।।

ॐ ऐं...सौः २९। **सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर** ३०। गं....ऐं ३६।। ३६।।

ॐ ऐं...सौ २९। समानो....जुहोषि ४४।। गं....ऐं ३६।।७।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्निः ४३।। गं....ऐं ३६।।८।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।।९।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।।१०।।
ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य.....वशे २३।। गं....ऐं ३६।।११।।

ॐ ऐं...सौ २९। गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपश्रवस्तम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्

४८।। गं....ऐं ३६।। १२।।

ॐ भूः भद्रं नो अभिवातयः मनः। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।। १३।।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।

ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानाम् पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति प्रथमः पर्यायः

ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य....वशे २३।। गं....ऐं ३६।। १।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।। २।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।। ३।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्नि ४३।। गं....ऐं ३६।। ४।।
ॐ ऐं...सौ २९। साम....होमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ५।।

ॐ ऐं...सौ २९। **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ३२।।** गं....ऐं ३६।। ६।।

ॐ ऐं...सौ २९। सम....जुहोमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ७।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्नि ४३।। गं....ऐं ३६।। ८।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।। ९।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।। १०।।
ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य....वशे २३।। गं....ऐं ३६।। ११।।

ॐ ऐं...सौ २९। **अग्नेमन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वम्। प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत् ४३।।** गं....ऐं ३६।। १२।।

ॐ भुवः मरुतामोजसे स्वाहा।। १३।। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं

ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।

ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानाम् पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति द्वितीयः पर्यायः

ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य....वशे २३।। गं....ऐं ३६।। १।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।। २।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।। ३।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्नि ४३।। गं....ऐं ३६।। ४।।
ॐ ऐं...सौ २९। साम....होमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ५।।
ॐ ऐं...सौ २९। सम.....होमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ६।।
ॐ ऐं...सौ २९। सम.....होमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ७।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्नि ४३।। गं....ऐं ३६।। ८।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।। ९।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।। १०।।
ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य....वशे २३।। गं....ऐं ३६।। ११।।
ॐ ऐं...सौ २९। यो मामग्ने भागिनं सन्तमथाभागं चिकीर्षति। अभागमग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु स्वाहा ३६।। गं....ऐं ३६।१२।।

ॐ स्वः इन्द्रो विश्वस्व राजति।। १३।। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।

ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानाम् पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति तृतीयः पर्यायः

ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य....वशे २३।। गं....ऐं ३६।। १।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।। २।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।। ३।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्नि ४३।। गं....ऐं ३६।। ४।।
ॐ ऐं...सौ २९। सम.....होमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ५।।
ॐ ऐं...सौ २९। **समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मयो यथा वः सुसहासति३१।** गं....ऐं ३६।। ६।।
ॐ ऐं...सौ २९। सम.....होमि ४४।। गं....ऐं ३६।। ७।।
ॐ ऐं...सौ २९। जात....त्यग्नि ४३।। गं....ऐं ३६।। ८।।
ॐ ऐं...सौ २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२।। गं....ऐं ३६।। ९।।
ॐ ऐं...सौ २९। तत्स....यात् २३।। गं....ऐं ३६।। १०।।
ॐ ऐं...सौ २९। यदद्य....वशे २३।। गं....ऐं ३६।। ११।।

ॐ ऐं...सौ २९। अजैष्माद्यासनाम चा भूमा नागसो वयम् जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ४०।। गं....ऐं ३६।।१२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। १३।। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।

ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानाम् पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति चतुर्थः पर्यायः

इति जपित्वा,

श्रीललितासहस्रनामावलिः

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य वशिन्यादिभ्यो वाग्देवताभ्य ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः हृदये। क ५ बीजाय नमः गुह्ये। स० ४ शक्तये नमः पादयोः। ह० ६ कीलकाय नमः नाभौ। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे (श्रीललिताम्बाप्रीत्यर्थं) (पूजने) विनियोगाय नमः सरसम्पुटे।

कूलत्रयं द्विरावृत्या (बालया वा) षडङ्गद्वयम्।

ध्यानश्लोकः

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।। १।।

श्रीललितासहस्रनामावलिः

ऐं–ह्रीं–श्रीं

३ श्रीमात्रे नमः
श्रीमहाराज्ञ्यै
श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै
चिदग्निकुण्डसम्भूतायै
देवकार्यसमुद्यतायै
उद्यद्भानुसहस्राभायै
३ चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः
रागस्वरूपपाशाढ्यायै
क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै
मनोरूपेक्षुकोदण्डायै १०
पञ्चतन्मात्रसायकायै

३ निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्कचायै
कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डितायै
अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभितायै
मुखचन्द्रकलङ्काभमृगाभिविशेषकायै
वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिकायै
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचनायै
नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजितायै
ताराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरायै २०
कादम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरायै
ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डलायै
पद्मरागशिलादर्शपरिभाविकपोलभुवे
नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिरदनच्छदायै
शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपंक्तिद्वयोज्ज्वलायै
कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरायै
निजसंल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छप्यै
मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसायै
अनाकलितासादृश्यचिबुकश्रीविराजितायै
कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरायै ३०
कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्वितायै
रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्वितायै
कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तन्यै
नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वय्यै नमः
लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमायै
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रयायै
अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतट्यै

३ रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषितायै नमः
कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्वितायै ४०
माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजितायै
इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिकायै
गूढगुल्फायै
कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्वितायै
नखदीधितिसञ्छन्ननमज्जनतमोगुणायै
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहायै
शिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजायै

३ मरालीमन्दगमनायै नमः
महालावण्यशेवधये
सर्वारुणायै
अनवद्याङ्ग्यै ५०
सर्वाभरणभूषितायै
शिवकामेश्वराङ्कस्थायै
शिवायै
स्वाधीनवल्लभायै

३ सुमेरुमध्यशृङ्गस्थायै नमः
श्रीमन्नगरनायिकायै
चिन्तामणिगृहान्तस्थायै
पञ्चब्रह्मासनस्थितायै
महापद्माटवीसंस्थायै
कदम्बवनवासिन्यै ६०
सुधासागरमध्यस्थायै
कामाक्ष्यै
कामदायिन्यै

देवर्षिगणसङ्घातस्तूयमानात्मवैभवायै नमः
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्वितायै
सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेवितायै
अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृतायै
चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृतायै
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेवितायै
किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृतायै

३ ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगायै नमः
भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षितायै
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुकायै
भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दितायै
मन्त्रिण्यम्बाविरचितविषङ्गवधतोषितायै नमः
विशुक्रप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दितायै
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरायै
महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षितायै
भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिण्यै
कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृत्यै
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिकायै
कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यकायै
ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवायै
हरनेत्राग्निसंदग्धकामसंजीवनौषध्यै
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजायै
कण्ठाधः कटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिण्यै
शक्तिकूटैकतान्नपकट्यधोभागधारिण्यै

३ मूलमन्त्रात्मिकायै नमः
मूलकूटत्रयकलेवरायै
कुलामृतैकरसिकायै ९०
कुलसङ्केतपालिन्यै
कुलाङ्गनायै
कुलान्तस्थायै
कौलिन्यै
कुलयोगिन्यै
अकुलायै

३ समयान्तस्थायै नमः
समयाचारतत्परायै
मूलाधारैकनिलयायै
ब्रह्मग्रन्थिविभेदिन्यै १००
मणिपूरान्तरुदितायै
विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै
आज्ञाचक्रान्तरालस्थायै
रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै
सहस्राराम्बुजारूढायै

३ सुधासाराभिवर्षिण्यै नमः
तटिल्लतासमरुच्यै
षट्चक्रोपरिसंस्थितायै
महासक्त्यै
कुण्डलिन्यै १११०
बिसतन्तुतनीयस्यै
भवान्यै
भावनागम्यायै
भवारण्यकुठारिकायै
भद्रप्रियायै
भद्रमूर्तये
भक्तसौभाग्यदायिन्यै
भक्तिप्रियायै
भक्तिगम्यै
भक्तिवश्यायै १२०
भयापहायै
शाम्भव्यै
शारदाराध्यायै
शर्वाण्यै
शर्मदायिन्यै
शाङ्कर्यै
श्रीकर्यै
साध्व्यै नमः
शरच्चन्द्रनिभाननायै
शातोदर्यै १३०
शान्तिमत्यै

३ निराधारायै नमः
निरञ्जनायै
निर्लेपायै
निर्मलायै
नित्यायै
निराकारायै
निराकुलायै
निर्गुणायै
निष्कलायै १४०
शान्तायै
निष्कामायै
निरुपप्लवायै
नित्यमुक्तायै
निर्विकारायै
निष्प्रपञ्चायै
निराश्रयायै
नित्यशुद्धायै
नित्यबुद्धायै
निरवद्यायै १५०
निरन्तरायै
निष्कारणायै
निष्कलङ्कायै
निरुपाधये
निरीश्वरायै
नीरागायै
रागमथन्यै

३ निर्मदायै नमः
मदनाशिन्यै
निश्चिन्तायै १६०
निरहङ्कारायै नमः
निर्मोहायै
मोहनाशिन्यै
निर्ममायै
ममताहन्त्र्यै
निष्पापायै
पापनाशिन्यै
निष्क्रोधायै
क्रोधशमन्यै
निर्लोभायै १७०
लोभनाशिन्यै
निःसंशयायै
संशयघ्न्यै
निर्भवायै
भवनाशिन्यै
निर्विकल्पायै
निराबाधायै
निर्भेदायै
भेदनाशिन्यै
निर्नाशायै १८०
मृत्युमथन्यै
निष्क्रियायै
निष्परिग्रहायै

३ निस्तुलायै नमः
नीलचिकुरायै
निरपायायै
निरत्ययायै
दुर्लभायै
दुर्गमायै
दुर्गायै १९०
दुःखहन्त्र्यै
सुखप्रदायै
दुष्टदूरायै
दुराचारशमन्यै नमः
दोषवर्जितायै
सर्वज्ञायै
सान्द्रकरुणायै
समानाधिकवर्जितायै
सर्वशक्तिमय्यै
सर्वमङ्गलायै २००
सद्गतिप्रदायै
सर्वेश्वर्यै
सर्वमय्यै
सर्वमन्त्रस्वरूपिण्यै
सर्वयन्त्रात्मिकायै
सर्वतन्त्ररूपायै
मनोन्मन्यै
माहेश्वर्यै
महादेव्यै

३ महालक्ष्म्यै नमः २१०
मृडप्रियायै
महारूपायै
महापूज्यायै
महापातकनाशिन्यै
महामायायै
महासत्त्वायै
महाशक्त्यै
महारत्यै
महाभोगायै
महैश्वर्यायै २२०
महावीर्यायै
महाबलायै
महाबुद्ध्यै
महासिद्ध्यै
महायोगीश्वरेश्वर्यै
महातन्त्रायै
महामन्त्रायै
महायन्त्रायै
महासनायै
महायागक्रमाराध्यायै २३०
महाभैरवपूजितायै
महेश्वरमहाकल्पमहाताण्डवसाक्षिण्यै
महाकामेशमहिष्यै
महात्रिपुरसुन्दर्यै
चतुःषष्ट्युपचाराढ्यायै
३ चतुःषष्टिकलामय्यै नमः
महाचतुःषष्टिकोटियोगिनीगणसेवितायै
मनुविद्यायै
चन्द्रविद्यायै
चन्द्रमण्डलमध्यगायै २४०
चारुरूपायै
चारुहासायै
चारुचन्द्रकलाधरायै
चराचरजगन्नाथायै
चक्रराजनिकेतनायै
पार्वत्यै
पद्मनयनायै
पद्मरागसमप्रभायै
पञ्चप्रेतासनासीनायै
पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै २५०
चिन्मय्यै
परमानन्दायै
विज्ञानघनरूपिण्यै
ध्यानध्यातृध्येयरूपायै
धर्माधर्मविवर्जितायै
विश्वरूपायै
जागरिण्यै
स्वपन्त्यै
तैजसात्मिकायै
सुप्तायै २६०
प्राज्ञात्मिकायै नमः

३ तुर्यायै नमः
सर्वावस्थाविवर्जितायै
सृष्टिकर्त्र्यै
ब्रह्मरूपायै
गौप्त्र्यै
गोविन्दरूपिण्यै
संहारिण्यै
रुद्ररूपायै
तिरोधानकर्यै २७०
ईश्वर्यै
सदाशिवायै
अनुग्रहदायै
पञ्चकृत्यपरायणायै
भानुमण्डलमध्यस्थायै
भैरव्यै
भगमालिन्यै
पद्मासनायै
भगवत्यै
पद्मनाभसहोदर्यै २८०
उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्नभुवनावल्यै
सहस्रशीर्षवदनायै
सहस्राक्ष्यै
सहस्रपदे
आब्रह्मकीटजनन्यै
वर्णाश्रमविधायिन्यै
निजाज्ञारूपनिगमायै

३ पुण्यापुण्यफलप्रदायै नमः
श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृतपादाब्ज-
धूलिकायै
सकलागमसंदोहशुक्तिसम्पुट-
मौक्तिकायै २९०
पुरुषार्थप्रदायै
पूर्णायै
भोगिन्यै
भुवनेश्वर्यै
अम्बिकायै
अनादिनिधनायै
हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै
नारायण्यै
नादरूपायै
नामरूपविवर्जितायै ३००
ह्रींकार्यै
ह्रीमत्यै
हृद्यायै
हेयोपादेयवर्जितायै
राजराजार्चितायै
राज्ञ्यै
रम्यायै
राजीवलोचनायै
रञ्जन्यै
रमण्यै ३१०
रस्यायै

३ रणत्किङ्किणिमेखलायै नमः
रमायै
राकेन्दुवदनायै
रतिरूपायै
रतिप्रियायै
रक्षाकर्यै
राक्षसघ्न्यै
रामायै
रमणलम्पटायै ३२०
काम्यायै
कामकलारूपायै
कदम्बकुसुमप्रियायै
कल्याण्यै
जगतीकन्दायै
करुणारससागरायै
कलावत्यै
कलालापायै
कान्तायै
कादम्बरीप्रियायै ३३०
वरदायै
वामनयनायै
वारुणीमदविह्वलायै
विश्वाधिकायै
वेदवेद्यायै
विन्ध्याचलनिवासिन्यै
विधात्र्यै

३ वेदजनन्यै नमः
विष्णुमायायै
विलासिन्यै ३४०
क्षेत्रस्वरूपायै
क्षेत्रेश्यै
क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै
क्षेत्रपालसमर्चितायै
विजयायै
विमलायै
वन्द्यायै
वन्दारुजनवत्सलायै
वाग्वादिन्यै ३५०
वामकेश्यै
वह्निमण्डलवासिन्यै
भक्तिमत्कल्पलतिकायै
पशुपाशविमोचिन्यै
संहृताशेषपाखण्डायै
सदाचारप्रवर्तिकायै
तापत्रयाग्निसन्तप्तसमाह्ला—
दनचन्द्रिकायै
तरुण्यै
तापसाराध्यायै
तनुमध्यायै
तमोपहायै
चित्यै

३ तत्पदलक्ष्यार्थायै नमः
चिदेकरसरूपिण्यै
स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्माद्यानन्दसन्तत्यै
परायै
प्रत्यक्चितीरूपायै
पश्यन्त्यै
परदेवतायै
मध्यमायै ३७०
वैखरीरूपायै
भक्तमानसहंसिकायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कृतज्ञायै
कामपूजितायै
शृङ्गाररसम्पूर्णायै
जयायै
जालन्धरस्थितायै
ओड्याणपीठनिलयायै
बिन्दुमण्डलवासिन्यै ३८०
रहोयागक्रमाराध्यायै
रहस्तर्पणतर्पितायै
सद्यःप्रसादिन्यै
विश्वसाक्षिण्यै
साक्षिवर्जितायै
षडङ्गदेवतायुक्तायै
षाड्गुण्यपरिपूरितायै
नित्यक्लिन्नायै

३ निरुपमायै नमः
निर्वाणसुखदायिन्यै ३९०
नित्याषोडशिकारूपायै
श्रीकण्ठार्धशरीरिण्यै
प्रभावत्यै
प्रभारूपायै
प्रसिद्धायै
परमेश्वर्यै
मूलप्रकृत्यै
अव्यक्तायै
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिण्यै
व्यापिन्यै ४००
विविधाकारायै
विद्याविद्यास्वरूपिण्यै
महाकामेशनयनकुमुदाह्लाद–
कौमुद्यै
भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानुसन्तत्यै
शिवदूत्यै
शिवाराध्यायै
शिवमूर्त्यै
शिवङ्कर्यै
शिवप्रियायै
शिवपरायै
शिष्टेष्टायै
शिष्टपूजितायै
अप्रमेयायै

३ स्वप्रकाशायै नमः
मनोवाचामगोचरायै
चिच्छक्त्यै
चेतनारूपायै
जडशक्त्यै
जडात्मिकायै
गायत्र्यै ४२०
व्याहृत्यै
संध्यायै नमः
द्विजवृन्दनिषेवितायै
तत्त्वासनायै
तस्मै
तुभ्यं
अय्यै
पञ्चकोशान्तरस्थितायै
निःसीममहिम्ने
नित्ययौवनायै ४३०
मदशालिन्यै
मदघूर्णितरक्ताक्ष्यै
मदपाटलगण्डभुवे
चन्दनद्रवदिग्धाङ्ग्यै
चाम्पेयकुसुमप्रियायै
कुशलायै
कोमलाकारायै
कुरुकुल्लायै
कुलेश्वर्यै
कुलकुण्डालयायै ४४०

३ कौलमार्गतत्परसेवितायै नमः।
कुमारगणनाथाम्बायै
तुष्ट्यै
पुष्ट्यै
मत्यै
धृत्यै
शान्त्यै
स्वस्तिमत्यै
कान्त्यै
नन्दिन्यै ४५०
विघ्ननाशिन्यै
तेजोवत्यै
त्रिनयनायै
लोलाक्षीकामरूपिण्यै
मालिन्यै
हंसिन्यै
मात्रे
मलयाचलवासिन्यै
सुमुख्यै
नलिन्यै ४६०
सुभ्रुवे
शोभनायै
सुरनायिकायै
कालकण्ठ्यै
कान्तिमत्यै
क्षोभिण्यै
सूक्ष्मरूपिण्यै

३ वज्रेश्वर्यै नमः
वामदेव्यै
वयोवस्थाविवर्जितायै ४७०
सिद्धेश्वर्यै
सिद्धविद्यायै
सिद्धमात्रे
यशस्विन्यै
विशुद्धिचक्रनिलयायै
आरक्तवर्णायै
त्रिलोचनायै
खट्वाङ्गादिप्रहरणायै
वदनैकसमन्वितायै
पायसान्नप्रियायै ४८०
त्वक्स्थायै
पशुलोकभयङ्कर्यै
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
डाकिनीश्वर्यै
अनाहताब्जनिलयायै
श्यामाभायै
वदनद्वयायै
दंष्ट्रोज्ज्वलायै नमः
अक्षमालादिधरायै
रुधिरसंस्थितायै ४९०
कालरात्र्यादिशक्त्योघवृतायै
स्निग्धौदनप्रियायै
महावीरेन्द्रवरदायै

३ राकिण्यम्बास्वरूपिण्यै नमः
मणिपूराब्जनिलयायै
वदनत्रयसंयुतायै
वज्रादिकायुधोपेतायै
डामर्यादिभिरावृतायै
रक्तवर्णायै
मांसनिष्ठायै ५००
गुडान्नप्रीतमानसायै
समस्तभक्तसुखदायै
लाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाधिष्ठानाम्बुजगतायै
चतुर्वक्त्रमनोहरायै
शूलाद्यायुसम्पन्नायै
पीतवर्णायै
अतिगर्वितायै
मेदोनिष्ठायै
मधुप्रीतायै ५१०
वन्धिन्यादिसमन्वितायै
दध्यन्नासक्तहृदयायै
काकिनीरूपधारिण्यै
मूलाधाराम्बुजारूढायै
पञ्चवक्त्रायै
अस्थिसंस्थितायै
अङ्कुशादिप्रहरणायै
वरदादिनिशेवितायै
मुद्गौदनासक्तचित्तायै

ॐ साकिन्यम्बास्वरूपिण्यै नमः ५२०
आज्ञाचक्राब्जनिलयायै
शुक्लवर्णायै
षडाननायै
मज्जासंस्थायै
हंसवतीमुख्यशक्तिसमन्वितायै
हरिद्रान्नैकरसिकायै
हाकिनीरूपधारिण्यै
सहस्रदलपद्मस्थायै
सर्ववर्णोपशोभितायै
सर्वायुधधरायै ५३०
शुक्लसंस्थितायै
सर्वतोमुख्यै
सर्वौदनप्रीतचित्तायै
याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाहा
स्वधा
अमत्यै
मेधायै
श्रुत्यै
स्मृत्यै ५४०
अनुत्तमायै
पुण्यकीर्त्यै
पुण्यलभ्यायै
पुण्यश्रवणकीर्तनायै
पुलोमजार्चितायै

ॐ बन्धमोचन्यै नमः
बर्बरालकायै
विमर्शरूपिण्यै
विद्यायै
वियदादिजगत्प्रसुवे ५५०
सर्वव्याधिप्रशमन्यै
सर्वमृत्युनिवारिण्यै
अग्रगण्यायै
अचिन्त्यरूपायै
कलिकल्मषनाशिन्यै
कात्यायन्यै
कालहन्त्र्यै
कमलाक्षनिषेवितायै
ताम्बूलपूरितमुख्यै
दाडिमीकुसुमप्रभायै ५६०
मृगाक्ष्यै
मोहिन्यै
मुख्यायै
मृडान्यै
मित्ररूपिण्यै
नित्यतृप्तायै
भक्तनिधये
नियन्त्र्यै
निखिलेश्वर्यै
मैत्र्यादिवासनालभ्यायै ५७०
महाप्रलयसाक्षिण्यै

३ परस्यै शक्त्यै नमः
परायै निष्ठायै
प्रज्ञानघनरूपिण्यै
माध्वीपानालसायै
मत्तायै
मातृकावर्णरूपिण्यै
महाकैलासनिलयायै
मृणालमृदुदोर्लतायै
महनीयायै ५८०
दयामूर्त्यै
महासाम्राज्यशालिन्यै
आत्मविद्यायै
महाविद्यायै
श्रीविद्यायै
कामसेवितायै
श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै
त्रिकूटायै
कामकोटिकायै
कटाक्षकिङ्करीभूतकमला-
कोटिसेवितायै ५९०
शिरःस्थितायै
चन्द्रनिभायै
भालस्थायै
इन्द्रधनुःप्रभायै
हृदयस्थायै
रविप्रख्यायै

३ त्रिकोणान्तरदीपिकायै नमः
दाक्षायण्यै
दैत्यहन्त्र्यै
दक्षयज्ञविनाशिन्यै ६००
दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै
दरहासोज्ज्वलमुख्यै
गुरुमूर्तये
गुणनिधये
गोमात्रे
गुहजन्मभुवे
देवेश्यै
दण्डनीतिस्थायै
दहराकाशरूपिण्यै
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथि-
मण्डलपूजितायै ६१०
कलात्मिकायै
कलानाथायै
काव्यालापविनोदिन्यै
सचामररमावाणीसव्यदक्षिण-
सेवितायै
आदिशक्त्यै
अमेयायै
आत्मने
परमायै
पावनाकृतये
अनेककोटिब्रह्माण्डजनन्यै ६२०

३ दिव्यविग्रहायै नमः
क्लींकार्यै
केवलायै
गुह्यायै
कैवल्यपददायिन्यै
त्रिपुरायै
त्रिजगद्वन्द्यायै
त्रिमूर्तये
त्रिदशेश्वर्यै
त्र्यक्षर्यै ६३०
दिव्यगन्धाढ्यायै
सिन्दूरतिलकाञ्चितायै
उमायै
शैलेन्द्रतनयायै
गौर्यै
गन्धर्वसेवितायै
विश्वगर्भायै
स्वर्णगर्भायै
अवरदायै
वागधीश्वर्यै ६४०
ध्यानगम्यायै
अपरिच्छेद्यायै
ज्ञानदायै
ज्ञानविग्रहायै
सर्ववेदान्तसंवेद्यायै
सत्यानन्दस्वरूपिण्यै
लोपामुद्रार्चितायै

३ लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
अदृश्यायै
दृश्यरहितायै ६५०
विज्ञात्र्यै
वेद्यवर्जितायै
योगिन्यै
योगदायै
योग्यायै
योगानन्दायै
युगन्धरायै
इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रिया–
शक्तिस्वरूपिण्यै
सर्वाधारायै
सुप्रतिष्ठायै ६६०
सदसद्रूपधारिण्यै
अष्टमूर्त्यै
अजाजैत्र्यै
लोकयात्राविधा–
यिन्यै
एकाकिन्यै
भूमरूपायै
निर्द्वैतायै
द्वैतवर्जितायै
अन्नदायै
वसुदायै ६७०
वृद्धायै
ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिण्यै

३ बृहत्यै नमः
ब्राह्मण्यै
ब्राह्म्यै
ब्रह्मानन्दायै
बलिप्रियायै
भाषारूपायै
बृहत्सेनायै
भावाभावेविवर्जितायै ६८०
सुखाराध्यायै
शुभकर्यै
शोभनायै सुलभायै गत्यै
राजराजेश्वर्यै
राज्यदायिन्यै
राज्यवल्लभायै
राजत्कृपायै
राजपीठनिवेशितनिजाश्रितायै
राज्यलक्ष्म्यै
कोशनाथायै ६९०
चतुरङ्गबलेश्वर्यै
साम्राज्यदायिन्यै
सत्यसन्धायै
सागरमेखलायै
दीक्षितायै
दैत्यशमन्यै
सर्वलोकवशङ्कर्यै
सर्वार्थदात्र्यै

३ सावित्र्यै नमः
सच्चिदानन्दरूपिण्यै ७००
देशकालापरिच्छिन्नायै
सर्वगायै
सर्वमोहिन्यै
सरस्वत्यै
शास्त्रमय्यै
गुहाम्बायै
गुह्यरूपिण्यै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै
सदाशिवपतिव्रतायै
सम्प्रदायेश्वर्यै ७१०
साधुने
यै
गुरुमण्डलरूपिण्यै
कुलोत्तीर्णायै
भगाराध्यायै
मायायै
मधुमत्यै
मह्यै
गणाम्बायै
गुह्यकाराध्यायै ७२०
कोमलाङ्ग्यै
गुरुप्रियायै
स्वतन्त्रायै
सर्वतन्त्रेश्यै

३ दक्षिणामूर्तिरूपिण्यै नमः
सनकादिसमाराध्यायै
शिवज्ञानप्रदायिन्यै
चित्कलायै
आनन्दकलिकायै
प्रेमरूपायै ७३०
प्रियङ्कर्यै
नामपारायणप्रीतायै
नन्दिविद्यायै
नटेश्वर्यै
मिथ्याजगदधिष्ठानायै
मुक्तिदायै
मुक्तिरूपिण्यै
लास्यप्रियायै
लयकर्यै
लज्जायै ७४०
रम्भादिवन्दितायै
भवदावसुधावृष्ट्यै
पापारण्यदवानलायै
दौर्भाग्यतूलवातूलायै
जराध्वान्तरविप्रभायै
भाग्याब्धिचन्द्रिकायै
भक्तचित्तकेकिघनाघनायै
रोगपर्वतदम्भोलये
मुत्युदारुकुठारिकायै
महेश्वर्यै ७५०

३ महाकाल्यै नमः
महाग्रासायै
महाशनायै
अपर्णायै
चण्डिकायै
चण्डमुण्डासुरनिषूदिन्यै
क्षराक्षरात्मिकायै
सर्वलोकेश्यै
विश्वधारिण्यै
त्रिवर्गदात्र्यै ७६०
त्रिगुणात्मिकायै
स्वर्गापवर्गदायै
शुद्धायै
जपापुष्पनिभाकृतये
ओजोवत्यै
द्युतिधरायै
यज्ञरूपायै
प्रियव्रतायै ७७०
दुराराध्यायै
दुराधर्षायै
पाटलीकुसुमप्रियायै
महत्यै
मेरुनिलयायै
मन्दारकुसुमप्रियायै
वीराराध्यायै
विराड्रूपायै

३ विरजसे नमः
विश्वतोमुख्यै ७८०
प्रत्यग्रूपायै
पराकाशायै
प्राणदायै
प्राणरूपिण्यै
मार्तण्डभैरवाराध्यायै
मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधुरे
त्रिपुरेश्यै
जयत्सेनायै
निस्त्रैगुण्यायै
परापरायै ७९०
सत्याज्ञानानन्दरूपायै
सामरस्यपरायणायै
कपर्दिन्यै
कलामालायै
कामदुहे
कामरूपिण्यै
कलानिधये
काव्यकलायै
रसज्ञायै
रसशेवधये ८००
पुष्टायै
पुरातनायै
पूज्यायै
पुष्करायै
पुष्करेक्षणायै
परस्मै ज्योतिषे
परस्मै धाम्ने
परमाणवे
परात्परायै

३ पाशहस्तायै नमः ८१०
पाशहन्त्र्यै
परमन्त्रविभेदिन्यै
मूर्तायै
अमूर्तायै नमः
अनित्यतृप्तायै
मुनिमानसहंसिकायै
सत्यव्रतायै
सत्यरूपायै
सर्वान्तर्यामिन्यै
सत्यै ८२०
ब्रह्माण्यै
ब्रह्मणे
जनन्यै
बहुरूपायै
बुधार्चितायै
प्रसवित्र्यै
प्रचण्डायै
आज्ञायै
प्रतिष्ठायै
प्रकटाकृतये ८३०
प्राणेश्वर्यै
प्राणदात्र्यै
पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै
विशृङ्खलायै
विविक्तस्थायै
वीरमात्रे
वियत्प्रसुवे
मुकुन्दायै
मुक्तिनिलयायै
मूलविग्रहरूपिण्यै ८४०

३ भावज्ञायै नमः
भवरोगघ्न्यै
भवचक्रप्रवर्तिन्यै
छन्दः सारायै
शास्त्रसारायै
मन्त्रसारायै
तलोदर्यै नमः
उदारकीर्तये
उद्दामवैभवायै
वर्णरूपिण्यै ८५०
जन्ममृत्युजरातप्तजन—
विश्रान्तिदायिन्यै
सर्वोपनिषदुद्घुष्टायै
शान्त्यतीतकलात्मिकायै
गम्भीरायै
गगनान्तस्थायै
गर्वितायै
गानलोलुपायै
कल्पनारहितायै
काष्ठायै
अकान्तायै ८६०
कान्तार्धविग्रहायै
कार्यकारणनिर्मुक्तायै
कमकेलितरङ्गितायै
कनत्कनकताटङ्कायै
लीलाविग्रहधारिण्यै
अजायै
क्षयविनिर्मुक्तायै

३ मुग्धायै नमः
क्षिप्रप्रसादिन्यै
अन्तर्मुखसमाराध्यायै ८७०
बहिर्मुखसुदुर्लभायै
त्रय्यै
त्रिवर्गनिलयायै
त्रिस्थायै
त्रिपुरमालिन्यै
निरामयायै
निरालम्बायै
स्वात्मारामायै
सुधास्रुत्यै
संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरण—
पण्डितायै ८८०
यज्ञप्रियायै
यज्ञकर्त्र्यै
यजमानस्वरूपिण्यै
धर्माधारायै
धनाध्यक्षायै
धनधान्यविवर्धिन्यै
विप्रप्रियायै
विप्ररूपायै
विश्वभ्रमणकारिण्यै
विश्वग्रासायै ८९०
विद्रुमाभायै
वैष्णव्यै
विष्णुरूपिण्यै
अयोन्यै

३ योनिनिलयायै नमः
कूटस्थायै
कुलरूपिण्यै
वीरगोष्ठीप्रियायै
वीरायै
नैष्कर्म्यायै ९००
नादरूपिण्यै
विज्ञानकलनायै
कल्यायै
विदग्धायै
बैन्दवासनायै
तत्त्वाधिकायै
तत्त्वमय्यै
तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै
सामगानप्रियायै
सौम्यायै ९१०
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सव्यापसव्यमार्गस्थायै
सर्वापद्विनिवारिण्यै
स्वस्थायै
स्वभावमधुरायै
धीरायै
धीरसमर्चितायै
चैतन्यार्घ्यसमाराध्यायै
चैतन्यकुसुमप्रियायै
सदोदितायै ९२०

३ सदातुष्टायै नमः
तरुणादित्यपाटलायै
दक्षिणादक्षिणाराध्यायै
दरस्मेरमुखाम्बुजायै
कौलिनीकेवलायै
अनर्घ्यकैवल्यपददायिन्यै
स्तोत्रप्रियायै
स्तुतिमित्यै
श्रुतिसंस्तुतवैभवायै
मनस्विन्यै ९३०
मानवत्यै
महेश्यै
मङ्गलाकृतये
विश्वमात्रे
जगद्धात्र्यै
विशालाक्ष्यै
विरागिण्यै
प्रगल्भायै
परमोदारायै
परमोदायै ९४०
मनोमय्यै
व्योमकेश्यै
विमानस्थायै
वज्रिण्यै
वामकेश्वर्यै
पञ्चयज्ञप्रियायै

३	पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिन्यै नमः		३	पूर्वजायै नमः	
	पञ्चम्यै			त्रिपुराम्बिकायै	
	पञ्चभूतेश्यै			दशमुद्रासमाराध्यायै	
	पञ्चसङ्ख्योपचारिण्यै	९५०		त्रिपुराश्रीवशङ्कर्यै	
	शाश्वत्यै			ज्ञानमुद्रायै	
	शाश्वतैश्वर्यायै			ज्ञानगम्यायै	९८०
	शर्मदायै			ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै	
	शम्भुमोहिन्यै			योनिमुद्रायै	
	धरायै			त्रिखण्डेश्यै	
	धरसुतायै			त्रिगुणायै	
	धन्यायै			अम्बायै	
	धर्मिण्यै			त्रिकोणगायै	
	धर्मवर्धिन्यै			अनघायै	
	लोकातीतायै	९६०		अद्भुतचारित्रायै	
	गुणातीतायै			वाञ्छितार्थप्रदायिन्यै	
	सर्वातीतायै			अभ्यासातिशयज्ञातायै	९९०
	शमात्मिकायै			षडध्वातीतरूपिण्यै	
	बन्धूककुसुमप्रख्यायै			अव्याजकरुणामूर्तये	
	बालायै			अज्ञानध्वान्तदीपिकायै	
	लीलाविनोदिन्यै			आबालगोपविदितायै	
	सुमङ्गल्यै			सर्वानुल्लङ्घ्यशासनायै	
	सुखकर्यै			श्रीचक्रराजनिलयायै	
	सुवेषाढ्यायै			श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै	
	सुवासिन्यै	९७०		श्रीशिवायै	
	सुवासिन्यर्चनप्रीतायै			शिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै	
	आशोभनायै			श्रीललिताम्बिकायै नमः	१०००
	शुद्धमानसायै				
	बिन्दुतर्पणसन्तुष्टायै				

इति श्रीललितासहस्रनामावलिः सम्पूर्णा।।

श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ—ऐं—ह्रीं—श्रीं

३ रजताचलशृङ्गाग्रमध्यस्थायै नमः ३ पारिजातगुणाधिक्यपटाव्जायै नमः

हिमाचलमहावंशपावनायै	सुपद्मरागसङ्काशचरणायै
शङ्करार्धाङ्गसौन्दर्यशरीरायै	कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै
लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै	श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै
महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै	सचामररमावाणीवीजितायै
शशाङ्कशेखरप्राणवल्लभायै	भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै
सदापञ्चदशात्मैक्यस्वरूपायै	भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकाङ्ग्यै
वज्रमाणिक्यकटककिरीटायै	अनङ्गजनकापाङ्गवीक्षणायै
कस्तूरीतिलकोल्लासिनिटलायै	ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरञ्जितायै
भस्मरेखाङ्कितलसन्मस्तकायै	शचीमुख्यामरवधूसेवितायै
विकचाम्भोरुहदललोचनायै	लीलाकल्पितब्रह्माण्मण्डलायै
शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै	अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
लसत्काञ्चनताटङ्कयुगलायै	एकातपत्रसाम्राज्यादायिकायै
मणिदर्पणसङ्काशकपोलायै	सनकादिसमाराध्यपादुकायै
ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै	देवर्षिभिस्तूयमानवैभवायै
सुपक्वदाड़िमीबीजरदनायै	कलशोद्भवदुर्वासःपूजितायै
कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै	मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै
स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै	चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्तिन्यै
गिरीशबद्धमाङ्गल्यमङ्गलायै	चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै
पद्मपाशाङ्कुशलसत्कराब्जायै	शशाङ्कखण्डसम्भूतसुदेहायै
पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै	मत्तहंसवधूमन्दगमनायै
सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै	वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै
रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै	अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै
कनकाङ्गदकेयूरभूषितायै	पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै
बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै	अव्याजकरुणापूरपूरितायै
बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै	नितान्तसच्चिदानन्दसंयुक्तायै
सौभाग्यजातशृङ्गारमध्यमायै	सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै
दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै	रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै

ॐ हानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै नमः
महापद्माटवीमध्यनिवासायै
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै
महापापौघपापानां विनाशिन्यै
दुष्टभीतिमहाभीतिभञ्जनायै
समस्तदेवदनुजप्रेरकायै
समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै
अनाहतमहापद्ममन्दिरायै
सहस्रारसरोजातवासितायै
पुनरावृत्तिरहितपुरस्थायै
वाणीगायत्रीसन्नुतायै
रमाभूमिसुताराध्यपदाब्जायै
लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै
सहस्ररतिसौन्दर्यशरीरायै
भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै
सत्यसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै
श्रीलोचनकृतोल्लासफलदायै
श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै
दक्षाध्वरविनिर्भेदसाधनायै
श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै
चन्द्रशेखरभक्तार्तिभञ्जनायै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै
नामपारायणाभीष्टफलदायै
सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै
श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यगायै
अनाद्यन्तस्वयम्भूतदिव्यमूर्त्यै

ॐ भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै नमः
मातृमण्डलसंयुक्तललितायै
भण्डदैत्यमहासत्वनाशनायै
क्रूरभण्डशिरश्छेदनिपुणायै
धात्रच्युतसुराधीशसुखायै
चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै
रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षणायै
महिषासुरदोवीर्यनिग्रहायै
अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै
महेशयुक्तनटनतत्परायै
निजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै
वृषभध्वजविज्ञानभावनायै
जन्ममृत्युजरारोगभञ्जनायै
विधेयमुक्तविज्ञानसिद्धदायै
कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै
राजराजार्चितपदसरोजायै
सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्त्वायै
श्रीवीरभक्तविज्ञाननिधनायै
अशेषदुष्टदनुजसूदनायै
साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै
हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै
दक्षप्रजापतिसुरवेषाढ्यायै
सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै
नित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै
महादेवसमायुक्तशरीरायै
महादेवरतौत्सुक्यमहादेव्यै

।। श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा।।

——:०:——

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमालामन्त्रस्य हयग्रीवऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीललिताम्बादेवतायै नमः हृदये ३। क० ५ बीजाय नमः गुह्ये। स० ४ शक्तये नमः पादयोः ५। ह० ६ कीलकाय नमः नाभौ ६। श्रीललिताम्बाप्रसादसिद्धये जपे (पूजने) विनियोगाय सर्वाङ्गे ७।।

कूटत्रय द्विरावृत्या (बालया वा) षडङ्गद्वयम्।

अथ ध्यानम्

अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्यम्।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे।। १।।

लमितिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ॐ ककाररूपायै नमः
कल्याण्यै
कल्याणगुणशालिन्यै
कल्याणशैलनिलयायै
कमनीयायै
कलावत्यै
कमलाक्ष्यै
कल्मषघ्न्यै
करुणामृतसागरायै
कदम्बकाननावासायै १०
कदम्बकुसुमप्रियायै
कन्दर्पविद्यायै
कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षणायै
कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलित-
ककुप्तटायै
ॐ कलिदोषहरायै नमः
कञ्जलोचनायै
कम्रविग्रहायै
कर्मादिसाक्षिण्यै
कारयित्र्यै
कर्मफलप्रदायै २०
एकाररूपायै
एकाक्षर्यै
एकानेकाक्षराकृत्यै
एतत्तदित्यनिर्देश्यायै
एकानन्दचिदाकृत्यै
एवमित्यागमाबोध्यायै
एकभक्तिमदर्चितायै
एकाग्रचित्तनिर्ध्यातायै
एषणारहितादृतायै

एलासुगन्धिचिकुरायै नमः ३०
एनःकूटविनाशिन्यै
एकभोगायै
एकरसायै
एकैश्वर्यप्रदायिन्यै
एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै
एकान्तपूजितायै
एघमानप्रभायै
एकदनेकजगदीश्वर्यै
एकवीरादिसंसेव्यायै
एकप्राभावशालिन्यै ४०
ईकाररूपायै
ईशित्र्यै
ईप्सितार्थप्रदायिन्यै
ईदृगित्यविनिर्देश्यायै
ईश्वरत्वविधायिन्यै
ईशानादिब्रह्ममय्यै
ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदायै
ईक्षित्र्यै
ईक्षणसृष्टाण्डकोट्यै
ईश्वरबल्लभायै
ईडितायै ५०
ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै
ईशाधिदेवतायै
ईश्वरप्रेरणकर्यै
ईशताण्डवसाक्षिण्यै
ईश्वरोत्सङ्गनिलयायै
ईतिबाधाविनाशिन्यै
ईहाविरहितायै
ईशशक्त्यै
ईषत्स्मिताननायै

३ लकाररूपायै नमः
ललितायै
लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै
लाकिन्यै
ललनारूपायै
लसद्दाडिमपाटलायै
ललन्तिकालसत्फालायै
ललाटनयनार्चितायै
लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्ग्यै
लक्षकोट्यण्डनायिकायै ७०
लक्ष्यार्थायै
लक्षणागम्यायै
लब्धकामायै
लतातनवे
ललामराजदलिकायै
लम्बिमुक्तालताञ्चितायै
लम्बोदरप्रसुवे
लभ्यायै
लज्जाढ्यायै
लयवर्जितायै ८०
ह्रींकाररूपायै
ह्रींकारनिलयायै
ह्रींपदप्रियायै
ह्रींकारबीजायै
ह्रींकारमन्त्रायै
ह्रींकारलक्षणायै
ह्रींकारजपसुप्रीतायै
ह्रींमत्यै
ह्रींविभूषणायै
ह्रींशीलायै ९०
ह्रींपदाराध्यायै

३ ह्रींगर्भायै नमः
ह्रींपदाभिधायै
ह्रींकारवाच्यायै
ह्रींकारपूज्यायै
ह्रींकारपीठिकायै
ह्रींकारवेद्यायै
ह्रींकारचिन्त्यायै
ह्रीं
ह्रींशरीरिण्यै १००
हकाररूपायै
हलधृक्पूजितायै
हरिणेक्षणायै
हरप्रियायै
हराराध्यायै
हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै
हयारूढासेवितांघ्र्यै
हयमेधसमर्चितायै
हर्यक्षवाहनायै
हंसवाहनायै ११०
हतदानवायै
हत्यादिपापशमन्यै
हरिदश्वादिसेवितायै
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचायै
हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गनायै
हरिद्राकुङ्कुमादिग्धायै
हर्यश्वाद्यमरार्चितायै
हरिकेशसख्यै
हादिविद्यायै
हालामदालसायै १२०
सकाररूपायै
सर्वज्ञायै

३ सर्वेश्यै नमः
सर्वमङ्गलायै
सर्वकर्त्र्यै
सर्वभर्त्र्यै
सर्वहर्त्र्यै
सनातन्यै
सर्वानवद्यायै
सर्वाङ्गसुन्दर्यै १३०
सर्वसाक्षिण्यै
सर्वात्मिकायै
सर्वसौख्यदात्र्यै
सर्वविमोहिन्यै
सर्वाधारायै
सर्वगतायै
सर्वावगुणवर्जितायै
सर्वारुणायै
सर्वमात्रे
सर्वभूषणभूषितायै १४०
ककारार्थायै
कालहन्त्र्यै
कामेश्यै
कामितार्थदायै
कामसञ्जीविन्यै
कल्यायै
कठिनस्तनमण्डलायै
करभोरवे
कलानाथमुख्यै
कचजिताम्बुदायै
कटाक्षस्यन्दिकरुणायै
कपालिप्राणनायिकायै
कारुण्यविग्रहायै

३ कान्तायै नमः
कान्तिधूतजपावल्यै
कलालापायै
कम्बुकण्ठ्यै
करनिर्जितपल्लवा ै
कल्पल्लीसमभुजायै
कस्तूरीतिलकाञ्चितायै १६०
हकारार्थायै
हंसगत्यै
हाटकाभरणोज्ज्वलायै
हारहारिकुचाभोगायै
हाकिन्यै
हल्यवर्जितायै
हरित्पतिसमाराध्यायै
हठात्कारहतासुरायै
हर्षप्रदायै
हविर्भोक्त्र्यै १७०
हार्दसन्तमसापहायै
हल्लीसलास्यसन्तुष्टायै
हंसमन्त्रार्थरूपिण्यै
हानोपादाननिर्मुक्तायै
हर्षिण्यै
हरिसोदर्यै
हाहाहूहूमुखस्तुत्यायै
हानिवृद्धिविवर्जितायै
हय्यङ्गवीनहृदयायै
हरिगोपारुणांशुकायै १८०
लकाराख्यायै
लतापूज्यायै
लयस्थितत्युद्भवेश्वर्यै
लास्यदर्शनसन्तुष्टायै

३ लाभालाभविवर्जितायै नमः
लंघ्येतराज्ञायै
लावण्यशालिन्यै
लघुसिद्धिदायै
लाक्षारससवर्णाभायै
लक्ष्मणाग्रजपूजितायै १९०
लभ्येतरायै
लब्धभक्तिसुलभायै
लांगलायुधायै
लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरि–
वीजितायै
लज्जापदसमाराध्यायै
लम्पटायै
लकुलीश्वर्यै
लब्धमानायै
लब्धरसायै
लब्धसम्पत्समुन्नत्यै २००
ह्रींकारिण्यै
ह्रींकाराद्यायै
ह्रींमध्यायै
ह्रींशिखामणये
ह्रींकारकुण्डाग्निशिखायै
ह्रींकारशशिचन्द्रिकायै
ह्रींकारभास्कररुच्यै
ह्रींकाराम्भोदचञ्चलायै
ह्रीङ्कारकन्दाङ्कुरिकायै
ह्रींकारैकपरायणायै २१०
ह्रींकारदीर्घिकाहंस्यै
ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै
ह्रीङ्कारारण्यहरिण्यै
ह्रीङ्कारावालवल्लर्यै

३ ह्रींङ्कारपञ्जरशुक्यै नमः
ह्रींकाराङ्गणदीपिकायै
ह्रींङ्कारकन्दरासिंह्यै
ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिकायै
ह्रींङ्कारसुमनोमाध्व्यै
ह्रींकारतरुमञ्जर्यै २२०
सकाराख्यायै
समरसायै
सकलागमसंस्तुतायै
सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमये
सदसदाश्रयायै
सकलायै
सच्चिदानन्दायै
साध्यायै
सद्गतिदायिन्यै
सनकादिमुनिध्येयायै २३०
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सकलाधिष्ठानरूपायै
सत्यरूपायै
समाकृत्यै
सर्वप्रपञ्चनिर्मात्र्यै
समानाधिकवर्जितायै
सर्वोत्तुङ्गायै
सङ्गहीनायै
सगुणायै
सकलेष्टदायै २४०
ककारिण्यै

३ काव्यलोलायै नमः।
कामेश्वरमनोहरायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कामेशोत्सङ्गवासिन्यै
कामेश्वरालिंगितांग्यै
कामेश्वरसुखप्रदायै
कामेश्वरप्रणयिन्यै
कामेश्वरविलासिन्यै
कामेश्वरतपस्सिद्ध्यै २५०
कामेश्वरमनःप्रियायै
कामेश्वरप्राणनाथायै
कामेश्वरविमोहिन्यै
कामेश्वरब्रह्मविद्यायै
कामेश्वरगृहेश्वर्यै
कामेश्वराह्लादकर्यै
कामेश्वरमहेश्वर्यै
कामेश्वर्यै
कामकोटिनिलयायै
कांक्षितार्थदायै २६०
लकारिण्यै
लब्धरूपायै
लब्धधिये
लब्धवांछितायै
लब्धपापमनोदूरायै
लब्धहङ्कारदुर्गमायै
लब्धशक्त्यै
लब्धदेहायै

ॐ लब्धैश्वर्यसमुन्नत्यै नमः
लब्धवृद्धये २७०
लब्धलीलायै
लब्धयौवनशालिन्यै
लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्यायै
लब्धविभ्रमायै
लब्धरागायै
लब्धपतये
लब्धनानागमस्थित्यै
लब्धभोगायै
लब्धसुखायै
लब्धहर्षाभिपूरितायै २८०
ह्रींकारमूर्तये
ह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिकायै
ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधायै
ह्रींकारकमलेन्दिरायै
ह्रींकारमणिदीपार्चिषे

ॐ ह्रींकारतरुशारिकायै नमः
ह्रींकारपेटकमणये
ह्रींकारादर्शविम्बितायै
ह्रींकारकोशासिलतायै
ह्रींकारस्थाननर्तक्यै २९०
ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणये
ह्रींकारबोधितायै
ह्रींकारमणिसौवर्णस्तंभवि-
द्रुमपुत्रिकायै
ह्रींकारवेदोपनिषदे
ह्रींकाराध्वरदक्षिणायै
ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पक-
वल्लर्यै
ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै
ह्रींकारार्णवकौस्तुभायै
ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वायै
ह्रींकारपरसौख्यदायै ३००

ॐ, ऐं, ह्रीं, श्रीं श्रीमद्राजराजेश्वर्यै नमः

श्री ललिताम्वात्रिशत नामावलिः सम्पूर्णा।

परिशिष्टम्

१— श्रीविद्यार्णवोक्त सङ्क्षेपतः श्रीचक्रार्चनम्

तत्र प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तं विधाय, मातृकादिन्यासांश्च विधाय, स्वेष्टमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। तत—

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां जपे।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य आनन्दोऽहमिति विभाव्य सपर्याप्रकरणोक्तप्रकारेण कलशं संस्थाप्य तेनोदकेन पूजाद्रव्याणि सम्प्रोक्ष्य, शङ्खस्थापनं कुर्यात्।

तद्यथा— श्रीचक्रपुरतः स्ववामे त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्त्रं मत्यमुद्रया निर्माय मूलषडङ्गैरभ्यर्च्य ''फट्'' इति शङ्खं प्रक्षाल्य तत्र गन्धपुष्पादिकं निक्षिप्य 'मूलेन' जलेनापूर्य मण्डलादिकं पूजयेत्।

''अं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः'' (इति त्रिपादिकायाम्।)

''उं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः'' (इति शङ्खे।)

'' मं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः'' (इति जले।)

ततः ''गङ्गे च यमुने चैव'' इत्यादिना तीर्थमावाह्य ''हुँ'' इत्यवगुण्ठ्य षडङ्गेन सम्पूज्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलमष्टधा जपित्वा तज्जलं किञ्चित् प्रोक्षणीतोये निक्षिप्य तेनोदकेनात्मानं पूजोपकरणं चाभ्युक्षयेत्। तद्दक्षिणे पाद्यादिपात्रं संस्थाप्यासनपूजामारभेत्। यथा—

उपर्युपरि यन्त्रस्य

३ आधारशक्तये नमः। ''एवं'' प्रकृतये० कूर्माय०, अनन्ताय० पृथिव्यै०, रसाम्बुधये० रत्नद्वीपाय०, नन्दनोद्यानाय०, रत्नमण्डपाय०, कल्पवृक्षाय,

रत्नवेदिकायै० रत्नतसिंहासनाय नमः।

पीठोपरि बैन्दवचक्रे :—

हसौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः।

वैदन्वे ''ह्स्रैं, ह्सक्ल्रीं ह्सरौः'' इति मन्त्रेण मेर्ति सङ्कल्प्य त्रिखण्डामुद्रां बुद्ध्वा पूर्ववद् ध्यात्वा प्रवहन्नासापुटेन तेजोमयं पुष्पाञ्जलावानीय।

''३ महापद्मनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।

इति मूर्तौ संस्थाप्यावाहनादि-यथाशक्त्युपचारेण पूजां विधाय श्रीचक्रे लयाङ्गदिपूजां विदध्यात्।

षडङ्गार्चनम्

३ (मूलं) श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (पराभट्टारिका) श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (''इति बिन्दौ देवीं त्रिः'' सम्पूजयेत्।)

देव्यङ्गे (बिन्दौ) अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

३ ऐं क-५ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुका पूजयामि नमः।

३ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुका पूजयामि नमः।

३ सौः स-४ शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुका पूजयामि नमः।

३ ऐं क-५ कवचाय हुँ कवचशक्ति श्रीपादुका पूजयामि नमः।

३ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुका पूजयामि नमः।

३ सौः स-४ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुका पूजयामि नमः।

ततो मध्यप्रकाक्त्र्यस्रमध्येषु गुरुपङ्क्ति पूजयेत्—तद्यथा :—

ऐं ह्रीं श्रीं गुरुपङ्क्तिभ्यो नमः

३ गुरुपादुकाभ्यो नमः, परमगुरुपादुकाभ्यो नमः, परापरगुरुपादुकाभ्यो नमः, तत आचार्य तत्पादुकाञ्च पूजयेत्।

अथावरणपूजा

चतुरस्रे त्रैलोक्यमोहनचक्रे—

(तत्र चतुरस्रस्य प्रथमरेखायां) ऐं ह्रीं श्रीं अणिमादिदेवीश्रीपादुकां पू. नमः।

(मध्यरेखायां) — ३ ब्राह्म्याद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(अन्त्यरेखायां)— ३ सर्वसङ्क्षोभिण्डयादिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(चकाग्रे) — ३ त्रिपुराचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एतः प्रकटयोगिन्य त्रैलोक्यमोहनचक्रे समुद्राः समिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टटाः सन्तु नमः। (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समपर्ययेत्)।

ततः षोडशदले सर्वाशपरिपूरके चक्रे—

३ अं....अः कामकर्षिण्यादिषोडशनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्रागे— ३ त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ एता गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

अष्टदले सर्वसक्षोभणचक्रे—

अनङ्गकुसुमाद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्रागे— ३ त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अत्र सर्वङ्क्षोभणचक्रे अनङ्गकुसुमाद्या गुप्तरयोगिन्यःसमुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः

सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

चतुर्दशारे सर्वसौभाग्यदायकेचक्रे–

३ सर्वसङ्क्षोभिण्यादिचतुर्दशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्रागे– ३ त्रिपुरसुवासिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अत्र सर्वसौभाग्यदायके चतुर्दशारचक्रे सम्प्रदाययोगिन्य समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वार्थसाधके बहिर्दशारचक्रेचक्रे–

३ सर्वासिद्धिप्रदादिदशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्रागे– ३ त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अत्र सर्वार्थसाधके बहिर्दशारचक्रे कुलोत्तीर्णयोगिन्य समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वरक्षाकरे अन्तर्दशारचक्रे– ३ सर्वज्ञादिदशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्रागे– ३ त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ अत्र सर्वरक्षाकरे अन्तर्दशारचक्रे निगर्भयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वरोगहरे अष्टारचक्रे– ३ वशिन्याद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्रागे– ३ त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अथ सर्वरोगहरे चक्रे वशिन्याद्यष्टरहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वसिद्धिप्रदे अन्तरालत्रिकोणे—

(अग्रकोणे) ३ महाकामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(दक्षिणकोणे) ३ महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(वामकोणे) ३ महाभगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(चक्राग्रे) ३ त्रिपुराम्बांचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अत्र सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे कामेश्वर्याद्या अतिरहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वानन्दमये बिन्दुचक्रे—

३ महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (त्रिवारम्)।

३ (वामे) योनिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चकाग्रे — ३ त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ अत्र सर्वानन्दमये बैन्दवचक्रे सच्चिदानन्दस्वरूपिणी परापरातिरस्योगिनी समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

ततः सपर्याप्रकरणोक्तप्रकारेण धूपदीपनैवद्यारार्तिक्यं कुर्यात्।

पुनर्यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपित्वा सहस्रानामादिभिर्जगन्मातरं संस्तूय [१]पूजासमर्पणादि—पात्रोद्वासनान्तं कर्म समापयेत्।

इति श्रीषोडशानन्दनाथ (करपात्र स्वामि) सङ्कलितायां श्रीविद्या वरिवस्या सङ्क्षेपतः श्रीचक्रार्चनं समाप्तम्।

---

१. पूजा—समर्पणादि पात्रोद्वासनान्तं कर्म १४२ पृष्ठे द्रष्टव्यम्।

सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला-मन्त्रः

अस्य श्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-वरुणादित्यऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे। सात्त्विककार-भट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः हृदये।

ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः सौः कीलकं, खड्गसिद्धौ विनियोगः। ह्रां इत्यादिनां करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्— तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति।।
लमित्यादि पञ्चपूजा।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमिस्त्रिपुरसुन्दरि (१२) हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि (३७) कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये (१०२) परमेश्वरपरमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि (२१७) श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२७१) ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि (२१६) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि (३६५) कामाकर्षिणि

बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजा-कर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशारपरिपूरकचक्रस्वामिनि (४५९) गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्ग-वेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि (५२२) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसंमोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसंपत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि संप्रदाययोगिनि (६२४) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसंपत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गल-कारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्णयोगिनि (७१२) सर्वज्ञे शर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि (७८९) वशिनि कामेश्वरि मोदिनि मिलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि (८३१) बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि (८८६) श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि (९१५) त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीत्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि (९६१) महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसम्राज्ञि नमस्ते (त्रिः) स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। १०३१।।

एकत्रिंदशधिकसहस्राक्षराणि। इति सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला।

चतुर्थ्यन्त-खड्गमालामन्त्रः

अस्य श्रीखड्गमालामन्त्रस्य उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्यऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे, ललितादेवतायै नमः हृदये, क ५ बीजाय नमः गुह्ये, ह ६ शक्तये नमः पादयोः, स ४ कीलकाय नमः नाभौ, श्रीललिताप्रसादसिद्ध्यर्थे अर्चने (पाठे) विनियोगः। कूटत्रयद्विरावृत्या करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड्शेखराम्।
हस्तैरिक्षुधनुःसृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्।।

इति ध्यात्वा मानसैः संपूज्य।

३ ऐं ह्रीं श्रीं नमः त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
हृदयदेव्यै नमः
शिरोदेव्यै नमः
शिखादेव्यै नमः
कवचदेव्यै नमः
नेत्रदेव्यै नमः
अस्त्रदेव्यै नमः
३ त्वरितायै नमः
कुलसुन्दर्यै नमः
नित्यायै नमः
नीलपताकायै नमः
विजयायै नमः

३ कामेश्वर्यै नमः
भगमालिन्यै नमः
नित्यक्लिन्नायै नमः
भेरुण्डायै नमः
वह्निवासिन्यै नमः
महावज्रेश्वर्यै नमः
शिवदूत्यै नमः
३ वासुदेवमय्यै नमः
श्रीरामानन्दमय्यै नमः
अणिमासिद्ध्यै नमः
लघिमासिद्ध्यै नमः
महिमासिद्ध्यै नमः

सर्वमङ्गलायै नमः
ज्वालामालिन्यै नमः
चित्रायै नमः
महानित्यायै नमः
परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
मित्रीशमय्यै नमः
षष्ठीशमय्यै नमः
उड्डीशमय्यै नमः
चर्यानाथमय्यै नमः
लोपामुद्रामय्यै नमः
अगस्त्यमय्यै नमः
कालतापनमय्यै नमः
धर्माचार्यमय्यै नमः
मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः
दीपकलानाथमय्यै नमः
विष्णुदेवमय्यै नमः
प्रभाकरदेवमय्यै नमः
तेजोदेवमय्यै नमः
मनोजदेवमय्यै नमः
कल्याणदेवमय्यै नमः
रत्नदेवमय्यै नमः
३ सर्वखेचर्यै नमः
सर्वबीजायै नमः
सर्वयोन्यै नमः
सर्वत्रिखण्डायै नमः
त्रैलोक्यमोहन- नमः

ईशित्वसिद्ध्यै नमः
वशित्वसिद्ध्यै नमः
प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः
भुक्तिसिद्ध्यै नमः
इच्छासिद्ध्यै नमः
प्राप्तिसिद्ध्यै नमः
सर्वकामसिद्ध्यै नमः
ब्राह्म्यै नमः
माहेश्वर्यै नमः
कौमार्यै नमः
वैष्णव्यै नमः
वाराह्यै नमः
माहेन्द्र्यै नमः
चामुण्डायै नमः
महालक्ष्म्यै नमः
सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
सर्वविद्राविण्यै नमः
सर्वाकर्षिण्यै नमः
सर्ववशङ्कर्यै नमः
सर्वोन्मादिन्यै नमः
सर्वमहाङ्कुशायै नमः
३ अनङ्गकुसुमायै नमः
अनङ्गमेखलायै नमः
अनङ्गमदनायै नमः
अनङ्गमदनातुरायै नमः
अनङ्गरेखायै नमः

चक्रस्वामिन्यै नमः
प्रकटयोगिन्यै नमः
कामाकर्षिण्यै नमः
बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः
अहङ्काराकर्षिण्यै नमः
शब्दाकर्षिण्यै नमः
स्पर्शाकर्षिण्यै नमः
रूपाकर्षिण्यै नमः
रसाकर्षिण्यै नमः
गन्धाकर्षिण्यै नमः
चित्ताकर्षिण्यै नमः
धैर्याकर्षिण्यै नमः
स्मृत्याकर्षिण्यै नमः
नामाकर्षिण्यै नमः
बीजाकर्षिण्यै नमः
आत्माकर्षिण्यै नमः
अमृताकर्षिण्यै नमः
शरीराकर्षिण्यै नमः
सर्वाशापरिपूरचक्रस्वा-
मिन्यै नमः
गुप्तयोगिन्यै नमः

३ सम्प्रदाययोगिन्यै नमः
सर्वसिद्धिप्रदायै नमः
सर्वसम्पत्प्रदायै नमः
सर्वप्रियङ्कर्यै नमः

अनङ्गवेगिन्यै नमः
अनङ्गाङ्कुशायै नमः
अनङ्गमालिन्यै नमः
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वा-
मिन्यै नमः
गुप्ततरयोगिन्यै नमः
सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
सर्वविद्राविण्यै नमः
सर्वाकर्षिण्यै नमः
सर्वाह्लादिन्यै नमः
सर्वसम्मोहिन्यै नमः
सर्वस्तम्भिन्यै नमः
सर्वजृम्भिण्यै नमः
सर्ववशङ्कर्यै नमः
सर्वरञ्जिन्यै नमः
सर्वोन्मादिन्यै नमः
सर्वार्थसाधिन्यै नमः
सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः
सर्वमन्त्रमय्यै नमः
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः
सर्वसौभाग्यदायक-
चक्रस्वामिन्यै नमः
३ निगर्भयोगिन्यै नमः
वशिन्यै नमः
कामेश्वर्यै नमः
मोदिन्यै नमः

सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः
सर्वकामप्रदायै नमः
सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः
सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः
सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः
सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः
सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः
सर्वार्थसाधकचक्र—
स्वामिन्यै नमः
कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः
सर्वज्ञायै नमः
सर्वशक्तये नमः
सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः
सर्वज्ञानमय्यै नमः
सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः
सर्वाधारस्वरूपायै नमः
सर्वपापहरायै नमः
सर्वानन्दमय्यै नमः
सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः
सर्वेप्सितप्रदायै नमः
सर्वरक्षाकरचक्र
स्वामिन्यै नमः
३ परापररहस्य—
योगिन्यै नमः
त्रिपुरायै नमः
त्रिपुरेश्यै नमः

विमलायै नमः
अरुणायै नमः
जयिन्यै नमः
सर्वेश्वर्यै नमः
कौलिन्यै नमः
सर्वरोगहरचक्र—
स्वामिन्यै नमः
रहस्ययोगिन्यै नमः
बाणिन्यै नमः
चापिन्यै नमः
पाशिन्यै नमः
अङ्कुशिन्यै नमः
महाकामेश्वर्यै नमः
महावज्रेश्वर्यै नमः
महाभगमालिन्यै नमः
महाश्रीसुन्दर्यै नमः
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वा
मिन्यै नमः
अतिरहस्ययोगिन्यैनमः
श्रीश्रीमहाभट्टकारिकायैनमः
सर्वानन्दमयचक्र—
स्वामिन्यै नमः
३ महामहाराज्ञ्यै नमः
महामहाशक्त्यै नमः
महामहागुप्तायै नमः
महामहाज्ञप्तायै नमः

त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
त्रिपुरवासिन्यै नमः
त्रिपुराश्रियै नमः
त्रिपुरमालिन्यै नमः
त्रिपुरासिद्धायै नमः
त्रिपुराम्बामहात्रिपुर–
सुन्दर्यै नमः
महामहेश्वर्यै नमः
महामहानन्दायै नमः
महामहास्पन्दायै नमः
महामहाशयायै नमः
महामहाश्रीचक्रनगर–
साम्राज्ञै नमस्ते नमस्ते
नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं
ऐं ॐ श्रीपदेवतार्पण–
मस्तु।

इति चतुर्थ्यन्तखड्गमालामन्त्रः।

अथ योगपीठन्यासः

तत्रांसद्वयोरुद्वयकल्पितपादचतुष्टयं मुखनाभिपार्श्वद्वयमध्योपकल्पितगात्रचतुष्टयं योगपीठं निजदेहे ध्यात्वा न्यसेत्। मूलाधारे ४ (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) महाकालाय ४ रक्तवर्णाय मण्डूकाधाराय नमः। तदुपरि स्वाधिष्ठानपर्यन्तं ४ पञ्चवक्त्राय दशभुजरक्तकृष्णवामदक्षिणपार्श्वाय कालाग्निरुद्राय नमः। तदुपरि नाभिपर्यन्तं ४ बन्धूकरुचिरायै मूलप्रकृत्यै नमः। तदुपरि हृत्पर्यन्तं ४ शरच्चन्द्रप्रभायै पङ्कजद्वयधारिण्यै आधारशक्तये नमः। तदुपरि हृदय एव ४ कूर्माय नमः, ४ अनन्ताय नमः, ४ वाहाराय०, ४ पृथिव्यै०, ४ अमृतार्णवाय०, (४ समस्तमातृकामुच्चार्य) नवखण्डविराजिताय नवरत्नमयद्वीपाय नमः। (तत्रैव नवखण्डेषु ईशानादिमध्यान्तं), ४ अं १६ पुष्परागरत्नाय नमः। ४ कं ५ नीलरत्नाय० ४ चं ५ वैडूर्यरत्नाय० ४ टं ५ विद्रुमरत्नाय ४ तं ५ मौक्तिकरत्नाय० ४ पं ५ मरकतरत्नाय० ४ यं ४ वज्ररत्नाय० ४ शं ४ गोमेदरत्नाय० ४ लं क्षं पद्मरागरत्नाय नमः। तत्रैव स्वर्णपर्वताय नमः। तदुपरि ४ नन्दनोद्यानाय नमः। तन्मध्ये ४ कल्पकोद्यानाय नमः, ४ वसन्तादिषट्ऋतुभ्यो नमः। पश्चिमे ४ इन्द्रियाश्वेभ्यः नमः, पूर्वे ४ इन्द्रियार्थगजेभ्यो नमः, ४ विचित्ररत्नभूमिकायै नमः। तत्र (पश्चिमादिमध्यान्तं विलोमेन) कालचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि ४ मुद्राचक्रेश्वरी श्रीपा० ४

मातृकाचक्रेश्वरी श्रीपा० ४ रत्नचक्रेश्वरी श्रीपा० देशचक्रेश्वरी० श्री० ४ गुरुचक्रेश्वरी० श्री० ४ तत्त्वचक्रेश्वरी० श्री० ४ ग्रहचक्रेश्वरी० श्री० ४ मूर्तिचक्रेश्वरी० श्री० ४ कारणतोयपरिधये ४ माणिक्यमण्डपाय०। तस्य नैर्ऋत्यादिकोणेषु मध्ये च) देशरूपिणीशक्ति श्री० ४ कालरूपिणीशक्ति श्री० ४ आकाररूपिणीशक्ति श्री० ४ शब्दरूपिणीशक्ति श्री० ४ मध्ये संगीतयोगिनीरूपिणीशक्ति श्री० ४ तन्मध्ये समस्तगुप्तप्रकटयोगिनी चक्ररूपिणीशक्तिश्री०। (ततस्तन्मध्ये) ४ कल्पतरुभ्यो नम: (तेषामधस्तात्) ५ रत्नवेदिकायै नम:। तदुपरि ४ श्वेतच्छत्राय नम:। तस्याध: ४ रत्नसिंहासनाय नम:। (इत्येतत्सर्वं मानसपङ्कजे विन्यस्य यथायथं तत्तत्स्थानान्यध्यवस्य रत्नसिंहासनत्वेनाऽऽत्मदेहं ध्यायेत्)। तत्र सिंहासनदेवता न्यसेत्। दक्षांसे ४ रक्तवर्णाय ऋषभरूपाय धर्माय नम:। वामांसे ४ श्यामवर्णाय सिंहरूपाय ज्ञानाय०। वामोरौ ४ पीतवर्णाय भूताकाराय वैराग्याय०। दक्षोरौ ४ इन्द्रनीलप्रभाय गजरूपाय ऐश्वर्याय०। (एते सिंहासनपादरूपिण:)। मुखे ४ अधर्माय०। वामपार्श्वे ४ अज्ञानाय०। नाभौ ४ अवैराग्याय० दक्षपर्श्वे ४ अनैश्वर्याय०(एते सिंहासनगात्ररूपिण:)। मध्ये ४ मायायै० ४ विद्यायै०। तदुपरि ४ आनन्दकन्दाय० ४ संविन्नालाय० ४ प्रकृतिमयपत्रेभ्य:० ४ विकारमयकेसरभ्य:० पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्व-तत्त्वरूपायै कर्णिकायै० तस्यां ४ अं सूर्यमण्डलाय० ४ उं सोममण्डलाय० ४ मं वह्निमण्डलाय० ४ सं सत्त्वाय० ४ रं रजसे, ४ तं तसमे० ४ आं आत्मने० ४ अं अन्तरात्मने० ४ पं परमात्मने० ४ ह्रीं ज्ञानात्मने०। तदुपरि पूर्वादिचतुर्दिक्षु मध्ये च ४ ज्ञानतत्त्वात्मने नम:, ४ मायातत्त्वात्मने० ४ कलातत्त्वात्मने० ४ विद्यातत्त्वात्मने ४ परतत्त्वात्मने० ४। तत: (केसरेषु पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च श्रीचक्राधारपीठस्य नवशक्तीर्न्यसेत्)। ४ दूतर्यम्बाश्री० ४ सुन्दर्यम्बाश्री० ४ सुमुख्यम्बाश्री० ४ विरूपाम्बाश्री० ४ विमलाम्बाश्री० ४ ४ अन्तर्यम्बाश्री० ४ बदर्यम्बाश्री० ४ पुरन्दर्यम्बाश्री० ४ मध्ये कर्णिकायां ४ पुष्पमर्दन्यम्बाश्री० ४। (एता वराभयधारिण्यो रक्तवर्णा ध्येया:)। तदुपरि ४ क्लीं सर्वशक्तिकमलासनाय नम: (इति सिंहासनमन्त्रं विन्यस्य तदुपरि

श्रीचक्रं ध्यात्वा), ४ मूलं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनीश्रीचक्रपादुकाभ्यो नमः इति व्यापकेन विन्यस्य, (हृदि त्रिकोणं विभाव्य तन्मध्ये) ४ मूलं ओं ह्रीं क्लीं भगवति ब्लूं नित्यकामेश्वरि स्त्रीं सर्वसत्त्ववशङ्करि सः त्रिपुरभैरवि ऐं विच्चे ह्रीं श्रीश्री महात्रिपुरसुन्दर्यम्बाश्री० इति विन्यस्य, (प्रणवादिनमोऽन्तां मूलविद्याञ्च विन्यस्य श्रीचक्रं पुरत्रयात्मकं ध्यात्वा), तत्राऽऽरोहक्रमेण ४ वाग्भवमुच्चार्य चतुरस्रषोडशदलाष्टदलात्मने शरीरात्मकाय प्रथमपुराय नमः इति व्यापकं न्यसेत्। ततः ४ कामराजमुच्चार्य चतुर्दशारद्विदशारात्मने बुद्ध्यात्मकाय द्वितीयपुराय नमः इति व्यापकम्। ४ शक्तिकूटमुच्चार्याष्टारत्रिकोणबिन्दुचक्रात्मने प्राणात्मकाय तृतीयपुराय नमः इत्यपि व्यापकं विन्यस्य ४ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्त्यादिसमस्तत्रितयात्मने श्रीचक्रस्य पुरत्रयाय नमः इति व्यापकम्। (ततो हृदयत्रिकोणस्याग्रादिकोणत्रयमपि पुरत्रयात्मकं वाग्भवादिपुरत्रयात्मकं च ध्यात्वा, तत्र प्रणवादिनमोऽन्तं वाग्भवादिकूटत्रयं न्यसेत्)। ततो नादबिन्दुकलाज्येष्ठारौद्रीवामाविषघ्नीदूतरीसर्वानन्दाभ्यः श्रीचक्रस्थत्रैलोक्यमोहनादिनवचक्रशक्तिभ्योः नमः इत्यनेन व्यापकं कुर्यात्। (ततो हृदयकमलकेसरेषु कामेश्वरीपीठस्य नवशक्तीर्न्यसेत्)। ४ मोहिन्यै नमः ४ क्षोभिण्यै०४ वशिन्यै ४ स्तम्भिन्यै०४ आकर्षिण्यै० द्राविण्यै० आह्लादिन्यै० ४ क्लिन्नायै० मध्ये ४ क्लेदिन्यै० इति विचिन्त्य, त्रिकोणमध्ये ४ (बालामूलं पञ्चदशीं) चोच्चार्य त्रिकोणरक्तवर्णोड्डीयानपीठश्री० त्रिकोणाग्रे ४ बालामूलयोर्वाग्भवद्वयमुच्चार्य चतुरस्रपीतवर्णकामरूपपीठश्री०। दक्षिणकोणे ४ कामराजद्वयमर्धचन्द्रनिभश्वेतवर्णजालन्धरपीठश्री०। वामकोणे ४ शक्तिबीजद्वयं षड्बिन्दुलाञ्छितवृत्तधूम्रवर्ण पूर्णगिरिपठश्री० इति पीठचतुष्टयं विन्यस्य (पुनर्बैन्दवे आग्नेयादिकोणेषु ४ लां ह्लां ब्रह्मणे पृथिव्यधिपतये नमो ब्रह्मप्रेतासनश्री०। ४ वां ह्लीं विष्णवेऽपामधिपतये नमो विष्णुप्रेतासनश्री०। ४ रां ह्लूं रुद्राय तेजोधिपतये नमो रुद्रप्रेतासनश्री०। ४ यां ह्लैं ईश्वराय वाय्वधिपतये नमः ईश्वरप्रेतासनश्री०। ४ ह्सौ वियदधिपतये पञ्चवक्त्राय। सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनश्री०। इति

पञ्चप्रेतासनं न्यस्य, (तदुपरि रक्तपद्मकर्णिकायां चतुरस्रगर्भितषट्कोणपीठे षडासनानि विन्यसेत्। ४ अं आं सौ: त्रिपुरसुधावर्णवासनाय नम:। ४ ऐं क्लीं सौ: त्रिपुरेश्वरी पीताम्बुजासनाय नम:। ४ ह्रीं क्लीं सौ: त्रिपुरसुन्दरी देव्यात्मासनाय नम:। ४ हैं हक्लीं ह्सौ त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नम:। ह्सैं हस्क्लीं ह्सौ: त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय नम:। ४ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी साध्यसिद्धासनाय नम: (इति विन्यस्य मध्ये चतुरस्रे चतुष्पीठे चतुरासनं न्यसेत्)। ऐशाने ४ वाग्भवद्वयमुच्चार्य अग्निचक्रे कामगिर्यालये मित्रेशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मकरुद्रात्मकशक्तिका-मेश्वरीदेवी ह्रीं क्लीं सौ: त्रिपुरसुन्दरीदेव्यात्मासनाय नम:। वायव्यकोणे ४ कामराजद्वयं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठेशानाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायके ज्ञानशक्त्यात्मविष्णवात्मकशक्तिश्रीवज्रेश्वरीदेवी हैं हक्लीं हसौ: त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नम:। नैर्ऋते ४ शक्तिबीजद्वयमुच्चार्य सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मकशक्ति-श्रीभगमालिनीदेवीह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौ: त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय नम:। आग्नेये ४ समस्तद्वयमुच्चार्य, ब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे श्रीचर्यानाथात्मके तुर्यतुर्यातीतदशाधिष्ठायके परब्रह्मशक्त्यात्मकरीत्रिपुरसुन्दरीदेवी ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी साध्यसिद्धासनाय नम:। मध्ये ४ ऐं क्लीं सौ: क० १५ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसर्वमन्त्रासनाय नम: इति विन्यस्य, ४ अं ५१ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृति-अहङ्काबुद्धिमनश्रोत्रत्वक्च क्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्श-रूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलपृथिव्यात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या योगपीठासनाय नम: इति व्यापकं कुर्यात्। ततो मूलमुच्चार्य श्रीमन्महा-त्रिपुरसुन्दरीश्री० इति षट्त्रिंशत्तत्वात्मके देहमये महायोगपीठे निजेष्टदेवतां हृदि न्यसेत्। ''इति देहमये पीठे चिन्तयेत्परदेवताम्।''

— श्रीविद्यार्णवे षष्ठ: श्वासे।

इति योगपीठन्यास:।

श्रीमहागणपति-महामन्त्र-जपविधिः

विनियोगः—

अस्य श्रीमहागणपति-महामन्त्रस्य गणक-ऋषिः, निचृगायत्री-छन्दः महागणपतिर्देवता गं बीजं ह्रीं शक्तिः, सिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपति-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः

गणकऋषये नमः (शिरसि), निचृद्गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे), महागणपतिदेवतायै नमः (हृदये), गं बीजाय नमः (गुह्ये), ह्री शक्तये नमः (पादयो), विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

कर-षडङ्ग-न्यासौ

	(प्रथमवारम्)		(द्वितीयवारम्)
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां।	अङ्गुष्ठाभ्यां	नमः।	हृदयाय नमः।
३ श्रीं गीं।	तर्जनीभ्यां	नमः।	शिरसे स्वाहा।
३ ह्रीं गूं।	मध्यमाभ्यां	नमः।	शिखायै वषट्।
३ क्लीं गैं।	अनामिकाभ्यां	नमः।	कवचाय हुम्।
३ ग्लौं गौं।	कनिष्ठिकाभ्यां	नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
३ गं गः।	करतल करपृष्ठाभ्यां	नमः।	अस्त्राय फट्।

'भूर्भुवः स्वरोम्'—इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—

बीजापूर-गदेक्षुकार्मुकरुजा चन्द्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाण-रत्नकलश-प्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्म् ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्ति-विपत्ति-संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः।।

मूलमन्त्रजपः— ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा

जपनिवेदनम्— गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवः त्वत्प्रसादाद् गणेश्वरः।।

सहस्रानामार्चन-फलप्रद-सिद्धलक्ष्मीसहित महागणपते:—

एकविंशति-नामार्चनम्

१.	गं	गणञ्जयाय	नम:	११.	गं	चिन्तामणये	नम:
२.	गं	गणपतये	नम:	१२.	गं	निधये	नम:
३.	गं	हेरम्बाय	नम:	१३.	गं	सुमङ्गलाय	नम:
४.	गं	धरणीधराय	नम:	१४.	गं	बीजाय	नम:
५.	गं	महागणपतये	नम:	१५.	गं	आशापूरकाय	नम:
६.	गं	लक्षप्रदाय	नम:	१६.	गं	वरदाय	नम:
७.	गं	क्षिप्रप्रसादनाय	नम:	१७.	गं	शिवाय	नम:
८.	गं	अमोघसिद्धये	नम:	१८.	गं	काश्यपाय	नम:
९.	गं	अमिताय	नम:	१९	गं	नन्दनाय	नम:
१०.	गं	मन्त्राय	नम:	२०.	गं	वाचासिद्धाय	नम:

२१.गं ढुण्ढिविनायकाय नम:।

प्रार्थना-स्तोत्रम्

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिली गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक:।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

नमो नम: सुरवरपूजिताङ्घ्रये, नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलदैकसिद्धये, नमो नम: करिकलभाननाय ते।।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी-वरिवस्या

प्रातः कृत्यादि—मातृकान्यासान्तं कर्म विधाय **(त्रितारीस्थाने बाला-मन्त्रयोजनम्)**। ततः पीठन्यासं कुर्यात्। तं च मूलाधारे 'मण्डूकाय नमः' इत्यारभ्य 'ह्रीं ज्ञानात्मने नम' इत्यन्तं योगपीठन्यासोक्तरीत्या विधाय हृत्पद्मस्य पूर्वादि केसरेषु—

ऐं क्लीं सौः इच्छायै नमः	३ कामदायिन्ये नमः
३ ज्ञानायै ,,	३ रत्यै नमः
३ क्रियायै ,,	३ रतिप्रियायै नमः
३ कामिन्यै ,,	नन्दायै नमः

(मध्ये) ३ मनोन्मन्यै नमः। तदुपरि—

सदाशिव-महाप्रेतपद्मासनाय नमः

३ परायै नमः ३ अपरायै नमः ३ परापरायै नमः

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी मन्त्रस्य। दक्षिणामूर्तिऋषये नमः (शिरसि), पङ्क्तिच्छन्दसे नमः (मुखे), बालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः नमः (हृदये), ऐं बीजाय नमः (गुह्ये), सौः शक्तये नमः (पादयोः), कलीं कीलकाय नमः(नाभौ) विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

कर-न्यासः

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।	ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
क्लीं तर्जनीभ्यां मनः।	क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
सौः मध्यमाभ्यां नमः।	सौः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयायदि न्यासः

ऐं हृदयाय नमः।	ऐं कवचाय हुम्।
क्लीं शिरसे स्वाहा।	क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
सौः शिखायै वषट्।	सौः अस्त्राय फट्।

बीजन्यासः

ऐं नमः। (नाभ्यादि–चरणपर्यन्तं)	क्लीं नमः। (हृदयान्नाभिपर्यन्तं)
सौ नमः। (शिरसो हृदयानतं)	ऐं नमः। (दक्षिणकरे)
क्ली नमः। (वामकरे)	सौः नमः। (उभयकरयोः)
ऐं नमः। (मूर्ध्नि)	क्लीं नमः। (मूलाधारे)

सौः नमः। (हृदि) (इति विन्यसेत्।)

नवयोनिन्यासः

ऐं	(दक्षकर्णे),	क्लीं	(वामकर्णे),	सौः	(चिबुके)
ऐं	(दक्षशङ्खे),	क्लीं	(वामशङ्खे),	सौः	(वदने),
ऐं	(दक्षनेत्रे),	क्लीं	(वामनेत्रे),	सौः	(नासिकायाम्),
ऐं	(दक्षांसे),	क्लीं	(वामांसे),	सौः	(जठरे),
ऐं	(दक्षकूर्परे),	क्लीं	(वामकूर्परे),	सौः	(कुक्षौ),
ऐं	(दक्षजानुनि),	क्लीं	(वामजानुनि),	सौः	(लिङ्गे),
ऐं	(दक्षपादे),	क्लीं	(वामपादे),	सौः	(गुह्ये),
ऐं	(दक्षपार्श्वे),	क्लीं	(वामपार्श्वे),	सौः	(हृदि),
ऐं	(दक्षस्तने),	क्लीं	(वामस्तने),	सौः	(कण्ठे),

अथ रत्यादिन्यासः

ऐं रत्यै नमः (मूलाधारे)।	क्लीं प्रीत्यै नमः (हृदि)।
सौः अमृतेश्वै नमः (भ्रूमध्ये)।	क्लीं योगेश्यै नमः (हृदि)।
सौः मनोन्मन्यै नमः (भ्रूमध्ये)।	ऐं विश्वयोन्यै नमः(मूलाधारे)।

अथ मूर्तिन्यासः

ऐं ईशान-मनोभवाय नमः (मूर्ध्नि), क्लीं तत्पुरुष-कमरध्वजाय नमः (वक्त्रे), सौः अघोर-कन्दर्पकुमाराय नमः (हृदि), ऐं वामदेव-मन्मथाय नमः (गुह्ये), क्लीं सद्योजात-कामदेवाय नमः (पादयोः),

ततो बाणन्यासः

द्रां द्राविण्यै नमः (अङ्गुष्ठयोः)। द्रीं क्षोभिण्यै नमः (तर्जन्यो)।

क्लीं वशीकरिण्यै नमः (मध्यमयोः)। ब्लू आकर्षिण्यै नमः (अनामिकायो) सः उन्मादिन्यै नमः (कनिष्ठिकयोः)। तथा च—

ह्रीं कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कन्दर्पाय नमः। ब्लू मकरध्वजाय नमः। स्त्रीं मीनकेतनाय नमः। (इति सबीजकामपञ्चकमपि पञ्चाङ्गुलिषु न्यसेत्।)

पुनर्बालामन्त्रस्य कराङ्गन्यासौ विधाय—

ततः पञ्चाङ्गेषु बाणन्यासः

द्रां द्राविण्यै नमः (मूर्ध्नि) द्रीं क्षोभिण्यै नमः (पादयोः)।

क्लीं वशीकरिण्यै नमः (वक्त्रे)। ब्लूं आकर्षिण्यै नमः (गुह्ये)।

सः उन्मादिन्यै नमः (हृदि)। तथा चैतेष्वे व स्थानेषु—

ह्रीं कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कन्दर्पाय नमः।

ब्लूं मकरध्वजाय नमः। स्त्रीं मीनकेतनाय नमः।

इति सबीजं कामपञ्चकं न्यसेत्।

अथ सुभगादि—न्यासः

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सूभगायै नमः (भाले)। ५ भगायै नमः (भ्रूमध्ये)। ५ भगसर्पिण्यै नमः (वदने)। ५ भगमालिन्यै नमः (लम्बिकायां)।

५ अनङ्गायै नमः (कण्ठे)। ५ अनङ्गकुसुमायै नमः (हृदि)। ५ अनङ्गमेखलायै नमः (नाभौ)। ५ अनङ्गमदनायै नमः (उपस्थ—मूले)। इति न्यसेत्।

अथ भूषणन्यासः

बाला मन्त्र पूर्वक

शिरसि	अं	नमः।	दक्षस्तने	चं	नमः।
भाले	आं	नमः।	वामस्तने	छं	नमः।
दक्षभ्रुवि	इं	नमः।	दक्षबाहुमूले	जं	नमः।
वामभ्रुवि	ईं	नमः।	वामबाहुमूले	झं	नमः।
दक्षकर्णे	उं	नमः।	दक्षकूर्परे	ञं	नमः।
वामकर्णे	ऊं	नमः।	वामकूर्परे	टं	नमः।
दक्षनेत्रे	ऋं	नमः।	दक्षकरे	ठं	नमः।
वामनेत्रे	ॠं	नमः।	वामकरे	डं	नमः।
नासिकायां	ऌं	नमः।	दक्षकरपृष्ठे	ढं	नमः।
दक्षगण्डे	ॡं	नमः।	वामकरपृष्ठे	णं	नमः।
वामगण्डे	एं	नमः।	नाभौ	तं	नमः।
ऊर्ध्वोष्ठे	ऐं	नमः।	गुह्ये	थं	नमः।
अधरोष्ठे	ओं	नमः।	दक्षोरौ	दं	नमः।
ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ	औं	नमः।	वामोरौ	धं	नमः।
अधोदन्तपङ्क्तौ	अं	नमः।	दक्षजानुनि	नं	नमः।
मुखे	अः	नमः।	वामजानुनि	पं	नमः।
चिबुके	कं	नमः।	दक्षजङ्घायां	फं	नमः।
गले	खं	नमः।	वामजङ्घायां	बं	नमः।
कण्ठे	गं.	नमः।	दक्षस्फिचि	भं	नमः।
दक्षपार्श्वे	घं	नमः।	वामस्फिचि	मं	नमः।
वामपार्श्वे	ङं	नमः।	पादतलयोः	यं	नमः।

चरणाङ्गुष्ठयोः	रं	नमः।	गुह्ये	सं	नमः।
काञ्ञ्यां	लं	नमः।	दक्षकर्णकुण्डले	हं	नमः।
ग्रीवायां	वं	नमः।	वामकर्णकुण्डले	ळं	नमः।
कटके	शं	नमः।	मौलौ	क्षं	नमः।
हृदि	षं	नमः।			

ततस्त्रिखण्डां बद्ध्वा ध्यायेत्

अरुण-किरणजालै रञ्जिता साऽवकाशा,
विधृत-जपवटीका पुस्तकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याणशीला॥
ततो मानसौपचारैःसम्पूजयेत्।

अथावरणार्चनम्

(श्रीक्रमानुसारेण बालामन्त्रपूर्वकं पात्रासादनमथवा वर्धनी-शङ्खपाद्यार्घ्याचमनीयपात्राणि संस्थाप्य–)

पद्मं वसुदलोपेतं नवयोन्याढ्य-कर्णिकम्।
चतुर्द्वार-समायुक्तं भूगृहं विलिखेत् ततः॥

(इत्युसारमष्टदल-नवयोनि-चतुर्द्वारयुक्तभूपुर-समन्वितं रत्न-स्फटिक-सुवर्ण-रजतादि-विनिर्मितं बालायन्त्रं प्रतिष्ठाप्य, योगपीठन्यासे प्रतिपादितम्— 'आधार-शक्त्यादि-ह्रीं ज्ञानात्मने नम' इत्यन्तं पुष्पाक्षतैः सम्पूज्य पूर्वादिकेसरेषु मध्ये च—)

ऐं इच्छायै नमः ऐं ज्ञानायै नमः ऐं क्रियायै नमः।
ऐं कामिन्यै नमः ऐं कामदायिन्यै नमः ऐं रत्यै नमः।
ऐं रतिप्रियायै नमः ऐं नन्दायै नमः ऐं नवम्यै नमः।
ऐं मनोन्मन्यै नमः ऐं परायै नमः ऐं अपरायै नमः।
ऐं परापरायै नमः ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः।

(इति सम्पूजयेत्। ततः योनिमध्ययोन्योरन्तराले श्रीक्रमोक्तगुरुमण्डलं तदशक्तौ—)

ऐं गुरुभ्यो नमः। ऐं गुरुपादुकाभ्यो नमः। ऐं परमगुरुभ्यो नमः।
ऐं परमगुरुपादुकाभ्यो नमः। ऐं परापरगुरुभ्यो नमः।
ऐं परापरगुरुपादुकाभ्यो नमः। ऐं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः।
ऐं परमेष्ठिगुरुपादुकाभ्यो नमः ऐं आचार्येभ्यो नमः।
ऐं आचार्यपादुकाभ्यो नमः

(इति सम्पूज्य—)

ऐं क्लीं सौः 'ऐं ह्रीं श्री ह्स्ख्फ्रें ह्सौः

(इति मन्त्रेण चक्रे मूर्ति सङ्कल्प्य त्रिखण्डमुद्रायां देवीं ध्यात्वा—)

देवेशि भक्तिसुलभे परिवार-समन्विते ।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव॥

इत्यादिनाऽऽवाहयेत्। तत आवाहनादि-षोडशोपचारैर्यथासम्भवोपचारैर्वा पूजयित्वाऽऽवरणपूजामारभेत। तथा—

ऐं क्लीं सौः श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः[१] (इति मध्ये त्रिवारं पुष्पाक्षतैः सम्पूज्य—)

देव्यङ्गे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च षडङ्गार्चनं विदध्यात् (यथा—)

ऐं क्लीं सौः ऐं हृदयाय नमः। हृदयशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ क्लीं शिरसे स्वाहा। शिरःशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ सौः शिखायै वषट्। शिखाशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ ऐं कवचाय हुं । कवचशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ सौः अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

मध्ये त्रिकोणं विभाव्य—

वामकोणे— ३ ऐं रत्यै नमः रति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

दक्षिणकोणे— ३ क्लीं प्रीत्यै नमः प्रीति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

अग्रे— ३ सौः मनोभावाय नमः मनोभव श्रीपादुकां,, नमः।

ततः केसरेष्वग्नीशासुरवायव्यमध्ये दिक्षु च—

३ इच्छायै नमः। इच्छा श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ ज्ञानायै नमः। ज्ञाना श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ क्रियायै नमः। क्रिया श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ कामिन्यै नमः। कामिनी श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ कामदायिन्यै ,,। कामदायिनी श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ रत्यै नमः। रति श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ रतिप्रियायै ,,। रतिप्रियाश्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ नन्दायै नमः। नन्दा श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ नवम्यै नमः। नवमी श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

३ मनोन्मन्यै नमः। मनोन्मनी श्रीपादुकांपूजयामि नमः।

---

१. पात्रासादने विशोषार्ध्य-सम्पादकैस्तर्पयामीति पदेन तर्पणमपि कार्यम्।

ततः पञ्चबाणान् पञ्चकामांश्च त्रिकोणबाह्येऽन्तराले उत्तर-दक्षिण-पार्श्वद्वये द्वयं द्वयम् अग्रे चैकमिति क्रमेण पूजयेत्। यथा—

उत्तरे— ३ द्रां द्राविण्यै नमः। द्राविणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ द्रीं क्षोभिण्यै नमः। क्षोभिणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
दक्षिणे—३ क्लीं वशीकरिण्यै,,। वशीकरिणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ब्लूं आकर्षिण्यै ,,। आकर्षिणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
अग्रे ३ सः सम्मोहिन्यै ,,। सम्मोहिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
उत्तरे— ३ ह्रीं: कामाय नमः। काम श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं मन्मथाय नमः। मन्मथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
दक्षिणे—३ ऐं कन्दर्पाय नमः। कन्दर्प श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ब्लूं मकरध्वजाय,,। मकरध्वज श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
अग्रे— ३ स्त्रीं मीनकेतनाय,,। मीनकेतन श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ततोऽष्टयोनिषु पूर्वादि—प्रादक्षिण्येन—

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सुभगायै नमः। सुभगा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ भगायै नमः। भगा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ भगसर्पिण्यै नमः। भगसर्पिणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ भगमालिन्यै नमः। भगमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ अनङ्गायै नमः। अनङ्गा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ अनङ्गकुसुमायै,,। अनङ्गकुसुमा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ अनङ्गमेखलायै,,। अनङ्गमेखला श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
५ अनङ्गमदनायै ,,। अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ततोष्टपत्रेषु पूर्वादि—

३ असिताङ्ग-ब्राह्मीभ्यां नमः। असिताङ्ग-ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ रुरु-माहेश्वरीभ्यां नमः। रुरु-माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ चण्ड-कौमारीभ्यां नमः। चण्ड कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ क्रोध-वैष्णवीभ्यां नमः। क्रोध-वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ उन्मत्त-वाराहीभ्यां नमः। उन्मत्त-वाराही श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः। कपालीन्द्राणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ भीषणचामुण्डाभ्यां नमः। भीषण-चामुण्डा श्रीपादुकां पू. नमः।

३ संहार-महालक्ष्मीभ्यां नमः। संहार-महालक्ष्मी श्रीपादुकां पू. नमः।

ततस्तद्बहि चतुरस्रस्य रेखायां प्रागाद्यासु अष्टसु दिक्षु क्रमेण—

ऐं क्लीं सौः लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नमः। इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नमः। अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः। यमश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधितपये नरवाहनाय सपरिवाराय नमः। निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सपरिवाराय नमः। वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नमः। वायुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः। सोमश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नमः। ईशानश्रीपादुका पूजयामि नमः।

इत्यावरणार्चनं विधाय श्रीक्रमोक्तविधानेन धूप-दीप-नैवेद्य नीराजपनुष्पाञ्जलिप्रभृतिकर्माणि निर्वर्तयेत्। ततः सर्वविघ्नकृद्भूतबलिं विदध्यात्।

अत्र केचन बलिचतुष्टयमपि प्रतिपादयन्ति, तद् यथोपदेशं कुर्यात्। ततो मूलमन्त्रस्य जपं विधाय स्तोत्रादि-पारायणं कुर्यात्।

अस्य बाला-मन्त्रस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। होमस्तु पलाशपुष्पैर्द्वादशसहस्रकम्। एवमेव त्रिपुरभैरवीपूजनमपि।

'यथाऽसौ त्रिपुरा बाला तथा त्रिपुरभैरवी' ति[१]।

समाप्तेयं बालात्रिपुरसुन्दरी वरिवस्या।

---

१. एतत् सर्वं गुरुमुखादवगम्यैवानुष्ठानं श्रयेस्करं भवति।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम्
श्रीमज्जगद्गुरुश्रीशङ्कराचार्यविरचितम्

ॐ उषसि मागधमङ्गलगायनैर्झटिति जागृहि जागृहि जागृहि।
अतिकृपार्द्रकटाक्षनिरीक्षणैर्जगदिदं जगदम्ब सुखीकुरु ॥ १ ॥
कनकमयवितर्दिशोभमानं दिशि–दिशि पूर्णसुवर्णकुम्भयुक्तम्।
मणिमयमण्डपमध्यमेहि मातर्मयि कृपया हि समर्चनं गृहीतुम्॥ २ ॥
कनककलशशोभमानशीर्षं जलधरचुम्बिसमुल्लसत्पताकम्।
भगवति तव सन्निवासहेतोर्मणिमयमन्दिरमेतदर्पयामि ॥ ३ ॥
तपनीयमयी सतूलिका कमनीया मृदुलोत्तरच्छदा।
नवरत्नविभूषिता मया शिविकेयं जगदम्ब तेऽर्पिता॥ ४ ॥
कनकमयवितर्दिस्थापिते तूलिकाढ्ये–
विविधकुसुमकीर्णे कोटिबालार्कवर्णे।
भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽस्मि–
न्नुपविश पदयुग्मं हेमपीठे निधेहि॥ ५ ॥
मणिमयमौक्तिकनिर्मितं महान्तं कनकस्तम्भचतुष्टयेन युक्तम्।
कमनीयतमं भवानि तुभ्यं नवमुल्लोचमहं समर्पयामि॥ ६ ॥
दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम्।
पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मातः! ॥ ७ ॥
गन्धपुष्पयवसर्षपदूर्वासम्मितं तिलकुशाक्षतमिश्रम्।
हेमपात्रनिहितं सह रत्नैरर्घ्यमेतदुररीकुरु मातः!॥ ८ ॥
जलजद्युतिनाकरेण जातीफलकङ्कोललवङ्गगन्धयुक्तैः।
अमृतैरमृतैरिवाहृतैर्भगवत्याचमनं विधीयताम् ॥ ९ ॥
निहितः कनकस्य सम्पुटे पिहितो रत्नपिधानकेन सः।
तदयं भवतीकरेऽर्पितो मधुपर्को भवति प्रगृह्यताम्॥ १० ॥
एतच्चम्पकतैलमेव विविधैर्पुष्पैर्मुहुर्वासितम्

न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृङ्गैर्भ्रमद्भिर्वृतम्।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरभितो हस्तैधृतं यन्मया
केशेषु भ्रमरप्रभेषु सकलेष्वङ्गेषु चालिप्यताम् ।। ११ ।।
मात:कुङ्कुमपङ्कनिर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनम्
भक्त्याऽहङ्कलयामि हेमरजसा सम्मिश्रितं केशरम्।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकाद्यन्वितम्
स्नानं ते नवरत्नकुम्भसहितैः संवासितोष्णोदकै:।। १२ ।।
दधिदुग्धघृतै:समाक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः।
स्नपयामि तवाहमादृतो जननि! त्वां पुनरुष्णवारिभि:।। १३ ।।
एलोशीरसुवासितैः सुकुसमैर्गङ्गादितीर्थोदकै–
र्माणिक्यामलमौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकै:।
मन्त्रान् वैदिकतान्त्रिकान् परिपठन् सानन्दमत्यादरात्
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमङ्गीकुरु।। १४ ।।
बालार्कद्युतिदाडिमीयकुसुमप्रस्पर्धिसर्वोत्तमं
मातस्त्वं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्या मया कल्पितम्।
मुक्ताभिर्ग्रथितं सकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभम्
तप्तस्वर्णसमानवर्णबहुलं प्रावर्णमङ्गीकुरु ।। १५ ।।
नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीयपादुके–
सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि! तयोर्निधीयताम्।। १६ ।।
बहुभिरगुरुधूपैः सादरं धूपयित्वा।
भगवति! तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा।
सुरभिरविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा
झटिति कनसूत्रैर्जुष्टमावेष्टयामि।। १७ ।।
सौवीराञ्जनमिदमम्ब! चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत्।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गात् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय।। १८ ।।

मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरे विन्यस्य काञ्चीं कटौ
मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले ।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीः करेषु क्रमात्
ताटङ्के तव कर्णयोर्विनिदधे शीर्षे च चूड़ामणिम्।। १९।।
धम्मिल्ले तव देवि हेमकुसुमान्याधाय भालस्थले
मुक्ताराजिविराजिहेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम्।
मातर्मौक्तिकजालिकाञ्च कुचयोः सर्वाङ्गुलीषूर्मिकाः
कट्यां काञ्चनकिङ्किणीर्विनिदधे रत्नावतसं श्रुतौ।। २०।।
मातर्भालतले तवातिविमले काश्मीरकस्तूरिका
कर्पूरागुरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दमरसैः सिक्तकाञ्चपुष्पद्रवैः
पादौकुङ्कुमलेपनादिभिरहं सम्पूजयामि क्रमात्।। २१।।
रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि मुक्ताफलैश्चारुचैर्विचित्रैः।
अखण्डितैर्देवि! यवादिभिर्वा काश्मीरपङ्काङ्किततण्डुलैर्वा।।२२।।
जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमम् सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम्।। २३।।
सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत्
सिन्दूरं मे हृदयकमले देवि हर्षं तनोतु।
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्ति-
रत्नर्ध्वान्तं हरतु सकलं चेतसा चिन्तयामि।। २४।।
मन्दारकुन्दकरवीलवङ्गपुष्पै—
रन्तध्वां देवि सन्ततमहं परिपूजयामि।
जातीजपावकुलचम्पककेतकादि—
नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि।। २५।।
मालतीबकुलहेमपुष्पिकाकाञ्चनारकरवीरचम्पकैः ।
कर्णिकारगिरिकर्णिकादिभिः पूजयामि जगदम्ब ते वपुः।। २६।।

पारिजातशतपत्रपाटलैर्मल्लिकाबकुलचम्पकादिभिः।
अम्बुजैश्च कुसुमैश्च सादरं पूजयामि जगदम्ब! ते वपुः।। २७।।
लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवाससम्मिश्रितैः
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषालोडितैः।
श्रीखण्डागुरुगुग्गुलुप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः
धूपं ते परिकल्पयामि जननि! त्वं धूपमङ्गीकुरु।। २८।।
रत्नालङ्कृतहेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः।
आताम्रज्ज्वलदुज्ज्वलज्ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः।। २९।।
महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्–
डमरुसदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान्।।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै–
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारात्रिकन्ते।। ३०।।
सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां–
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारात्रिकस्य।
मुखकमलसमीपे तेऽम्ब सार्धत्रिवारं–
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः।। ३१।।
मातस्त्वां दधिदुग्धपायसमहाशाल्यन्नसन्तानकान्–
सूपापूपसिताघृतैः सवटकैः सक्षौद्ररम्भाफलैः।
एलाजीरकहिङ्गुनागरनिशाकौस्तुम्बरीसंयुतैः–
शाकैः साकमलं सुधाधिकरसैः सन्तर्पयाम्यर्पयन्।। ३२।।
सापूपसूपदधिदुग्धसिताघृतानि
सुस्वादुभक्ष्यपरमान्नपुरःसराणि।
शाकोल्लसन्मरिचजीरकवल्लिकानि
भक्ष्याणि भुङ्क्ष्व जगदम्ब मयार्पितानि।। ३३।।

क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु
मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः।। ३४।।
उष्णोदकैः पाणियुगं मुखञ्च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन।। ३५।।
अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम्।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतम्ब पीयताम्।। ३६।।
आताम्ररम्भाफलसंयुतानि द्राक्षाफलाक्षोटसमन्वितानि।
सबीजपूराणि सदाडिमानि फलानि ते देवि! समर्पयामि।। ३७।।
कलिङ्ग-कोषातक-संयुतानि जम्वीर-नारङ्ग-समन्वितानि।
सनारिकेलानि सदाड़िमानि फलानि ते देवि समर्पयामि।। ३८।।
कर्पूरेण युतैर्लवङ्गसहितैः कङ्कोलचूर्णान्वितैः
सुस्वादुक्रमुकैः सगौरखदिरैः सुस्निग्धजातीफलैः।
मातः! केतकिपत्रपाण्डुरुचिरैस्ताम्बूलवल्लीदलैः
सानन्दं मुखमण्डनार्थमतुल ताम्बूलमङ्गीकुरु।। ३९।।
एलालवङ्गादिसमन्वितानि कङ्कोलकर्पूरविमिश्रितानि।
ताम्बूलवल्लीदलसंयुतानि फलानि ते देवि समर्पितानि।। ४०।।
ताम्बूलवल्लिदलनिर्जितहेमवर्ण
स्वर्णाक्त पूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम्।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं
ताम्बूलमम्बवदनाम्बुरुहे! गृहाण।। ४१।।
अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य–
त्रिभुवनकमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां–
जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि।। ४२।।
मातः काञ्चनदण्डमण्डितमिदं पूर्णेन्दुविम्बप्रभं–
नानारत्नविशोभिहेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम्।।
भास्वन्मौक्तिकजालिकापरिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतं
छत्रन्ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम्।। ४३।।

शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णैर्मणियुक्तैर्विलसत्सुवर्णदण्डैः।
जगदम्ब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण बीजयामि।।४४।।
मार्त्तण्डमण्डलनिभो जगदम्ब! योऽयं–
भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते।
पूर्णेन्दुबिम्बरुचिरं वदनं स्वकीय–
मस्मिन् विलोकय विलोलविलोचने त्वम्।।४५।।
इन्द्रादयो नतिनतैर्मुकुटप्रदीपै–
र्नीराजयन्ति सततं तव पादपीठम्।
तस्मादहं तव शरीरमशेषमेतन्–
नीराजयामि जगदम्ब सहस्रदीपैः ।। ४६।।
प्रियगतिरतितुङ्गो रत्नपल्लाणयुक्तः–
कनकमयविभूषःस्निग्धगम्भीरधोषः।
भगवति कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते–
तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरङ्गः ।। ४७।।
मधुकरवृतकुम्भो न्यस्तसिन्दूरेणुः–
कनककलितघण्टः किङ्किणीशोभिकण्ठः।
श्रवणयुगलचञ्चच्चामरो मेघतुल्यो–
जननि तव मुदे स्यान्मत्तमातङ्ग एषः।। ४८।।
द्रुततरतुरगैर्विराजमानं, मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् ।
कनकमयमहं वितानवन्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि।। ४९।।
हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुन्दुभिमेघनादयुक्तम्।
अभिनवचतुरङ्गसैन्यमेतत् भगवति भक्तिभरेण तेऽपर्यामि।। ५०।।
परिधीकृतसप्तसागरं बहुसम्पत्सहितं मयाम्ब ते।
विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं दुर्गमिदं समर्पितम्।। ५१।।
शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैः परागपीतैः।
भ्रमरीमुखरीकृतैरनेकैर्व्यजनैस्त्वां जगदम्ब बीजयामि।। ५२।।
भ्रमविलुलितलोलकुन्तलालिर्विगलितमाल्यविकीर्णरङ्गभूमिः।

इयमतिचतुरा नटी नटन्ती तव हृदये मुदमातनोतु मातः!।। ५३।।
मुखचलनविलासलोलवेणीविलसितनिर्जितलोलभृङ्गमालाः।
युवजनसुखकारिचारुलीला भगवति! ते पुरतो नटन्ति बालाः।। ५४।।
रुचिरकुचतटीनां नाट्यकाले नटीनां-
प्रतिगृहमथ तत्र प्रत्यहं प्रादुरासीत्।
धिमिक धिमिक धिद्धी धिद्धि धिद्धेति धिद्ध-
धिकिति धिकिति तत्थै त्थै यथेथेति शब्दः।। ५५।।
भ्रमदलिकुलतुल्यालोलधम्मिल्लभारस्मितमुखकमलोद्यद्दिव्यलावण्यपूरा।
अभिनवनववेषा वारयोषा नटन्ती परभृतकलकण्ठी देवि मोदन्तनोतु।।५६।।
डमरुडिण्डिमझर्झरझल्लरी मृदुरवार्द्रघटार्द्रघटादयः।
झटितिझङ्कृतिभिर्जगदम्बिके बहुदयं हृदयं सुखयन्तु ते।। ५७।।
विपञ्चीषु सप्तस्वरान् वादयन्त्य-
स्तव द्वारि गायन्ति गन्धर्वकन्याः।
क्षणं सावधानेन चित्तेन मातः-
समाकर्णय त्वं मया प्रार्थिताऽसि।। ५८।।
अतिशयकमनीयैनर्त्तनैर्नर्त्तकीनां-
झटिति च रमयित्त्वा चेत एवं त्वदीयम्।
स्वयमहमपि चित्रैर्नृत्त्यवादित्रगीतै-
र्भगवति भवदीयं मानसं रञ्जयामि।। ५९।।
तव देवि गुणानुवर्णने चतुरा नो चतुराननादयः।
तदिहैकमुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्त्तुमीश्वरः।। ६०।।
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलन्ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।। ६१।।
रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानीपदपङ्कजाभ्याम्।। ६२।।
चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा-

कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्त्वा।।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते-
हृदयकमलमध्ये देवि हर्षं तनोतु।। ६३।।
अथ मणिमयमञ्चकाभिरामे द्युतिमति पुष्पवितानराजमाने।
प्रसरदगुरुधूपितेऽस्मिन् भगवति वासगृहेऽस्तु ते निवासः।। ६४।।
एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे त्रैलोक्याभयवरदौ निधाय पादौ।
विस्तीर्णे मृदुलतरच्छदेऽस्निम् पर्यङ्के कनकमये निषीद मातः।। ६५।।
तव देवि सरोजचिह्नयोः पदयोर्निर्जितपद्मरागयोः।
अतिरक्ततरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्तताम्।। ६६।।
अथ मातरुशीरवासितं निजताम्बूलरसेन राजितम्।
तपनीयमये हि पात्रके मुखगण्डूषजलं विधीयताम्।। ६७।।
क्षणमथ जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् मृदुतरतूलिकया विराजमाने।
अतिमहति मुदा निजेच्छया त्वं सुखशयनं कुरु मां हृदि स्मरन्ती।।६८।।
मुक्ताकुन्देन्दुगौरां मणिमयमुकुटां रत्नताटङ्कयुक्ता-
मक्षस्त्रक्पुस्तहस्तामभयवरकरां चन्द्रचूडां त्रिनेत्राम्।।
नानालङ्कारयुक्तां सुरमुकुटलसद्द्योतितस्वर्णपीठां,
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवनजननीं चेतसा चिन्तयामि।।६९।।
एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा-
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलां मेऽपराधान् क्षमस्व।
न्यूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः
सानन्दम्मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः।।
पूजामिमां पठेत् प्राज्ञः पूजाकर्तुमनीश्वरः।
पूजाफलमवाप्नोति वाञ्छितार्थांश्च विन्दति।
प्रत्यहं भक्तियुक्तो यो देविपूजामिमां पठेत् ।
वाग्वादिन्याः प्रसादेन वत्सरात्स कविर्भवेत्।।
भगवत पाद श्रीशङ्कराचार्य-विरचितं

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम् सम्पूर्णम्।

आतुर-सूतकाद्यवस्थायां किं कर्तव्यता–

आतुरी सौतिकी चैव त्रासी दौर्बोधिकी तथा।
साधना भाविनी चेति पञ्चधा भिद्यते पुनः ।। १।।
यदि लङ्घनपर्यन्तो व्याधिरात्मनि दृश्यते।
तदा पूजा न कर्तव्या स्थण्डिले प्रतिमासु च।। २।।
न स्नानं दन्तकाष्ठं वा कुर्याद्धोममथापि वा।
रविमण्डलमालोक्य प्रतिमामथ वा पुनः।। ३।।
मूलमन्त्रं सकृज्जप्त्वा पुष्पं साक्षतमुत्क्षिपेत्।
अन्ते व्याधिभिरत्युग्रैः क्लान्तैश्चैवोपवासकैः।। ४।।
न दोषोऽस्त्विति सम्प्रार्थ्य पुनः पूर्ववदाचरेत्।
(इति सम्प्रार्थ्य जपहोमादिकं कुर्यात्।।)
यस्तु रोगवशान्मोहवशाद् दोष उपागतः।
जपेन क्षालनीयः स्याद् दानेन हवनेन च।। ५।।
ध्यानेनापि मुनिश्रेष्ठ! ज्ञात्वा कर्म बलाबलम्।

(इति नारद पञ्चरात्रवचनात्।) तथा :–

अथ सूतकिनः पूजां वदाम्यागमबोधिताम्।
स्नात्वा नित्यं च निर्वत्यं मानस्या क्रियया तु वै।। १।।
बाह्यपूजाक्रमेणैव स्थानयोगेन पूजयेत्।
यदि कामी न चेत्कामी नित्यं पूर्ववदाचरेत्।। २।।
त्रासिनी वक्ष्यते पूजा यथैवागमबोधिता।
लब्धं वा यदि वा लब्धमर्घपात्रादिसाधनम्।। ३।।
पूजोदेकेन कर्तव्या तच्चेतोयं न विद्यते।
तदा सम्पूजयेद्देवं भावना कुसुमादिभिः।। ४।।

दौर्बोधिकीं प्रवक्ष्यामि पूजामागमबोधिताम्।
मूर्खस्त्रीबालवृद्धाश्च दुर्बोधा इति भाविता:।। ५।।
रत्नमण्डपधर्मादिचतुष्कमुरगाम्बुजम् ।
मूलमूर्ति: षडङ्गानि तेषां पूजा विधीयते।। ६।।
अन्येषामपि सर्वेषां प्रोक्ता सङ्क्षेपकर्मणि।
सर्वेषामेव वस्तूनां अलाभे भावनैव हि।। ७।।
निर्मलेनोदकेनाऽथ पूर्णतेत्याह नारद:।

पूजायास्त्रेधा लक्षणम् –

तथा पूनस्त्रिधा पूजा उत्तमाधममध्यमा।। ८।।
पत्रपुष्पाम्बुनिष्पाद्या पूजा चाधमसंज्ञिका।
विदिताखिलवेदार्थैर्ब्रह्मविद्भिरकल्मशषै:।। ९।।
क्रियमाणा तु या पूजा सात्त्विको सा विमुक्तिदा।
राजर्षिभिस्तपोनिष्ठैर्भगवत्तत्त्ववेदिभि: ।। १०।।
या पूजा क्रियते सम्यग् राजसी सा सुखप्रदा।
स्त्रीबालवृद्धमूर्खाद्यैर्भक्तैरक्षुद्रमानसै: ।। ११।।
या पूजा क्रियते नित्यं तासमी सा प्रकीर्तिता। इति।

आराधने समर्थासमर्थविधि:

उत्तरतन्त्रे:–

आराधनासमर्थश्चेद् दद्यादर्चनसाधनम् ।
यो दातुं नैव शक्नोति कुर्यादर्चनदर्शनम्।। १।।
नैकं तु यस्य विद्येत सोऽधो यात्येव नान्यथा।
यस्तु भक्त्या प्रयत्नेन स्वयं सम्पाद्य चाखिलम्।। २।।
साधनं चार्चयेद् विद्वान् स समग्रफलं लभेत्।। इति।।

कुम्भसम्भव:—

स्वस्थः समर्थः कुर्वीत चोत्तमैरेव साधनैः।
मध्यमो मध्यमेनैव न्यूनैर्न्यूनस्तपाधनै।।
आपन्नश्चेत्समर्थोऽपि न्यूनैरेव समाचरेत्।
पूजाकर्मविशेषण देशकालानुसारतः।। इति।।

तथा मेरुतन्त्रे :—

अथ सूतकिनो नित्यं वैदिकंन्तु स्मृतीरितम्।
कृत्वा तान्त्रिकपूजादि मनसैव समाचरेत्।।

समर्थस्य विस्ताराकरणे दोषः

भविष्यपुराणे :—

विभवे सति यो मोहान्न कुर्याद्विधिविस्तरम्।
न तत्फलमवाप्नोति प्रलोभाक्रान्तमानसः।।

कामनामेदेन पूजास्थानम्

शिवयामले :—

शिवपितृवनमेकलिङ्गवृक्षोद्भवजलसङ्गचत्वरे सुदेशे ।
अपि शिवगदितं विमुच्य शस्तं निजगृह एव तु पूजनं मुमुक्षोः।।
अरण्ये स्वल्पकामानां सिद्ध्यर्थे पूजनं हितम्।
निष्कामानां मुमुक्षूणां गृहे शस्तं सदार्चनम्।।

देशकालविशेषे मानसपूजाविधानम्

प्रवासे॰ पथि दुर्गे वा स्थानाप्राप्तौ जलेऽपि।
कारागारनिबद्धो वा प्रायोवेशगतोऽपि वा।। १।।
मनोभये समुत्पन्ने सिंहव्याघ्रसमाकुले।
परचक्रागमे चैव कुर्यान्मानसपूजनम् ।। २।।

मनसा हृदयस्यान्तर्ध्यात्वा योगाख्यपीठकम्।
तत्रैव पृथिवीमध्ये पूजां तत्र समाचरेत्।। ३।।
मैत्रप्रसादनं स्नानं दन्तधावनकर्म वै।
अन्यच्च सर्व मनसा ध्यात्वा कुर्याच्च पूजनम्।। ४।।
यथा पुष्पादिभिः पूजा बहिर्देशे विधीयते।
तथा हृद्यपि कर्त्तव्याः सर्वाच्च प्रतिपत्तयः।। ५।।
(प्रायोवेशगतो—गृहीतानशनव्रतः)।

अन्यच्च सर्वमिति मैत्रप्रसादनं दन्तधावनव्यतिरिक्तमित्यर्थः। मैत्रदीनां मानसासम्भवात्। 'यः शोचनिरतो विप्रः स वै मैत्र उदाहृतः।'

दिने प्रतियामं कर्तव्यताविभागः

ब्राह्मान्मुहूर्तादारम्य प्रागंशं विप्र वासरात्।
जपध्यानार्चनास्तोत्रैः कायवाङ्मनसा युतैः।। १।।
अभिगच्छेज्जगद्योनिं तच्चाभिगमनं स्मृतम्।
ततः पुष्पफलादीनामुत्थायार्चनमाचरेत् ।। २।।
भगवद्यागनिष्पत्तिकरणं प्रहरं परम्।
ततोऽप्यङ्गेन यागेन पूजयेत् परमेश्वरम्।। ३।।
साधकः प्रहरं विप्र इज्याकालो हि स स्मृतः।
श्रवणं चिन्तनं व्याख्या ततः पाठसमन्विता।। ४।।
स्वाध्यायकालं तद्विद्धि कालं तं मुनिसत्तम।
दिनावसाने सम्प्राप्ते पूजां कृत्वा समभ्यसेत्।। ५।।
योगी निशावसानेऽथ विश्रामैरन्तरैः कृतम्।

मन्त्रस्नानम्

जलस्नानाशक्तानां मन्त्रस्नानविधिमाह—नारदपञ्चरात्रे—

अथ मान्त्रं शुभं श्रृणु ।
तोयाभावे तु यत्कार्यं दुर्गे काले तु शीतले।।
गमने क्षिप्रसिद्ध्यर्थंगुरुकार्येष्वतन्द्रितः ।
प्राप्तापद्यथ विपेन्द्र निशाभागे तथा मुने।।
प्रक्षाल्य पादावचम्य प्रोद्धृतेन तु वारिणा ।
स्थानं दश दिशः प्राग्वत् संशोध्योपविशेत्ततः।।
अस्त्रं हस्ततले न्यस्य क्रमान्न्यासांस्ततस्तु वै।
केवलादुदकस्नानात् संस्कारपरिवर्जितात्।
प्रभासादिषु तीर्थेषु यत्फलं स्नातकस्य तु।।
ज्ञेयं दशगुणं स्नानान्मन्त्रस्नानस्य नादर।

(ध्यानस्नानम्)

ध्यानस्नानमथो वक्ष्ये द्वाभ्यामपि परं च यत्।।
खस्थितं पुण्डरीकाक्षं मन्त्रमूर्तिप्रभुं स्मरेत्।
तत्पादोदकजां धारां निपतन्तीं स्वमूर्धनि।।
चिन्तयेत् सूक्ष्मरन्ध्रेण प्रविशन्ती स्वकां तनुम्।
तया संक्षालयेत् सर्वमन्तर्देहगतं मलम् ।।
तत्क्षणाद्विरजा मन्त्री जायते स्फटिकोपमः।
इदं स्नांन वरं मन्त्रात् स्नानं शतगुणं स्मृतम्।।
तस्मादेकतमं स्नानं कार्य श्रद्धापरेण तु।
स्नानपूर्वाः क्रिया सर्वा यत सभ्यास्तु नारद।।
(पुण्डरीकाक्षमित्युपलक्षणम्) स्वेट देवस्य ध्यानम् कुर्यात्

। दिक्षां विनानर्हत्वम्।

विनोपनयनं यद्वत् द्विजानां सर्वकार्मसु।
न योग्यता तथात्रास्ति विना दीक्षां भृगुद्वह।।

अप्राप्य सद्गुरोर्दीक्षामज्ञात्वा गुरुपद्धतिम्।
स्वबुद्ध्या तु कृतं कर्म विधना च समन्वितम्।।
तथापि साधकं शीघ्रं नाशयत्येव सर्वदा।
सेवितारं यथा हन्ति चापक्वन्तु रसायनम्।।

इति त्रिपुरारहस्ये—

विना दीक्षां न मुक्तिः स्यादित्याज्ञा पारमेश्वरी।
मुक्ति-सौधस्य सोपानं प्रथमं दीक्षणं भवेत्।।
दीयते शिवसायुज्यं क्षीयते पाशबन्धनम् ।
अतो दीक्षेति कथिता लभ्यते पुण्यसंचयैः।।

इति परमानन्द तन्त्रे—

। प्राणायाम—मातृकादिन्यासहीना मन्त्राः।

प्राणायामैर्विना यद्यत्कृतं कर्म निरर्थकम् ।
अतो यत्नेन कर्तव्याः प्राणायामः शुभार्थिभिः।। १।।

इति दक्षिणामूर्तिकल्पे

जपार्थं सर्वमन्त्राणां विन्यासेन लिपेर्विना ।
कृते तन्निष्फलं विद्यात्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत्।। २।।

इति कपिलपञ्चरात्रे—

ऋषिच्छन्दोदेवतानां विन्यासेन विना यदा।
जप्यते साधितोऽत्येष तत्र तुच्छफलं भवेत्।। ३।।

इति गौतमीये—

ध्यानं जपार्थना-होमः सिद्धमन्त्रकृता कृता अपि।
अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलं त्वमी।। ४।।
विधिदृष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना नरः।
फलं न किञ्चिदाप्नोति क्लेशमात्रं हि तस्य तत्।। ५।।

इति उत्तरातन्त्रे—

न्याससहितामन्त्राः

वैशम्पायनसंहितायाम्— न्यास विधानं

आदावृष्यादि विन्यस्य कराङ्गन्यासनं ततः।
ततो मन्त्राक्षरन्यासः पदन्यासस्ततः परम्॥ ४॥
जपतर्पण—होमार्चाः सिद्धमन्त्रकृता अपि।
अङ्गन्यासादिभिर्हीना न दास्यन्ति फलान्यमी॥
न्यासानशेषान् न्यसतः स्वदेहे त्रैलोक्यमेतद्वशमेति पुंसः।
पापानि सद्यः प्रशमं प्रयान्ति त्रस्यन्ति रक्षांसि सपन्नागानि॥

श्रीविद्यार्णवे—६, श्वासे

आगमोक्तेन मार्गेण न्यासान् नित्यं करोति यः।
देवताभावमाप्नोति मन्त्रसिद्धिः प्रजायते॥
यो न्यासकवच्छन्नो मन्त्रं जपति तं प्रिये।
दृष्ट्वा विघ्नाः पलायन्ते सिहं दृष्ट्वा यथा गजः॥
नाध्यातो नार्चितो मन्त्रः सुसिद्धोऽपि प्रसिद्ध्यति।
नाजप्तः सिद्धिदानेच्छुर्नाहुतः फलदो भवेत्॥
पूजा ध्यानं जपं होमं तस्मान् कर्मचतुष्टयम्।
प्रत्यहं साधकः कुर्यात् स्वयञ्चेत् सिद्धिमिच्छति।
जपः श्रान्तः शिवं ध्यायेद् ध्यानश्रान्तः पुनर्जपेत्।
जपध्यानसमायुक्तः शीघ्रं सिद्ध्यति मन्त्रवित्॥
अकृत्वा न्यासजालं यो मूढात्मा कुरुते जपम्।
विघ्नैः स बाध्यते नूनं व्याघ्रैर्मृगशिशुर्यथा।
न्यासानां प्रचुरत्वे हि फलानामपि भूरिता।
उक्तन्यासो नहि त्याज्यो ह्यधिकन्तु समाचरेत्॥

इति न्यास विधानम्

। त्रैपुर—सिद्धान्तः ।

भूतानि, तन्मात्राणि, ज्ञानकर्मन्द्रियाणि, अहङ्कारबुद्धिमनांसि, गुणसाम्य-रूपा प्रकृतिः, शरीरकञ्चुकितश्शिवो जीवः, (परमशिवगताः- स्वतन्त्रता-नित्यता-नित्यतृप्ततासर्वकर्तृकता-सर्वज्ञता धर्मा एवं संकुचितास्सन्तो जीवे) नियति-काल-राग-कलाविद्या-शब्दवाच्या भवन्तिं। माया (जगत्परमशिव-योर्भेदबुद्धिः) शुद्धविद्या (तयोरभेदबुद्धिः) जगदिदन्तया पश्यन् परमशिव ईश्वरः, तदहन्तया पश्यन् सदाशिवः, शक्ति परमशिवस्य जगत्सिसृक्षा, तद्वान् शिवः, षट्त्रिंशत्तत्त्वानि, स्वविमर्शः पुरुषार्थः, वर्णसमुदायरूपाः मन्त्रा नित्याः, (मूलविद्यासमसत्ताका व्यावहारिकनित्याः) मन्त्राणामचिन्त्य-शक्तित्वेन स्वगुरुपरम्परोपदेशैरगम्यधर्मरूपेण सम्प्रदायेन गुरुशास्त्रदेवतासु विश्वासने सर्वास्सिद्धयः, आचार्योक्तरीत्या गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभावयन् मनःपवनयोरेकयत्ननिरोद्धव्यत्वज्ञानाच्च प्रत्यगात्मवेदनम्, भावनादार्ढ्यान्निग्रहानुग्रसिद्धिः। दर्शनान्तरानिन्दनेन स्वोपास्यनिष्ठया मन्त्रार्थानुसन्धानेन कामक्रोधनिन्दापरिवर्जनेन च सिद्धयो भवन्ति।

वृत्तिभिर्वेद्यं सर्वं हविः, इन्द्रियाणि स्रुचः, सङ्कोचेन स्वात्मस्थिता-स्सर्वज्ञत्वसर्वकर्तृत्वादयः परमशिवशक्तय एवं ज्वालाः, स्वात्मशिव एवं पावकः, स्वयमेव होता, निर्गुणब्रह्मापरोक्ष्यं फलम् स्वपारमार्थिकस्वरूपलाभान्न परमिति सारः। इति श्रीविद्यारत्नाकरे।

साधक धर्माः

'श्लेष्मातक-करज्ज अक्ष-निम्ब-अश्वत्थ-कदम्ब-विल्व-विटोदुम्बर-तिन्तिणिकुलवृक्षच्छेदवर्जनम्, स्त्रीवृन्दक्षीरकलशसिद्धलिङ्गीविविधक्रीडा-कुलकुमारीकुल-सहकाराशोकतरु-पितृवनमत्तवाराङ्गना-रक्तांशुकामत्तेभान् दृष्ट्वा वन्देत्। **कृष्णाष्टमी कृष्णचतुर्दशी दर्श-पूर्णमास-संक्रमणपर्वसु नैमित्तिकी वरिवस्या कर्तव्या।** गुरुपरमगुर्वादीन् आदरेण पश्येत्, शरीरस्यर्थस्यासूनाञ्च गुर्वर्थं धारणम्, तद्वचसि युक्तायुक्ताविचारम्, सर्वत्र शास्त्रव्यवस्थापालनम्, परनिन्दात्मस्तुत्योश्च वर्जनम्, सर्वप्रयत्नेन परदेवताराधनद्वारा ब्रह्मभावाभिलाषः, इत्थं विदित्वाऽनुतिष्ठन् कृतकृत्यो जीवन्मुक्तो भवेत्।

वर्ज्यकर्माणि

श्रीविद्योपासको नेक्षुखण्डं भक्षयेत्। न दिवा स्मरेद्वार्तालीम्। न जुगुप्सेत सिद्धद्रव्याणि। न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम्। न बहु प्रलपेत्। योषितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत्। एते क्रत्वर्थनियमाः अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः **साधकेनावश्यमनुष्ठेयाः।** अनिशमात्मनं कामकलात्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत्। एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य सर्वतः कृतकृत्यता। शरीरविमोके च श्वपचगृहकाश्योर्नारन्तम् स एव जीवन्मुक्तः सुखी विहरेदिति।।

इति श्रीविद्यारत्नाकरे,

कलवृक्षा

१. श्लेष्मातककरञ्जाक्षनिम्बाश्वत्थकदम्बकाः।
विल्वो वटोदम्बरौ च तिन्त्रिणीच दशस्मृता।।

श्रीललिताचतुष्टष्ट्वयुपचारमान-पूजनम्

हृन्मध्यनिलये देवि ललिते परदेवते।
चतुष्षष्ट्युपचारांस्ते भक्त्या मातः समर्पये।। १।।
कामेशोत्सङ्गनिलये पाद्यं गृह्णीष्व सादरम्।
भूषणानि समुत्तार्य गन्धतैलं च तेऽर्पये।। २।।
स्नानशालां प्रविश्याऽथ तत्रत्यमणिपीठके।
उपविश्य सुखेन त्वं देहोद्वर्त्तनमाचर ।। ३।।
उष्णोदकेन ललिते स्नापयाम्यथ भक्तितः।
अभिषिञ्चामि पश्चात् त्वां सौवर्णकलशोदकैः।। ४।।
धौतवस्त्रप्रोञ्छनं चारक्तक्षौमाम्बरं तथा।
कुचोत्तरीयमरुणमर्पयामि महेश्वरि ।। ५।।
ततः प्रविश्य चालेपमण्डपं श्रीमहेश्वरि।
उपविश्य च सौवर्ण-पीठे गन्धान् विलेपय।। ६।।
कालागरुजधूपैश्च धूपये केशपाशकम्।
अर्पयामि च मल्यादिसर्वर्तुकुसुमस्रजः ।। ७।।
भूषामण्डपमाविश्य स्थित्वा सौवर्णपीठके।
माणिक्यमुकुटं मूर्ध्नि दयया स्थापयाऽम्बिके।। ८।।
शरत्पार्वणचन्द्रस्य शकलं तत्र शोभताम्।
सिन्दूरेण च सीमन्तमलङ्कुरु दयानिधे।। ९।।
भाले च तिलकं न्यस्य नेत्रयोरञ्जनं तथा।
वालीयुगलमप्यम्ब भक्त्या ते विनिवेदये।। १०।।

माणिकुण्डलमप्यमब नासाभरणमेव च ।
ताटङ्कयुगलं देवि यावकञ्चाधरेऽर्पये।। ११।।
आद्यभूषणसौवर्णचिन्ताकपदकानि च ।
महापदकभुक्तावल्येकावल्यादिषूणम् ।। १२।।
छन्नवीरं गृहाणाऽम्ब केयूरयुगलं तथा।
वलयालिमङ्गुल्याभरणं ललिताम्बिके ।। १३।।
ओड्याणमथ कट्यां ते कटिसूत्रञ्च सुन्दरि।
सौभाग्याभरणं पादकटकं नूपुरद्वयम् ।। १४।।
अर्पयामि जगन्मातः पादयोश्चाङ्गुलीयकम्।
पाशं वामोर्ध्वहस्ते च दक्षहस्ते तथाङ्कुशम्।। १५।।
अन्यस्मिन्वामहस्ते च तथा पुण्ड्रेक्षुचापकम्।
पुष्पबाणांश्च दक्षाधः पाणौ धारय सुन्दरि।। १६।।
अर्पयामि च माणिक्यपादुके पादयोः शिवे।
आरोहावृतिदेवीभिश्चक्रं परिशवे मुदा ।। १७।।
समानवेशभूषाभिः साकं त्रिपुरसुन्दरि ।
तत्र कामेशवामाङ्कपर्यङ्कोपनिवेशिनीम् ।। १८।।
अमृतासवपानेन मुदितां त्वां सदा भजे।
शुद्धेन गाङ्गतोयेन पुनराचमनं कुरु ।। १९।।
कर्पूरवीटिकामास्ये ततोऽम्ब विनिवेशय।
आनन्दोल्लासहासेन विलसन्मुखपङ्कजाम्।। २०।।
भक्तिमत्कल्पलतिकां कृती स्यां त्वां स्मरन् कदा।
मङ्गलारार्तिकं छत्रं चामरं दर्पणं तथा।। २१।।

तालवृन्तं गन्धपुष्पधूपदीपांश्चं तेऽर्पये।
श्रीकामेश्वरि! तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्रैर्भृतं,
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदैर्युतम्।
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रार्पितं,
माषापूपकपूरिकादिसहितं नैवेद्यसमबार्पये।। २२।।
साग्रविंशतिपद्योक्त चतुष्षट्युपचारतः ।
हृन्मध्यनिलया माता ललिता परितुष्यतु।। २३।।

इति महायागक्रमोक्तं मानसूजनम्।

श्रीषोडशानन्दनाथ करपात्र स्वामि–
विरचिता श्रीविद्या वरिवस्या सम्पूर्णा।
श्रीकामेश्वराङ्कनिलया श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

श्रीललिता नीराजनम्

जय जय जय ललिते
जय जगदीश्वरि माताः श्रीसुन्दरि ललिते,
त्वं माम् पालय नित्यं विश्वेश्वरि वरदे।
मञ्जुल-मङ्गलदायिनि परमानन्दप्रदे,
सकलमनोरथपूरिणि मातः श्रीललिते।। १।

जय जय जय ललिते

जय श्रीचक्रनिवासिनी कामेश्वरि त्रिपुरे,
दीनं मामवलोकय कृपया श्रीललिते।
शिववामाङ्क-विहारिणिमोहितभूतपते,
कलित–कलाधरमुकुटे नेत्र-त्रय-शोभे।। २।।

जय जय जय ललिते

धनुरङ्कुशशरपाशैः शोभित-कर-कमले,
शिशुं स्वकीयं पालय मातः श्रीललिते।
अरुण-विभा-भव-भासित-भुवनेश्वरि-विद्ये,
भव-भयभञ्जनकारिणि भवनाटकनिपुणे।। ३।।

जय जय जय ललिते

विधिहरिसुरपतिमुकुटैः वन्दितपदपद्मे, श्रीवन्दितप.
नीराजनमवलोकय भगवति चितिरूपे।
संवित्तत्त्वस्वरूपिणि निगमागमगीते, श्रीनिगमा.
संतत-चिन्तित-सच्चित्-स्वानन्दे ललिते।। ४।।

जय जय जय ललिते

विन्दुनाद-भवभासिनि शिवशक्तिप्रथिते श्रीशिवश.
स्पन्दसुधारस-वर्षिणि शाम्भवि शक्ति शिवे।
नीराजनमिदममलम् आरत्रिक—समये, श्री अरान्तिक.
भक्त्या गायति सकलं भद्रं सञ्चिनुते।। ५।।
जय जय जय ललिते

नृत्यति गायति कलयति मुदितमना मनुते, श्रीमु.
रूपं पश्यति ललितं तव ललितं ललिते।
निरुपाधिक-कामेश्वर-कामेश्वरि ललिते,
अरुणिम-तुरुणिम-मण्डल-मण्डित श्रीसदने।। ६।।
जय जय जय ललिते

निष्कल-तत्व प्रकाशिनि परमेश्वरि ललिते, श्रीकामेश्वरित्रिपुरे
दत्तात्रेयानन्दं नाथय श्रीललिते।
चरणसरोजे नमितं लोकय श्रीललिते,
शरणागत-प्रतिपालिनि पालय श्रीललिते।। ७।।
जय जय जय ललिते

इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचितं
।। श्रीललितानीराजनं सम्पूर्णम्।।

प्रणति-पञ्चकम्

भुवन-केलिकला-रसिके शिवे,
झटिति झंझण-झंकृत-नूपुरे,
ध्वनिमयं भव-बीजमनश्वरम्,
जगदिदं तव शब्दमयं वपुः।। १।।

विविध-चित्र-विचित्रितमद्भुतं,
सदसदात्मकमस्ति चिदात्मकम्,
भवति बोधमयं भजतां हृदि,
शिव शिवेति शिवेति वचोऽनिशम्।। २।।

जननि मञ्जुल-मङ्गल-मन्दिरं,
जगदिदं जगदम्ब तवेप्सितम्,
शिव-शिवात्मक-तत्त्वमिदं परं,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्।। ३।।

स्तुतिमहो किल किं तव कुर्महे,
सुरगुरोरपि वाक्पटुता कुतः,
इति विचार्य परे परमेश्वरि,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्।। ४।।

चिति चमत्कृति चिन्तनमस्तु मे,
निजपरं भवभेद-निकृन्तनम्,
प्रतिपलं शिवशक्तिमयं शिवे,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्।। ५।।

इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचितं प्रणतिपञ्चकं सम्पूर्णम्।

॥ श्रीः॥

कुण्डली—जागरणम्

जागो जगदाधार मैया । जागो जगदाधार ॥
साधो मन के तार मैया । साधो मन के तार ॥
जप तप जोग कछु नहीं जानूं । सुषुम्ना सूक्ष्म विचार ॥
कुल कुण्डलिनी कुण्डली शिवके। सार्ध त्रिवलयाकार ॥
विद्युल्लेखा विसतन्तु सम । सुप्त भुजङ्गी प्रकार ॥
दिव्य त्रिकोणे कोटि तड़ित् शशि। आभा भानु हजार ॥
मूल मही वं शं षं सं मां । गणपति मूलधार ॥
बं भं मं यं रं लं ब्रह्मा । स्वाधिष्ठान विचार ॥
रं मणिपूरे विष्णु माया । अग्नि स्वरूपाकार ॥
डं ढं णं तं थं दं धं नं। पं फं दल विस्तार ॥
कं खं गं घं ङं छं जं । झं ञं टं ठं स्फार॥
द्वादस दल शिव शक्ति विराजे । अनहत नाद अपार॥
चित्त गगन में चिति शक्ति का । स्पन्दन बारम्बार ॥
हंसः सोऽहं मन्त्र स्वरूपी । विद्या मय झङ्कार ॥
अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं । षोडश पत्राकार ॥
लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः । व्योम विशुद्धि विचार ॥
हं क्षं हसौः सकलं तूँ साधे। विविध सिद्धि के द्वार॥
मन्त्र यन्त्र सब तन्त्र तुम्ही हो। आगम निगम विचार ॥
अर्धमात्र रही अन्तर आत्मा। सकल तत्त्व संसार॥
शुभ ज्योतिर्मय हंस युगल रत । पङ्कज पत्र हजार ॥
गुप्ताक्षरं मञ्जुल मणिमण्डप । श्रीगुरु श्वेत श्रृंगार ॥

परमात्मा गुरुनाथ परम शिव । अभयं वरद सन्धार ।।
रक्त शुक्ल प्रभासित सुषमा । महिमा अपरम्पार ।।
शिव वामाङ्गे शक्ति विराजे । रक्त बिन्दु बौछार ।।
शिव शक्ति पद पङ्कज वरषे । स्नेह सुधा की धार ।।
अभिषेके षट् चक्र विकासे । शिवमय जय जय कार ।।
अन्तर् मुख आनन्द अश्रुभर । पुलकित करुण पुकार ।।
दत्तात्रेया नन्दनाथ का । नमो नमो शत बार ।।
जागो जगदाधार मैया । साधो मन के तार ।।

।।श्रीः।।



दत्तात्रेयानन्दनाथ द्वारा सम्पादित-विरचित ग्रन्थ

- श्रीविद्यारत्नाकरः
- श्रीविद्यावरिवस्या (पूजा विधि सहित)
- भक्तिसुधा
- श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या
- साम्बपञ्चाशिका (हिन्दी व्याख्या)
- विरूपाक्ष पञ्चाशिका (हिन्दी व्याख्या)
- श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम्
- श्रीमहागणपति वरिवस्या
- उपचार मीमांसा

श्रीविद्या साधना पीठ के मुख्य उद्देश्य

- श्रीविद्या से सम्बन्धित दुर्लभ साहित्य का प्रकाशन।
- श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन।
- मन्त्र चैतन्य तथा कुण्डलिनी जागरण का क्रियात्मक बोध।
- श्रीयन्त्रार्चन पद्धति का प्रशिक्षण।
- तन्त्रशास्त्र विषयक अनुसन्धान।

विशेष

- दीक्षित अधिकारी साधकों का नि:स्वार्थ रूप से प्रशिक्षणादि होता है।
- पीठ द्वारा किसी प्रकार का शुल्कादि नहीं लिया जाता है।

श्रीविद्या साधना पीठ

नगवा, वाराणसी